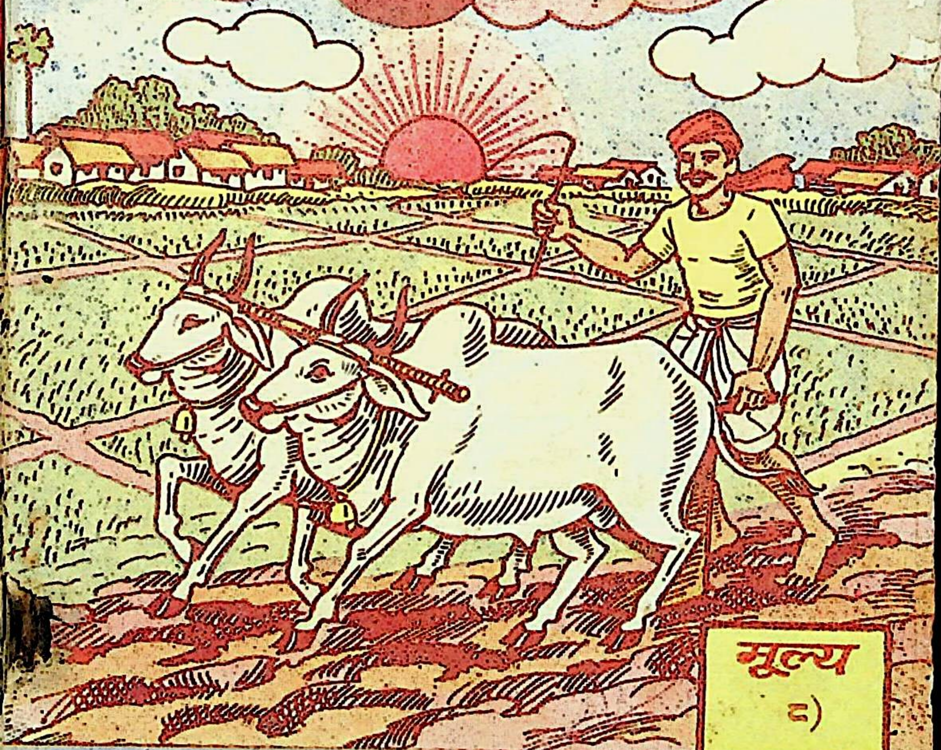
घाघ भड्डरी की कहावतें



ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली वाराणसी-२२१००१

❀ श्रीः ❀

खेती-बारी

घाघ-भड्डरी

की

कहावतें

सम्पादक

पं० रामलग्न पाण्डेय 'विशारद'

प्रकाशक

ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी

१९८३] [मूल्य ८)

❀ विषय-सूची ❀

खेती-बारी

घाघ-भड्डरी

(महाकवि घाघ और भड्डरी की रचनायें)

तथा

कृषि-कहावतें

घाघ की रचनायें---

खेतों में बीज बोने के दिन, मुहूर्त, मात्रा और नक्षत्र
(१) नक्षत्र और मुहूर्त विचार।

चना चित्तरा[1] चौगुना, स्वाती गेहूँ होय ॥ १ ॥

शब्दार्थ—चितरा=चित्रा नक्षत्र। स्वाती=इस नाम का भी एक नक्षत्र। चौगुना=चारगुना अधिक।

---

(१) ज्योतिष के विचार से वर्षा आदि के कृषि-सम्बन्धी कुल सत्ताइस नक्षत्र होते हैं। यथा—(१) अश्विनी (२) भरणी (३) कृत्तिका (४) रोहिणी (५) मृगशिरा (६) आर्द्रा (७) पुनर्वसु (८) पुष्य

भावार्थ—चना और गेहूं स्वाती नामक नक्षत्र में बोने से उनकी पैदावार चौगुनी होती है ।। १ ।। इस प्रकार यह रूढ़ि हो गई है कि चित्रा नक्षत्र में ही चना और स्वाती नक्षत्र में गेहूं बोना चाहिये । इसके बोने का यही उत्तम समय है ।। १ ।।

चित्रा गेहूँ आर्द्रा धान ।
न उनके गेरुई न इनके घाम ।। २ ।।

शब्दार्थ—आर्द्रा=धान की बोअनी का पहला और सत्ताइस नक्षत्रों में इस नाम का छठाँ नक्षत्र । धान=वह अनाज जिससे धान और उससे चावल होता है । गेरुई=गेहूं में लगने वाला पीला रोग । घाम=धूप ।

अर्थ—चित्रा नक्षत्र में गेहूं और आर्द्रा नक्षत्र में धान बोना चाहिये । इससे धान अच्छा होता है । गेहूं में गेरुई नहीं लगती तथा धान पर धूप का असर नहीं होता ।। २ ।।

आधे चित्रा फूटी धान ।
विधि का लिखा न होई आन ।। ३ ।।

अर्थ—जब चित्रा नक्षत्र आधा व्यतीत हो जावे और धान फूटने लगे अर्थात् उनमें बालें निकलने लगें तो समझो कि धान अच्छा होगा । ब्रह्मा के इस लिखने में दूसरा नहीं होता ।। ३ ।।

---

(९) आश्लेषा (१०) मघा (११) पूर्वा फाल्गुनी (१२) उत्तरा फाल्गुनी (१३) हस्त (१४) चित्रा (१५) स्वाती (१६) विशाखा (१७) अनुराधा (१८) ज्येष्ठा (१९) मूल (२०) पूर्वाषाढ़ (२१) उत्तराषाढ़ (२२) श्रवण (२३) धनिष्ठा (२४) शतभिषा (२५) पूर्वाभाद्रपद (२६) उत्तराभाद्रपद (२७) रेवती । इनके अतिरिक्त एक और नक्षत्र होता है जिसका नाम अभिजित है ।

आर्द्रा धान पुनर्वसु पैया ।
रोवै किसान जो बोवै चिरैया ॥ ४ ॥

शब्दार्थ—पुनर्वसु=इस नाम का एक नक्षत्र । पैया=वह धान जिसमें सत्त्व न हो, खोखला । विदाहैं=धान के खेत को दूर-दूर जोतकर पाटा चलाना या हेंगाने की एक क्रिया है । इस क्रिया के करने से धान के पौधों में पुंज होते हैं और वे पुष्ट होते तथा उनकी बालें बड़ी होती तथा खेतों में खर-पतवार नहीं रहते, नष्ट हो जाते हैं ।

अर्थ—आर्द्रा नक्षत्र में धान बोयें, पुनर्वसु नक्षत्र में बोने से धान नहीं पैदा होता है । जो किसान चिरैया नक्षत्र में बोता है, वह रोता है । कहीं-कहीं लोग ऐसा भी कहते हैं कि रोवें किसान जो बिदहैं चिरैया । यह उक्ति भी सर्वथा सत्य है । क्योंकि पुष्य नक्षत्र में धान कहीं बोया जाता है, जिसे चिरैया नक्षत्र भी कहते हैं ॥ ४ ॥

आद्रा रेंड़ पुनर्वसु पाती ।
लाग चिरैया दिया न बाती ॥ ५ ॥

शब्दार्थ—रेंड़=धान का पुंजा (पुंज) मोटा होना । पाती=पत्ती । चिरैया=पुष्य नक्षत्र का दूसरा नाम । दिया=दीपक ।

अर्थ—आर्द्रा नक्षत्र में धान बोने से उसका पुंजा मोटा होता है और पुनर्वसु की बोआई की पत्तियाँ अच्छी होती हैं और उपज आदि सब अच्छी होती है । और जब चिरैया अर्थात् पुष्य नक्षत्र लग जाता है तब जो इस नक्षत्र में धान बोता है, उस किसान के घर दीपक-बत्ती का ठिकाना नहीं रहता अर्थात् कुछ नहीं होता है ॥ ५ ॥

कन्या धान मीन जौ ।
जहाँ चाहै तहाँ लौ ॥ ६ ॥

शब्दार्थ—कन्या=क्वार का आरम्भ, कन्या की संक्रान्ति । मीन=माघ का पहला पक्ष, मीन की संक्रान्ति । लौ=लवनी-कटाई, कटिया ।

अर्थ—क्वार में कन्या की संक्रान्ति लगने पर जिसके खेतों में धान की फसल पक कर तैयार हो जावे और मीन की संक्रान्ति आने पर जिसके खेत में जौ की फसल तैयार हो जावे वह उसे कटवा लेवे अथवा लौनी करावे ॥ ६ ॥

बुध बोअनी, सुक लवनी ॥ ७ ॥

शब्दार्थ—बोवनी=खेतों में बीज बोना। लवनी=फसल काटना, लौनी, लवाई।

अर्थ—बुधवार को खेतों में बीज डालने को उसका शुभ दिन और इसी प्रकार शुक्रवार को फसल की लौनी आरम्भ करने का शुभ दिन है ॥ ७ ॥

पुष्य पुनर्वसु बोवै धान।
असलेषा जोन्हरी परमान ॥ ८ ॥

शब्दार्थ—पुष्य=नक्षत्रों में आठवाँ नक्षत्र, एक नक्षत्र का नाम। पुनर्वसु=एक नक्षत्र, सातवाँ नक्षत्र। आश्लेषा=एक नक्षत्र। जोन्हरी=एक अन्न। परमान=प्रमाण।

अर्थ—पुष्य, पुनर्वसु नक्षत्र में धान और आश्लेषा नक्षत्र में जोन्हरी बोने का प्रमाण है अर्थात् इसी नक्षत्र में बोयें ॥ ८ ॥

उगी हरनी फूले कास।
अब का बोये निगोड़े माष ॥ ९ ॥

शब्दार्थ—उगी=उदय हुई। हरनी=अगस्त नाम का तारा। कास=एक घास का नाम। निगोड़े=निगुनी किसान। माष=उड़द, उर्द नामक अन्न। का=क्या।

अर्थ—अगस्त नाम का तारा उदय हो गया और बन में कास भी फूल गयी। (कवि कहता है)—ऐ निगुनी किसान! अब उड़द क्या बोता है? ॥ ९ ॥

जो कोइ अगहन बोवै जौआ।
होइ न होइ नहिं खावै कौआ ॥ १०॥

अर्थ—जो कोई अगहन मास में जो बोता है तो वह होता है तो जानो हुआ और नहीं तो उसे कौवे ही खाते हैं ॥ १० ॥

आधे हथिया मूरि-मुराई।
आधे हथिया सरसों राई ॥ ११ ॥

शब्दार्थ—हथिया=वर्षा के एक नक्षत्र का नाम, हस्त नक्षत्र। मूरि, मुराई=पतली मूली जो खाने में बड़ी तीक्ष्ण होती हैं।

अर्थ—हथिया नक्षत्र के आधे पर मूरि-मूली और अन्त के आधे पक्ष में सरसों और राई को बोना चाहिये ॥ ११ ॥

पुरवा में जनि रोपै भैया।
एक धान में सोरह पैया ॥ १२ ॥

शब्दार्थ—पुरवा=बीसवाँ नक्षत्र। जनि=मत, नाहीं। रोपो=लगावो रोपनी, अगहनी फसल के पौधे गाड़ना, बैठौनी की एक क्रिया। पैया=सत्त्व रहित धान, खोखला धान।

अर्थ—कवि का कहना है—हे भाई! अगहनी के फसल के धान का जरई या कोमल पौधे पूर्वा नक्षत्र में मत रोपो। क्योंकि इसमें रोपाई करने से एक धान में अर्थात् उसके एक बीज में सोलह सत्त्व-रहित धान होते हैं ॥ १२ ॥

मारूँ हरनी तोड़ूँ कास।
बोऊँ उद हथिया की आस ॥ १३ ॥

शब्दार्थ—मारूँ=समाप्त करूँ, व्यतीत होने पर। हरनी=अगस्त नाम का तारा। आस=आशा। तोड़ूँ=काटूँ, काटना।

अर्थ—जब अगस्त नाम का तारा उदय हो जावे और कास फूल

जावे, और उसे काट लें, तब हथिया नक्षत्र की आशा करके उड़द को बो देवे ॥ १३ ॥

सावन सावाँ अगहन जवा ।
जितना बोवै उतना लवा ॥ १४ ॥

अर्थ—यदि श्रावण मास में सावाँ नामक अनाज और अगहन मास में जौ बोओगे तो जितना बोओगे उतना ही काटोगे अर्थात् कोई लाभ नहीं ॥१४॥

रोहिनि मृगशिर बोये मक्का ।
उड़द मड़ुवा दे नहिं टक्का ॥ १५ ॥

शब्दार्थ—रोहिनि=इस नाम का एक नक्षत्र। मृगसिर=एक नक्षत्र। मक्का=मकई नामक अन्न। टक्का=पैसा, लाभ।

अर्थ—रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र में मक्का, उड़द, मडुआ, ककुनी आदि अन्न बोओगे तो टके भर भी पैदावार नहीं होगी अर्थात् लाभ कुछ न होगा ॥ १५ ॥

मृगशिर में जो बोये चेना ।
जमीदार को कुछ नहीं देना ॥ १६ ॥

शब्दार्थ—चेना=इस नाम का एक अनाज।

अर्थ—यदि मृगशिरा नक्षत्र में भी चेना बोओगे तो यह जानो कि जमीदार को (जमीन वाले को) कुछ नहीं है अर्थात् उसे देने भर को भी न पा सकोगे ॥ १६ ॥

बोये बाजरा आये पुक्ख ।
फिर मत मन में मानो सुक्ख ॥ १७ ॥

अर्थ - यदि पुष्य नक्षत्र में बाजरा बोओगे तो मन में, सुख न पाओगे अर्थात् पैदावार न होगी ॥ १७ ॥

फिर ऐसा ही कहा है—

बोये बाजरा आये पूख।
फिर मन कैसे पाये सूख ॥ १८ ॥

अर्थ—पुष्य नक्षत्र में बाजरा बोओगे तो फिर मन को सुख कैसे प्राप्त होगा ? ॥ १८ ॥

धान बोने का दिन

बुद्ध बृहस्पति को भले, शुक्र न भले बखान।
रवि मंगल बोअनी करे, द्वार न आये धान ॥ १९ ॥

अर्थ—बुधवार और बृहस्पतिवार को धान बोना अच्छा है। शुक्रवार को अच्छा नहीं। यदि रविवार और मंगलवार को बोअनी करोगे तो दरवाजे पर धान नहीं आवेगा अर्थात् पैदावार कुछ भी न होगी ॥ १९ ॥

रोहिनी खाट, मृगशिरा छउनी।
आर्द्रा आये धान की बोउनी ॥ २० ॥

अर्थ—रोहिणी नक्षत्र में चारपाई बीनना और मृगशिरा नक्षत्र में छप्पर छाना उत्तम है, (क्योंकि) आर्द्रा नक्षत्र आते ही तो धान की बोअनी करनी है ॥ २० ॥

मघा मारै पुरबा सँवारै।
उत्तरा भर खेत निहारै ॥ २१ ॥

(अगहनी फसल के लिये) अर्थात् जड़हन को मघा में बोकर पूर्वा नक्षत्र भर उसके खेतों की रक्षा कर दे, उत्तरा में उसे देख दे तो वह अच्छा होता है ॥ २१ ॥

बोआई के कुछ और ढंग

गाजर, गंजी मूरी, तीनो बोवे दूरी ॥ २२ ॥

अर्थ—गाजर, गंजो और मूली इन तीनों को दूर-दूर पर बोना चाहिए ॥ २२ ॥

घनी घनी जब सनई बोवे।
तब सुतरी की आशा होवे ॥ २३ ॥

अर्थ—सनई को जब नजदीक-नजदीक बोवोगे, तब उससे सुतली प्राप्त करने की आशा होगी ॥ २३ ॥

ऊख गोड़िके तुरत दबावै।
तौ फिर ऊख बहुत सुख पावै ॥ २४ ॥

शब्दार्थ—गोड़िके=गोड़ाई करके। दबावें=मिट्टी में दबा दें। हेंग या पटड़ा चलाकर बराबर कर दें।

अर्थ—ऊख की गोड़ाई करके उसे तुरन्त ही दबा देवें, भूमि में गाड़ दें या यदि पूरे खेत की गोड़ाई की है तो उसे पटड़े से हल्का हेंगा दें अर्थात् हेंगा चलाकर खेत को बराबर दबाइये ॥ २४ ॥

पहिले काँकरि पीछे धान।
उसको कहिये पूरे किसान ॥ २५ ॥

अर्थ—पहले ककड़ी बोकर फिर धान बोवे, जो ऐसा करता है उसे पूर्ण किसान कहा जाता है। वह किसानों में चतुर है ॥ २५ ॥

खेती करै ऊख कपास।
घर करै व्यवहरिया पास ॥ २६ ॥

अर्थ खेती तो ऊख और कपास की करें और व्यवहार देने वाले पुरुष के निकट में घर करे, उसके निकट में अपना गृह हो तो अच्छा होता है ॥ २६ ॥

दाना अरसी, बोला सरसी ॥ २७ ॥

शब्दार्थ—दाना=पोस्ता। अरसी=अलसी, तीसी नामक अन्न। सरसी=सरस खेत, नम खेत अच्छा खेत।

अर्थ—पोस्ता और अलसी के खेत को मिट्टी सरस अर्थात् नमीवाली होनी चाहिये, तब उसके बीज जमते हैं और अच्छे होते हैं। खेत में तरी और खाद आदि भी चाहिये ॥ २७ ॥

पैग पैग पर बाजरा[१], मेंढक कुदैनो ज्वार[२]।
ऐसे बोवे जो कोई, घर का भरै भण्डार ॥ २८ ॥

शब्दार्थ पेग-पैग=कदम-कदम पर। मेंढक कुदैनो=मेंढक की कुदान जैसी दूरी। भंडार=कोठिला, बखार, डेहरा या अन्न रखने का बड़ा पात्र या भण्डार।

अर्थ—कदम-कदम पर बाजरा और मेंढक की कुदान के फासले पर ज्वार या छोटी जोन्हरी बोनी चाहिये। ऐसे जो कोई बोता है, वह घर का भण्डार भरता है ॥ २८ ॥

१—बाजरा की खेती

बाजरा ज्वार की ही जाति का एक पौधा है। बचपन में ज्वार के ही समान दिखाई देता है। इसे गरीब-अमीर सभी पसन्द करते हैं। इसका भुट्टा लम्बा होता है, यह उत्तर-प्रदेश, राजपूताना और मध्य भारत में अच्छा होता है। इसका वृक्ष ज्वार से लम्बा और मोटा होता है और इसकी चोटी पर एक लम्बा भुट्टा लगता है, जिसमें बड़े-बड़े दाने होते हैं। इसकी कई जातियाँ हैं। काँटेदार बाजरा, छोटे दाने वाला बाजरा, या बाजरी। इसे पक्षी बहुत खाते और हानि पहुंचाते हैं। इसे खरीफ में सबसे आगे चित्रा नक्षत्र में बोते हैं। इसके साथ अरहर, मूँग, मोंठ, उर्द मिलाकर बोते हैं और अकेला भी बोया जाता है।

यह प्रायः हलकी भूड़ भूमि में बोया जाता है। इसके लिए खाद की कम आवश्यकता है। फिर भी खाद डालनी चाहिये। ज्वार की अपेक्षा इसे कम पानी चाहिये। इसे एक-दो बार की जुताई पर ही बो दिया जाता है। इसका बीज प्रति एकड़ ३ सेर पड़ता है। बीज की मात्रा इसके

किस्म पर निर्भर है। कार्तिक के महीने में यह कटता है। पुल्यियों से इसकी बाली काटकर खलिहान में सुखाकर दायँ लेवें और ओसाकर दाना निकाल लें। इसमें कन्दुआ और गेरुई रोग बहुत लगता है। इसीलिए इसके अच्छे बीज बोयें। रागो पौधे उखाड़ कर फेंक देवें।

२—ज्वार की खेती

ज्वार खरीफ की एक मुख्य फसल है, जो अन्न और पशुओं के चारेके लिए बोया जाता है। चारे की यह फसल काफी मात्रा में बोयी जाती है। इसका चारा सूखा और हरा दोनों ही प्रकार से पौष्टिक होता है। हरे चारे को पशु बड़े चाव से खाते हैं। इसके सिरे पर एक भुट्टा-सा ह ता है, जिसमें दाने लगते हैं और जो गरीबों का मुख्य आहार है। इसका दलिया और महेरी बड़ी स्वादिष्ट होती है। पशुओं को भी इसका दलिया दिया जाता है। इसका आटा जौ से मिलता-जुलता होता है, इसकी दो जातियाँ होती हैं, देशी और उन्नतिशील। इसके लिए भारी दोमट भूमि सबसे अच्छी मानी गयी है। यह विभिन्न प्रकार की भूमि में उगाई जाती है। इसके लिए ऐसी भूमि छाँटी जाय जिसमें पानी न भरता हो। ज्वार की भूमि के लिये कोई विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं, एक बार हल से जुताई करने के बाद खेत में एक दो-बार देशी हल से जोत देने पर भूमि तैयार हो जाती है। वर्षा आरम्भ होने पर बीज को छिटा-कर बोने के बाद खेत की एक बार जुताई कर दी जाती है। ऊपर से पाटा भी चला दिया जाता है। परन्तु यह ढंग ठीक नहीं है।

प्रायः किसान ज्वार के खेतों में खाद नहीं डालते। हरे चारे वाली फसल ८० पौंड नत्रजन चाहती है। इसमें हरी गोबर की खाद, बोने से पहले डालनी चाहिए। खाद से इसकी उपज बढ़ती है, चारे के लिए ८ से १० सेर बीज प्रति एकड़ पड़ता है। और दाने के लिए बोई गई फसल में ५-६ सेर बीज प्रति एकड़ डालना चाहिए।

जिन स्थानों में सिंचाई के अच्छे साधन हों, वहाँ ज्वार की फसल मई के महीने में बो देनी चाहिए। परन्तु जहाँ पानी का अभाव हो वहाँ इसकी फसल वर्षा के शुरू होने पर बोई जाती है। यदि ज्वार के पेड़ों में पानी न दिया जाय तो उसमें एक प्रकार का तेजाब पैदा हो जाता है, इससे

पशुओं को हानि पहुंचती है, अतः दाने के लिए और चारे के लिए भी इसे वर्षा आरम्भ होने पर जुलाई में बोते हैं। हरे चारे के लिए ज्वार को छिटका कर बोना चाहिये और दाने के लिए इसके पीछे दो-दो फुट की दूरी पर लाइनों में बोये। लाइनों में बोई गयी फसल से यह लाभ होता है कि उसमें निकाई-गुड़ाई करने के लिए औजारों का प्रयोग आसानी से हो सकता है। ज्वार में जब भुट्टा लगे तब उस खेत में पानी की बड़ी आवश्यकता है। निकाई दो-एक बार और गुड़ाई भी करनी चाहिये। इसकी रखवाली भी मक्का के ही समान करनी चाहिये। रखवाली भुट्टे लगने से कटने तक की जाती है। चिड़ियाँ और जँगली जानवरों से बचाना चाहिये। हरे चारे का ज्वार महीने बाद काट ली जाता है और इसे धीरे-धीरे पशुओं को खिलावे। दाने की ज्वार को नवम्बर, दिसम्बर में काटे। खलिहान में भुट्टों को पहले सुखावे, फिर बैलों से दायँ चलाकर उसे हवा में बरसा कर दाना निकाल लेवें। कभी-कभी इस फसल में कीड़े भी लगते हैं, जिन्हें सुन्डी कहते हैं। ये सुन्डियाँ मक्का के तने में इसे खोखला कर देती हैं। तूतिया के जल में इसके बीज को डुबोकर बोने से बीमारी कम असर करती है।

बोते बने तो बोइयो, नहिं बनाकर खाइयो ॥ २९ ॥

अर्थ—(उर्द) यदि बोते बने तो बोओ और नहीं तो बड़ी बनाकर खा डालो। अभिप्राय यह कि उड़द का बीज ठीक से बोओ, अर्थात् दूर-दूर बोओ ॥२९॥

उर्द या उड़द की खेती

उर्द का पौधा छोटा तथा झाड़दार होता है। इसके पत्ते चौड़े तथा गोल होते हैं और लताएँ ऊपर का चढ़ती हैं। पत्तियाँ हरी व खुरदरी होती हैं। इसकी दाल सब दालों में प्रधान मानी गई है। इसकी फली गोल और कुछ लम्बी होती है। फलियों पर रोयें होते हैं। इसका प्रयोग खाद के लिए भी किया जाता है और इसका चारा उत्तम होता है। इसकी दो जातियाँ होती हैं। एक काली उड़द बड़े दाने वाली, दूसरी हरी छोटे दाने वाली। यह दोमट भूमि में अच्छी होती है। इस भूमि

में खाद देने की आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि इसकी पत्तियाँ गिरकर स्वयं खाद का काम देती हैं। प्रायः यह अन्य फसलों के साथ मिला कर बोया जाता है। एक जुलाई के बाद इसे बो देते हैं। इसे अकेले भी बोते हैं। वर्षा के आरम्भ में यह छिटकवाँ रीति से बोया जाता है। इसके बीज की मात्रा ५ से ६ सेर प्रति एकड़ होती है। बड़े दाने वाली उड़द अगस्त या सितम्बर मास में और छोटे हरे दाने वाली अक्टूबर में तैयार होती है। इसके पौधे उखाड़ कर या मोटे हों तो हँसुआसे काट लिये जाते हैं। पौधों को सुखा कर मड़ाल और ओसाई करके दाना निकाल लेवें। इसकी पैदावार ७ से १० मन तक प्रति एकड़ मानी गई है।

कुलहड़ भदई[1] बोओ यार।
तब चिउरा की होय बहार ॥ ३० ॥

शब्दार्थ—कुलहड़=कुदाल से कोड़ी या खनी हुई भूमि। भदई=खरीफ की फसल, धान, क्वारी या अगहनी। यार=मित्र, कृषक मित्र।

अर्थ—(कृषक का कहना है—)कुदाल से गोड़े हुए खेत में भदई या धान बोओ तो चिउरा खाने की बहार आवे ॥ ३० ॥

बाड़ी में बाड़ी करे ईख में ईख।
वे घर योंहीं जायगे, सुनै पराई सीख ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ—बाड़ी=फुलवारी, कपास। पराई=दूसरे की।

अर्थ—जो कपास के खेत में फिर कपास ही बोता है या ईख के

१—भदई वह फसल है जिसमें धान, बाजरा, मक्का, लोबिया, उर्द, मूँग, सावाँ, कोदो, काकुन, कपास, तिल, पाढ़ और अरहर आदि बोया जाता है।

कुदाल से मिट्टी गोड़ने को गोड़ाई कहते हैं, जिसके करने से खेत की निकाई भी हो जाती है और इससे सूक्ष्म नलियों का मुँह टूट जाता है और खेत की नमी उड़ने नहीं पाता। गोड़ाई से भूमि भुर-भुरी हो जाती है। हवा, रोशनी और गरमी का प्रवेश सहज ही हो जाता है।

खेत में फिर ईख ही बोता है और पराये की बात सुनता है और अपने स्वजनों की या अपने घर की बात नहीं सुनता, वह घर सहज ही नष्ट हो जाता है ॥३१॥

छीछी भली जौ,[१] चना[२] छीछी भली कपास[३] ।
जिनकी छी छी उखड़ी,[४] उनकी छोड़ो आस ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ—छीछी=छिछली, हल्की बोड़र, दूर-दूर। उखड़ी=ऊख=ईख, गन्ना।

अर्थ—जौ, चना और कपास को बोड़र बोयें तो अच्छा है। परन्तु जिनकी ऊख बोड़र हो उसकी तो आशा ही छोड़ देनी चाहिए ॥३२॥

१—जौ की खेती—जौ का साधारण परिचय यह है कि वह गेहूँ की तरह होता है। इसकी जड़ झकड़ा और पत्ती खुरखुरी होती है। इसकी पत्तियाँ गेहूँ की पत्तियों-सी चौड़ी होती हैं। बाली गेहूँ से कुछ मोटी होती है और दाना भी मोटा और लम्बा होता है। इसकी बाली में दो कतारें होती हैं और इसके जाति के कई नाम हैं। १ रसूली या पैगम्बरी, २. कानपुर नं० ३०४ तथा ३. उन्नतिशील जातियाँ पूसा नं० २१, २९२।

यों तो जौ सभी प्रकार की भूमि में हो सकता है। परन्तु दोमट भूमि इसके लिए सबसे अच्छी है।

जिस प्रकार गेहूँ के लिये तैयारी की जाती है उसी प्रकार इसके लिए भी की जाती है। खाद भी डाला जाता है। परन्तु गोबर की खाद सबसे अच्छी है। इसे भी गेहूँ के साथ बोया जाता है और अकेले भी बोते हैं तथा मिलाकर भी यह अक्टूबर के आरम्भ में बोया जाता है। ४० सेरसे से ५० सेर तक बीज प्रति एकड़ में पड़ता है। इसकी दो बार सिंचाई करनी चाहिये। परन्तु जाड़े का दिन रहता है। यदि इस समय वर्षा हो जाय तो सिंचाई की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। प्रायः इसमें निकाई, गुड़ाई नहीं की जाती परन्तु यदि खरपतवार अधिक हो तो निकाई गुड़ाई करना लाभदायक होता है। खर पतवार हो जाने

से पौधों को अच्छी खुराक नहीं मिलती है। जौ प्रायः मार्च तथा अप्रैल में होता है और हँसुआ से काटा जाता है। इसकी पैदावार प्रति एकड़ १५ से २० मन तक होती है। यह जौ की अच्छी पैदावार है।

इसमें प्रायः रतुबा गेरुई और कंडुआ आदि रोग लगता है, जिससे इसे अधिक हानि पहुंचती है। पौधे की बालियाँ काली पड़ जाती हैं और दानों की जगह काला चूर्ण-सा बन जाता है। इससे बचने का उपाय यह है कि, उन्नतिशील जाति का जौ बोया जाय। रोगी पौधे उखाड़कर जला दें, गेमग्जीन डी० डी० टी० और बोडामिक्श्चर आदि कीटनाशक दवायें काम में लाई जायें।

२—चना की खेती—चने का पौधा झाड़ीदार तथा छोटा होता है। इसकी जड़ मूसला होती है और जड़ों में छोटी-छोटी गाँठें होती हैं, पत्तियाँ छोटी तथा खाने में खट्टी होती हैं, फली गोल होती है और उसमें दो-तीन और किसी में एक ही दाने निकलते हैं, इसे लोग बूट और चना भी कहते हैं। यह बड़ा उपयोगी अनाज है। जिस खेत में चना उगाया जाता है, उसकी उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है, क्योंकि इसकी जड़ों में वजन की मात्रा अधिक होती है, यह अधिक वर्षा को सहन नहीं कर सकता। इसे अकेले भी बोया जाता है और अन्य फसलों में मिलाकर भी। इसे अधिकतर अलसी के साथ या जौ के साथ बोते हैं। चना बहुत ही पौष्टिक अनाज है। इससे अनेक प्रकार के भोज्य पदार्थ तैयार किये जाते हैं। इससे मगदल, बूंदी के लड्डू बनाये जाते हैं। इसे दाने के रूप में भी पशुओं को दिया जाता है। यह घोड़ों की तो अच्छी खुराक है। चने का भूसा अच्छा होता है। जिसे पशु बड़े चाव से खाते हैं। इसकी कई जातियाँ हैं। (१) लाल चना छोटा, (२) हलका लाल बड़ा चना, (३) छोटा काला चना, (४) सफेद काबुली चना, (५) पीला चना।

चना प्रायः सभी प्रकार की भूमि में होता है। यह दोमट से लेकर बलुई तक की भूमि में पैदा किया जाता है। अधिक उपजाऊ भूमि में चना बोने से वह पहले अधिक उपजता है किन्तु उसकी पैदावार अच्छी नहीं होती। दोमट भूमि में

उपज अच्छी होती है। भूमि से पानी के निकास का प्रबन्ध होना चाहिये, इसके लिए खेत की अधिक तैयारी की आवश्यकता नहीं होती।

'जोत न माने चना, कही न माने हरामीजना॥'

यह कहावत इसके लिए चरितार्थ होती है। साधारणतः किसान दो-तीन बार जुताई करके चना बो देते हैं। चना प्रायः मक्का तथा चरी के बाद भी बोया जाता है। इन फसलों के काटने के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से दो-तीन बार जुताई करके तथा बाद में देशी हल से जुताई करके यदि चना बोया जाय तो पैदावार सन्तोषजनक होती है।

चने के लिए अधिक खाद की आवश्यकता नहीं पड़ती। फसल की पक्की खाद ही दूसरे काम में आ जाती है।

चने की फसल के लिए ३० सेर से लेकर ४० सेर बीज प्रति एकड़ बोना काफी है। पंजाब में तो केवल १५ सेर, २० सेर बीज प्रति एकड़ डालते हैं, हाँ काबुली चने का बीज इस मात्रा से अधिक डाले।

'चना चित्तरा चौगुना' घाघ की इस कहावत के अनुसार चने की बुवाई रबी की फसल में सबसे पहले करनी चाहिये। चना बोने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर का पहला सप्ताह है और नक्षत्रों के हिसाब से इसे चित्रा नक्षत्र में बोते हैं।

चना प्रायः हल के पीछे कूड़ में बोना चाहिए और ऊपर से हेंगा चला देवें। छिटकाँ रीति से भी चना बोवें। फूल आने से पहले चने की फुनगियाँ खोंट लेने से अधिक लाभ होता है। ऐसा करने से पौधा अधिक फूटने लगता है। और चौड़ा हो जाता है। पैदावार भी बढ़ जाती है।

चने की एक या दो बार सिंचाई की जाती है। परन्तु यदि जाड़े के दिनों में वर्षा हो जाय तो सिंचाई की कोई आवश्यकता नहीं होती और सिंचाई करें भी तो बहुत हल्की, क्योंकि बहुत अधिक पानी इसको हानिकारक है।

असिंचित भागों में चने की पैदावार औसतन १०-१२ मन प्रति एकड़ की होती है। सिंचाई करने पर चने की औसत पैदावार १२-१४

मन तक बढ़ जाती है और उन्नतिशील जातियों को पैदावार २० से २५ मन प्रति एकड़ तक होती है।

चने का पक्का दुश्मन एक कीड़ा, जिसे बहादुर या घोंबा कहते हैं—होता है। यह इसकी जड़ें तथा फली में नुकसान पहुंचाता है। यह कभी-कभी इसमें उलटा भी लग जाता है। इससे बचने का उपाय यही है कि उन्नतिशील जाति का बीज बोवें। रोग से प्रभावित पौधे उखाड़ कर जला देवें। डी० डी० टी० गेमेग्जीन वोर्डोमिक्सचर आदि कीट-विनाशक दवायें छिड़की जायें।

३—ऊखड़ी या गन्ना-कृषि कार्य में गन्ना एक महत्त्वपूर्ण फसल है। सन् १९३१ तक हमारे देश में चीनी बाहर से आती थी। इसके पश्चात् गन्ने की पैदावार बढ़ जाने से अब हमारे देश की आवश्यकता पूरी होने लगी। आजकल हमारे देश में चीनी की लगभग १४० मिलें हैं, जिनमें हजारों मजदूर रोजी कमाते हैं फिर भी एक चौथाई उपज से ही चीनी बनती है और तीन चौथाई भाग से गुड़ या शक्कर बनती है। भारत में लगभग ३७ लाख एकड़ में गन्ना बोया जाता है, जिसमें से २५ लाख एकड़ उत्तर प्रदेश में होता है।

कहावत है कि, गन्ने के लिए दोमट भूमि अच्छी होती है। इसके लिए वह भूमि चाहिए, जिसमें उपज अच्छी होती हो। इसके लिए मार्च या अप्रैल में भारी हल से जोत देते हैं और वर्षा होने पर हरी खाद के लिए सनई या ढेंचा बो देते हैं, जिसको कुछ समय बाद जोतकर खेत में दबा देते हैं और जो सड़कर हरी खाद बन जाती है।

इसे नालियों में, लाइनों में और बिना लाइनों के भी बो सकते हैं। नालियों में बोने के लिए नवम्बरमें, नालियाँ खादो जाती हैं। नाली की गहराई १ फीट और चौड़ाई १॥ फीट होती हैं। कुदाल से नालियों का जांड़ देते हैं, नालियाँ बनाने से दो लाभ हैं। पहला लाभ तो यह होता कि, सिंचाई करने से सरसता रखती हैं और दूसरा यह कि खुली हुई मिट्टी को पौधों पर चढ़ा देते हैं। जिससे बरसात में पौधे बढ़ने पर सिरते नहीं, गन्ने तीन-तीन फिट के फासले पर कुणों में बोते हैं। लाइनों में बोने से यह

लाभ होता है कि कल्टीवेटर की सहायता से आसानी से गुड़ाई कर सकते हैं और बरसात में खाली जगह की मिट्टी पौधों पर चढ़ा सकते हैं।

यदि बिना लाइन के गन्ना बोना हो तो हलके पीछे कूड़ में गन्ना बोते हैं। तब न तो कल्टीवेटर से गुड़ाई कर सकते हैं और न पौधों पर मिट्टी ही चढ़ा सकते हैं।

गन्ना जनवरी से लेकर मार्च के मध्य तक बो देना चाहिए। गन्ना बोनेके लिए पहले बीज को भली-भाँति देख लिया जाय। गन्ने में कंसुआ, कन्डुआ या काना की बिमारी हो तो ऐसा बीज नहीं लेना, गन्ने की लगभग १॥ बालिश्त टुकड़े कर लेना चाहिए और ऐसा कि प्रत्येक में तीन गाँठें आ जायँ। इन टुकड़ों को नालियों में इस प्रकार बोना चाहिए, 'एक दूसरे से मिला रहे' और मिट्टी से ढक देना चाहिए। एक एकड़ के लिए लगभग ५० मन बीज होना चाहिए।

गन्ने की गुड़ाई के लिए यह कहावत प्रसिद्ध है—

'गेहूँ गाहा, धान बिदाहा।
गन्ना गुड़ाई से आहा॥'

अभिप्राय यह है कि गेहूं के लिए जुताई, धान के लिए बिदहनी और गन्ने के लिए गुड़ाई आवश्यक होती है।

इससे यह ज्ञात हुआ कि, बिना गुड़ाई के गन्ना नहीं होता। गन्ने के लिए काफी पानी की जरूरत होती है। कुछ स्थानों में जहाँ वर्षा अधिक होती है, थोड़ी भी सिंचाई से काम चल जाता है। गुड़ाई करने से जड़ों को हवा मिलती है। मिट्टी भुरभुरी हो जाती है। कल्टीवेटर और कुदाल से ईख को गोड़ा जाता है। हर सिंचाई के बाद दो बार गुड़ाई करना आवश्यक है। यदि किसान के समीप में ही चीनी बनाने की मिल है तो वह अपनो ऊखको मिल के हाथ बेंचकर रुपया उठा लेता है और नहीं तो उनको देशी कोल्हू में पेरकर गुड़ तैयार कर लेता है। गन्ने को हँसिया से छीला जाता है। पश्चिम जिलों में गन्ने से खाँड़ भी

बनाई जाती है। गन्ने में एक प्रकार का कीड़ा लगता है, जिसको पाइ-रिया कहते हैं। और कन्डुआ की बीमारी भी बहुत हानि पहुंचाती है।

सन घना बन बेगरा, मेढक फन्दे ज्वार।
पैर पैर पर बाजरा, करै दरिद्रै पार ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ—सन=पटुआ, वह पौधा जिससे रस्सी बनाई जाती है। बन=कपास। बेगरा=बिड़र, दूर-दूर। फन्दे=फासला।

अर्थ—सन को घनी, कपास को बीड़र, ज्वार को मेढ़क की कुदान के फासले पर और बाजरा एक-एक कदम की दूरी पर बोये, तो वह बोआई दरिद्रता को हटा देती है ॥ ३२ ॥

हरिन फलाँग काँकरी, पैग पैग कपास।
जाय कहो किसान से, बोवै घनी उखार ॥ ३३ ॥

अर्थ—हरिन के एक छलांग की दूरी पर ककड़ी और मनुष्य के कदम-कदम की दूरी पर कपास का बीज बोना चाहिएं। (कवि घाघ का कहना है कि) किसान से जाकर कहो कि वह ऊख को घनी बोवे ॥३३॥

ऊख कन्नइ काहे से।
स्वाती के पानी पाये से ॥ ३४ ॥

अर्थ—ऊख कन्नी क्यों हो गई ? स्वाती का पानी पड़ गया।

ऊख करै सब कोई, जो बीच में जेठ न होई ॥

अर्थ—ऊख की खेती तो सभी लोग करें, यदि बीच में ज्येष्ठ का (तपने वाला) महीना न हो तो ॥ ३४ ॥

ऊख सरवती दिवला धान।
इन्हें छाँड़ जनि बोओ आन ॥ ३५ ॥

अर्थ—घाघ कवि का कहना है कि, ऊख में सरौती ऊख और धान में दिवला नामक धान को छोड़कर दूसरा न बोओ, क्योंकि इसमें पैदावार अच्छी होती है ॥ ३५ ॥

जेठ में जरै माघ में ठरै।
तब जीभी पर रोड़ा परै ॥ ३६ ॥

अर्थ—जब ज्येष्ठ मास की तपन में जले और माघ के महीने में सर्दी से ठिठुरे तब जबान पर गुड़के रोड़े पड़ते हैं। ॥ ३६ ॥

जेकरे ऊखर लगे लोहाई।
तेहि पर आवै बड़ी तबाही ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ—ऊखर = ऊख, गन्ना। लोहाई = लाही, सूखा रोग। तबाही = कष्ट, बर्बादी। तेहिपर = उस पर।

अर्थ—जिसकी ऊख में लाही या सूखा रोग लग जाता है। उसपर बड़ी तबाही आती है ॥ ३७ ॥

जो तू भूखा माल का।
तो ईख करे नाल का ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ—नाल = नाला, मार्ग (नाल पंजाबी = रास्ता)। माल = धन-दौलत।

अर्थ—कवि का कहना है कि, यदि तू धन का भूखा है तो नाले की ओर या नहर की ओर ईख बोओ ॥ ३८ ॥

लाग बसन्त ऊख पकन्त ॥ ३९ ॥

अर्थ बसन्त लगते ही ऊख (गन्ना) पकने लग गई ॥ ३९ ॥

रवी की फसलों की बोअनी।

माघ महीना बांइये झार।
फिर राखौ रब्बी की डार ॥ ४० ॥

शब्दार्थ—झार = साफ, बिन-चुनकर। डार = तैयार, ठीक।

अर्थ—माघ में उड़द को बिन-चुनकर रखो अर्थात् माघ तक उर्द काटकर झाड़-बुहार कर साफ करके घर में आ जाती है। फिर उसी खेत को रवी की फंसल (गेहूं की फसल) के लिए जोतकर तैयार करो ॥४०॥

ईख तिस्सा, गेहूँ बिस्सा ॥ ४१ ॥

अर्थ—ईख तिसगुना और गेहूं बिसगुना होना चाहिए ॥ ४१ ॥

ईख तक खेती, हाथी तक बनिज ॥ ४२ ॥

अर्थ—ईख से बढ़कर दूसरी खेती नहीं, हाथी के व्योपार से बढ़कर दूसरा व्योपार नहीं ॥ ४२ ॥

जब बर बरौठे आई ।
तब रबी की होय बोआई ॥ ४३ ॥

अर्थ—जब बरें नामक कीड़ा (हड्डा-हड्डा) उड़ती हुई छातों में आने लगें, तब जानो कि अब रबी की बोआई आरम्भ है ॥ ४३ ॥

पूसै बोवै पीस खाये ॥ ४४ ॥

अर्थ—रबी की फसल पूस में बाने से तो उसे पीसकर खा जाना अच्छा है ॥ ४४ ॥

जौ गेहूँ बोवै पाँच सेर, मटर बीघा तीसै सेर ।
बोवै चना पसेरी तीन, तीन सेर बीघा जोन्हरी कीन ॥ ४५ ॥

अर्थ—जौ और गेहूं २४ सेर और मटर ३० सेर का बीघा बोये, चना १५ सेर और जोन्हरी ३ सेर बीघा बोये ॥ ४५ ॥

१—गेहूं प्रायः अक्टूबर के प्रारम्भ में ही बोया जाता है। गेहूं को जल्दी बो देना ही लाभदायक है। क्योंकि देर में बोने से उसमें बिमारी व कीड़े लगने का भय रहता है। गेहूं कई तरह से बोया जाता है। यथा—छिटकवां, हलके पीछे होकर और चोंगा या नरई तरोके पर छिटकवां की बोअनी में गेहूं के दाने खेत में छींटकर उसे मिट्टी में जोतकर मिला देते हैं और ऊपर से पाटा या हेंगा चला दिया जाता है, यह रीति उन्हीं स्थानों में चलायी जाती है, जहां पर खेतों में नमी अधिक रहती है। दूसरा जो हलके पीछे बोआई होती है। और जिसकी अधिक

प्रथा है, उसमें हल के पीछे कूड़ के साथ एक आदमी थोड़े-थोड़े बीज हाथ में लेकर डालता रहता है और इस तरह सारे खेत में बीज कूड़ों से बो दिया जाता है तथा ऊपर से पाटा फेर दिया जाता है। तीसरी विधि नरई की है जिसमें देशी बीज बोने की मशीन होती है। इसका प्रयोग मुख्यतः उत्तर-प्रदेश के पश्चिमी जिले और बुन्देल खण्ड में किया जाता है। इसकी सहायता से बीज ठीक जगह पर भूमि में २ से ३ इंच की गहराई तक गिरता है और साथ ही मिट्टी से ढक जाता है। चौथा तरीका सीडड्रील का भी है जिसके दो भेद हैं। एक बैलों से, दूसरी ट्रैक्टर आदि की सहायता से। इनमें बीज रखने का एक बड़ा सन्दूक होता है, जिसमें छोटे-छोटे ट्यूब लगे रहते हैं, ये ट्यूब नीचे की ओर सीडड्रील की कूड़ बनाने वाली फाली के पास बीज गिराते हैं। जो सीडड्रील मशीन से चलती है। उनमें बीज डालने के लिए छोटी-छोटी धातु की प्याली बनी रहती है। जैसे-जैसे मशीन चलती, वैसे-वैसे वह बीज की उचित मात्रा ट्यूब में छोड़ती रहती है, छोटे किसानों के लिए बैलों से चलने वाली सीडड्रील अधिक लाभदायक है।

गेहूं में प्रायः ३—४ सिंचाई करनी पड़ती है। परन्तु यदि जाड़ों में वर्षा हो जाय तो सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती है। पहली सिंचाई ३—४ सप्ताह बाद कर देनी चाहिए। क्यों कि ऐसा न करने से उसका बिकास रुक जाता है और दीमक का भय रहता है। इसके बाद २५—३० दिन बाद सिंचाई करते रहना चाहिये। पानी न अधिक हो न कम दोनों ही दशा में हानि है। बालें निकलने पर तो सिंचाई की और भी आवश्यकता है। ऐसा करने से दाना सुडौल और मजबूत हो जाता है।

निकाई-गुड़ाई—गेहूं में निकाई-गुड़ाई कम की जाती हैं। परन्तु एक बार खुरपी से हल्की गुड़ाई कर देना लाभदायक ही होता है। इससे खर-पतवार नष्ट हो जाते हैं और पौधों को पूर्ण भोजन मिल जाता है तथा खेत में नमी भी बनी रहती है।

गेहूं की कटाई का समय तभी होता है, जब पौधे भली-भांति पककर सूख जाते हैं। गेहूं की बाली जब मोड़ने पर टूट जावे तब काटना

चाहिये। कटाई, हँसिया या दरातीसे की जाती है। कुछ जगहोंमें कटाई मशीनसे की जाती है। इस मशीनको लौबर भी कहते हैं। यह बैलों द्वारा खींची जाती है। इसको बड़े-बड़े किसान प्रयोग में लाते हैं। इसे काट कर खलिहान में लाकर बाली को ऊपर करके रखना चाहिये। क्योंकि वर्षा होने पर उनके सड़ने का भय नहीं रहता। डाँठ के खूब सूख जाने पर उसपर बैलों द्वारा दाँय चलाई जाती है। बैलों के अतिरिक्त आँल पैंड थेसर नामक मशीन से भी मड़ाई की जाती है। पर इससे खर्च अधिक होता है, जब डन्ठलें टूटकर भूसा हो जाती हैं, तब उन्हें हवा में बरसाया जाता है। इससे भूसा उड़कर दाना मात्र हो जाता है। इस बरसात अर्थात् ओसाई या ओसानी को पछिवा हवा में करना अच्छा होता है। पूर्वी हवा में करने से नमी होने से अनाज खराब हो जाता है।

गेहूं की पैदावार साधारण प्रति एकड़ १२ से २५ मन तक हो जाती है। परन्तु अच्छी खेती करने पर उन्नतिशील जातियों की उपज २५ मन से ३० मन तक हो जाती है।

डेढ़ सेर बजरा बजरी सावाँ।
कोदो काकुन सवैया बोवा ॥ ४६ ॥

अर्थ—बजड़ा-बजड़ी और सावाँ डेढ़ सेर एक बीघे में और कोदो, काकुन सवा सेर का बीघा बोवे ॥ ४६ ॥

दो सेर मोथी, अरहर मास।
डेढ़ सेर बिगहा बीज कपास ॥ ४७ ॥
पाँच पसेरी बिगहा धान।
तीन पसेरी जड़हन मान ॥ ४८ ॥

अर्थ—मोथी, अरहर और उर्द का बीज एक बीघे में दो सेर बोना चाहिये और कपास का बीज एक बीघा में डेढ़ सेर बोये ॥ ४७ ॥

(इसी प्रकार) धान एक बीघे में पचीस सेर बोये और अगहनी धान-जड़हन पन्द्रह सेर का बीघा बोये ॥ ४८ ॥

अरहर की खेती—अरहर की जन्मभूमि भारत या अफ्रिका कहलाती है। यह दो दाल वाला पौधा है। इससे खेतों को नाइट्रोजन खूब मिलता है। इसकी जड़ें गहराई तक खूब जाती हैं जिससे खेत पीला हो जाता है। यह सभी दालों में प्रमुख दाल है। इसको प्रायः अकेला भी बोया जाता है। परन्तु इसको अन्य फसलों के साथ मिलाकर बोना अधिक लाभदायक होता है। इसका पौधा उभड़कर झाड़ीदार हो जाता है। इसके दाल की बहुत खपत होती है। अरहर की लकड़ी जलाने व छप्पर आदि छाने, छत पाटने और टोकरी आदि बनाने के काम में आती है। हमारे प्रान्त में लगभग ४२ लाख एकड़ भूमि में अरहर की खेती की जाती है।

अरहर की दो मुख्य जातियाँ हैं। एक देर से पकने वाली, दूसरी शीघ्र पकने वाली। देर से पकने वाली एक उन्नतिशील जाति है, जिसे कृषि-विभाग ने निकाला है—टी० २३, टी० ५१, टी० ६६। यह ८-९ महीने में पक कर तैयार हो जाती है। दूसरी शीघ्र पकने वाली अरहर को तूर कहते हैं। कृषि-विभाग ने इसकी भी उन्नतिशील जातियाँ प्रस्तुत की हैं। टी० ३, टी० १३१, टी० १३२। यह ४-५ महीने में पक कर तैयार होती है।

अरहर के लिए वह भूमि अच्छी होती है, जिसमें ज्वार, बाजरा और कपास उगाये जाते हैं। परन्तु रंग की मटियार दोमट भूमि इसके लिए अच्छी होती है। हल्की बलुई भूमि में भी इसकी खेती अच्छी होती है। इसके लिए खेत की अधिक जुताई नहीं की जाती। फिर भी दो-तीन जुताई करके तथा पतेला फिराकर खेत समतल कर दिया जाता है। अरहर में प्रायः खाद नहीं डाला जाता। फिर भी खेत की उर्वरा शक्ति के अनुसार खाद डालना आवश्यक है। इसे प्रायः छिटकवा रीति से और कूड़े में हलके पीछे दोनों रीतियों से बोया जाता है। २-३ फुट की दूरी पर बोना चाहिये। इसकी फसल में अक्टूबर, नवम्बर के आरम्भ में एक-दो बार खुरपी से निराई कर देना लाभदायक होता है। यदि लाइनों से बोया हो तो कानपुर कल्टीवेटर से गुड़ाई कर देना भी लाभदायक होता है। अरहर में प्रायः सिंचाई की आवश्यकता नहीं

होती, परन्तु पाले से लाभदायक होता है। अरहर में प्रायः सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु पाले से बचने के लिए सितम्बर के अन्त में इसकी एक-दो सिंचाई कर देना लाभदायक ही होता है।

अरहर की शीघ्र पकने वाली जातियों को नवम्बर, दिसम्बर में काट लिया जाता है और देर में पकने वाली जातियों को मार्च, अप्रैल में काटा जाता है। इसके पेड़ों को गँड़ासे से काटते हैं और काटकर पूलियाँ बनाकर खलिहान में जमा कर देते हैं।

इसकी मड़ाई की कई विधियाँ हैं। प्रायः किसान इसके पेडों को डण्डे से पीटकर फलियाँ व भूसा अलग कर देते हैं। और तनों को अलग जमा करते जाते हैं। पश्चात् बैलों की दायँ चलाकर और उसे हवा में बरसाकर दाना तैयार कर लिया जाता है। इस विधि में किसान ५-६ अरहर के पेड़ एक साथ लेकर किसी पटेला या अन्य कड़ी चीज से पीटकर भूसा अलग कर लेते हैं। फिर दाँय चलाकर दाना तैयार हो जाता है।

पैदावार—अरहर १५ से लेकर २० मन प्रति एकड़ और देर में पकने वाली जातियों को उपज ३० मन प्रति एकड़ होती है। इसका भूसा बहुत ही स्वादिष्ट और पाचक होता है जिसे पशु बड़े चाव से खाते हैं।

उकठा इसकी प्रमुख बिमारी है जो एक फफूँदी से पैदा होती है। यह फफूँदी उन खेतों में अधिक लगती है जहाँ पानी भरा रहता है। इससे पौधे मुरझाकर सूख जाते हैं। एक गिडार नामक कीड़ा होता है, जो फलियों में छेदकर दानों को भक्षण कर जाता है। इस प्रकार फसलको बड़ी हानि होती है।

सवासेर बीघा सावाँ मान, तिल्ली सरसों अँजुरी जान।
बरें कोदो सेर बोआओ, डेढ़ सेर बीघा तीसी नाओ ॥४९॥

अर्थ—सांवा सवा सेर एक बीघे में बोने का प्रमाण है। तिल्ली और सरसों एक बीघे में एक अँजुरी बरें और कोदो एक सेर और तीसी का बीज एक बीघे में डेड़ सेर बोना चाहिये॥ ४९॥

यही विधि से जब बोवे किसान।
दूने लाभ की खेती जान ॥ ५० ॥

अर्थ—इस नियम से जब किसान बोवे तो उसकी खेती दूने लाभ की जानो ॥ ५० ॥

खाद और उसका महत्त्व—

खेतों में फसल बोने के पहले खाद अच्छी तरह डाल देनी चाहिए। क्योंकि जिस खेत में खाद होगी उसमें पैदावार अच्छी होगी। इसलिए घाघ ने कहा

खेती करै खाद[1] से भरै।
सो अन कोठिला में धरै ॥ ५१ ॥

अर्थ—(यदि) खेती करनी हो तो उसे (खेत को) खाद से भर दो। (और जो ऐसा करता है) वह अन्न लेकर कोठिला (बखार) में भर देता है ॥ ५१ ॥

१. खाद—पौधों के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना शरीर के लिए भोजन। पौधों की वृद्धि के लिए भूमि के अतिरिक्त वायु, प्रकाश, तापक्रम और खाद्य-पदार्थों की आवश्यकता पड़ती है। पौधे की वृद्धि के लिए तेरह तत्त्वों की आवश्यकता होती है।

यथा—१ नत्रजन, २ स्फोर, ३ कार्बन, ४ हाइड्रोजन, ५ आक्सीजन, ६ पोटास, ७ चना, ८ लोहा, ९ मेगनीशियम, १० गन्धक, ११ बारेन, १२ जस्ता, १३ मैंगनीज, इसमें से कार्बन, हाइड्रोजन, आक्सीजन तत्त्वों को छोड़ सभी तत्त्व भूमि से प्राप्त होते हैं। पृथ्वी में पौधों के लिए खुराक का भण्डार है। पौधे पृथ्वी से अपनी खुराक घोल के रूप में प्राप्त करते हैं। और इसी से पृथ्वी की उर्वरा शक्ति का ह्रास होता है। इसी कारण उसमें खाद डालने की आवश्यकता होती है और पृथ्वी की यह कमी तब पूर्ण हो जाती है। पहले जब मनुष्यों की संख्या कम थी, तब पृथ्वी से केवल एक ही फसल ली जाती थी। संख्या के बढ़ने से अधिक फसल ली जाने लगी है। यही कारण है कि भूमि में अब वह

उर्वरा-शक्ति न रही। उसे उर्वर रखने के लिये पृथ्वी में खाद देना आवश्यक है। ऐसा करने से उसको उर्वरा शक्ति बनी रहेगी।

खाद दो प्रकार की है। १. साधारण, २. विशेष रासायनिक। साधारण खाद में सर्व प्रथम गोबर की खाद का नाम लिया जायेगा। जो पशुओं के मल-मूत्र आदि द्वारा बनायी जाती है। पशुओं के मल-मूत्र को एक गड्ढे में डाल देवें और जब वह भर जावे, तब उसे दो-एक बार पलट देवें। फिर थोड़े दिन में ही वह खाद तैयार हो जायेगी। गोबर की खाद सब खादों में श्रेष्ठ तथा सरल है। यह सब किसानों को सरलता से प्राप्त होती है। इसे किसान आसानी से बना सकते हैं। इस खाद के द्वारा पौधों को आहार के सभी तत्त्व प्राप्त होते हैं। यही बड़ी मूल्यवान् खाद है, यह पौधों का तत्त्व देने के साथ में उसमें सुधार भी लाती है। किसानों के लिए सर्वथा ही उपयोगी आवश्यक खाद है। यदि शीघ्र कृषक वर्ग इसका ठीक उपयोग करें तो आज उसकी दशा सुधर जावे। परन्तु इन्धन के अभाव में वे उसे जलाने के काम में लाते हैं, परिणाम यह होता है कि उपज घटती है। अन्य खादों को बनाना भी वे नहीं जानते। नवीन ढंग भी नहीं अपनाते। बुद्धि की कमी, गोबर कहीं का कहीं पर फेंक देते हैं। ऐसा करने से गोबर के आवश्यक तत्त्व बह जाते हैं। गोबर का भली-भाँति प्रयोग करना हो तो उसे गढ़े में डालो। गढ़ा ८ फीट लम्बा और ६ फीट चौड़ा, ४ फीट गहरा बनायें। आवश्यकतानुसार यह घटाया-बढ़ाया भी जा सकता है, फिर उसमें गोबर, कूडा-कर्कट और पत्ती आदि की तह लगाकर भर देना चाहिए। और जब भर जाय तो, तब उसे मिट्टी से ढँक देवें। आवश्यकतानुसार उसपर पानी छिड़क देवें। फिर थोड़े ही समय में जब वह खाद तैयार हो जाती है तो उसे डालें।

दूसरी कम्पास्ट खाद है। कम्पोस्ट खाद बनाने के कई तरीके हैं। साधारण तौर पर एक गड्ढा ८"×६"×४" का बना लेवें फिर उसमें पहले कुछ पुरानी सड़ी-गली खाद फैला देवें। फिर पहली घास-फूस को ६ से ९ इञ्च तक बिछा देवें। इसके ऊपर गोबर को वह लगभग १ इञ्च गड्ढा में फैला दें जिसमें को कीटाणु शीघ्र कार्य करना प्रारंभ

कर देवें। इस हेतु गोबर की तह के ऊपर मवेशियों की मूत्र-मिश्रित मिट्टी छिड़क देवें। अन्त में ऊपर से कुछ राख छिड़कना लाभदायक होता है, ताकि गड्ढे के तेजाबी तत्त्वों की वृद्धि न हो। इस प्रकार की तहों द्वारा गड्ढे को भर कर मिट्टी से पाट देवें। फिर जैसा पहले कहा गया है उसी रीति से गड्ढे को पानी से सींच और पलट देवें। फिर तो मौसम के अनुसार चार-छः महीने में खाद तैयार हो जायेगी। अच्छी खाद का रंग कुछ भूरा होता है और उनसे बदबू नहीं आती। इसे तत्काल ही खेत में फैला सकते हैं। यदि खाद के गड्ढे से किसी प्रकार दुर्गन्धि आती हो तो तत्क्षण उसमें राख व मूत्र-मिश्रित मिट्टी मिलाकर पलट देना चाहिये। वायु की कमी से और अधिक नमी के कारण यह स्थिति उत्पन्न होती है। इसलिए पलट देना आवश्यक है।

तीसरी हरी खाद है। इसके लिए फलीदार फसलों को लगाकर उन्हें हरी अवस्था में भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से जोत-कर सड़ा देने की विधि को हरी खाद कहते हैं। गोबर आदि खाद न मिलने के कारण हमारे खेत कमजोर होकर पैदावार कम देने लगते हैं। इसी कमी को पूरा करने के लिए हरी खाद दी जाती है। हरी खाद का प्रमुख कार्य भूमि को जीवांश देना है। जिन खेतों में हरी खाद देनी हो उन्हें रबी की फसल कटते ही सींच देना चाहिये और जुताई कर उसमें आवश्यकतानुसार सनई, ढैंचा, मूँज आदि नं० १ में से कोई एक बीज बो देना चाहिये। जब यह फसल लगभग डेढ़ मास की हो जाय तो उस पर पाटा चला कर जोत देवे। यदि खाद भली भाँति न सड़ने पावे तो उसे पानी द्वारा भरकर सड़ाना चाहिये। इसके बाद जुताई कर पटेला चलाना चाहिये और देशी हल से कई बार जुताई करा देवे। इस प्रकार जुताई करने से खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ जावेगी और खेत में खाद भी मिल जायेगी। किस फसल को कौन सी खाद दी जावे—यह किसान की इच्छा पर है। प्रायः गेहूँ और गन्ना के लिये सनई और मूँज नं० १ खाद सबसे उत्तम होती है। इस खाद का प्रयोग चैत्र, वैसाख में भी कर सकते हैं।

चौथी मैले की खाद भी खेतों के लिये बहुत उपयुक्त है। इस खाद से आलू, गन्ना और मक्का की उपज दूना हो जाती है अतः इसका प्रयोग

करना बहुत लाभदायक है। शहरों में मैले की खाद नगर-पालिका तैयार करती है और उसका अच्छा प्रयोग होता है। गाँवों में इसका सदुपयोग नहीं होता। मैले की खाद तैयार करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि खेतों में नालियाँ बनाकर उसमें टट्टी करे। ये नालियाँ ६ इंच चौड़ी और ३ इंच गहरी होनी चाहिये। टट्टी कर नालियाँ पाट देवे। यह खाद अपने आप सड़ जाती है और कुछ दिनों में अच्छी खाद तैयार होती है और बहुत कीमती होती है।

पाँचवी जानवरों के मल-मूत्र की खाद—इसमें भी पर्याप्त तत्त्व पाये जाते हैं। पशुओं के नीचे घास या कूड़ा-करकट डाल देना चाहिये। जब खूब भींग जावे तो उसे उठाकर गड्ढे में डाल देना चाहिये। यदि ऐसा न हो सके तो मिट्टी बिछा देनी चाहिए और उसके भींगने पर उसे उठा कर गड्ढे में डाल देवे। इसी प्रकार इसका प्रयोग करे। कुछ मनुष्य भेंड़-बकरियों और अन्य जानवरों को अपने खेत में बिठलाते हैं। ऐसा करने से उसको बहुत लाभ होता है।

छठवीं खली की खाद है। नीम, महुआ और मूँगफली की खली खाद के काम में आती है। अन्य की नहीं। नीम आदि की उपरोक्त खलियों से नाइट्रोजन की मात्रा अधिक प्राप्त होती है।

सातवीं हड्डी की खाद है। इस खाद से पौधों को फासफोरस अधिक प्राप्त होता है। इसमें हड्डी की खाद अच्छी मानी गई है। हड्डी का चूरा पीसा जाता है।

इनके अतिरिक्त अन्य खादें भी हैं। जैसे (१) गन्ने की खाद (२) मछली और खून की खाद, (३) जल कुम्भी की खाद, (४) चिड़ियों की बीट की खाद, (५) तालाब और नदी की मिट्टी की खाद, (६) ऊन के कारखाने से मिले ऊन के टुकड़े आदि की खाद, (७) शोरे की खाद, (८) मैले की खाद, (९) सांप की खाद, (१०) कीचड़ आदि की खादें।

इसके अतिरिक्त विशेष या रासायनिक खादें हैं जैसे अमोनियम सल्फेट, सुपर फासफेट और पुटास आदि। इन रासायनिक खादों का प्रयोग या उपयोग केवल उसी समय करना चाहिए, जब कि अन्य जीवांश

पूर्ण खादें न प्राप्त हो सकती हों अथवा उनके गलने का समय न मिला हो, क्योंकि रासायनिक खादों का बार-बार प्रयोग करने से भूमि खराब हो जाती है और अन्त में ये हानिकारक हैं।

गोबर मैला नीम की खली।
इससे खेती दूनी फली ॥ ५१ ॥

अर्थ—(घाघ कवि का कहना है—) गोबर, मैला, बिष्ठा और नीम की खली छोड़ने से खेती दूनी फलती है अर्थात् दूने की पैदावार होती है ॥ ५१ ॥

खाद पड़े तो खेत, नहीं तो कूड़ा रेत ॥ ५२ ॥

अर्थ सरल है ॥ ५२ ॥

जेकरे खेत पड़ा नहिं गोबर।
उस किसान को जानो दूबर ॥ ५३ ॥

अर्थ—जिस किसान के खेत में गोबर या गोबर की खाद नहीं पड़ी उसको दूबर अर्थात् गरीब या दरिद्र जानो ॥ ५३ ॥

गोबर मैला पाती सड़े।
तब खेती में दाना पड़े ॥ ५४ ॥

जब खेत में गोबर, मैला और पत्तियाँ सड़ती हैं, तब खेतों में दाना पड़ता है, अर्थात् उसमें पैदावार अच्छी होती है, और उसके दाने भी अच्छे होते हैं ॥ ५४ ॥

खादी कूरा ना टरै, कर्म लिखा टर जाय ॥ ५५ ॥

अर्थ—खेत में लगे खाद के कूरे, खेप या उसकी ढेरों के स्थान नहीं टलते और उन पर अवश्य ही फसलें अच्छी होती हैं, बल्कि ब्रह्मा का लिखा हट जाय ॥ ५५ ॥

गोबर चोकर चँकवर रूसा ।
उनको छोड़े होंय न भूसा ॥ ५६ ॥

अर्थ—जो किसान अपने खेत में गोबर, चोकर, चकवर और अरूसा को नहीं छोड़ता उसको अन्न को कौन कहे भूसा भी नहीं होता ॥५६॥

खेते पांसा जो न किसान ।
उसको करे दरिद्र समान ॥ ५७ ॥

अर्थ—जो किसान अपने खेतों में खाद नहीं डालता, उसका घर दरिद्र के समान हो जाता है ॥ ५७ ॥

खेतों की ज़ोताई-गोड़ाई और हेंगाई की कहावतें—

खेतों में फ़स्ल बोने के लिए अनेक क्रियायें करनी पड़ती हैं। तब वह बोने के योग्य होता है। इसीसे पौधे अच्छे उगते हैं और उनकी जड़ें गहराई तक जाती हैं। भूमि में ऐसी दशा पैदा करने के लिए यान्त्रिक साधनों का प्रयोग किया जाता है। और उसके द्वारा खेतों की पूर्ण रूप से दशा बदल दी जाती है। यहाँ तक कि उसमें लोच आने लगती है और वह बोने योग्य हो जाता है। मिट्टी को उस दशा में लाने के लिए जो कार्य किया जाता है, उसे जुताई कहते हैं। जुताई का खेतों में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। बाद में फसल बो दी जाती है, इसपर घाघ की ये कहावतें भी देखिये—

तीन कियारी तेरह गोड़ ।
तब देखो ऊखी कै पोर ॥ ५८ ॥

अर्थ—तीन बार क्यारी बनाकर पानी भरो और तेरह बार गोड़ाई करो, तब ऊख के अच्छे पोर दिखाई पड़ेंगे ॥ ५८ ॥

थोर जोताई बहुत हेंगाई, ऊँचे बाँधे आरी ।
उपजै तो उपजै नहीं घाघै देवैं गारी ॥ ५९ ॥

अर्थ—खेत में जुताई तो थोड़ी करे और अधिक हेंगावे तो पैदावार होती ही नहीं परन्तु कवि कहता है कि यदि खेत के किनारे के मेड़ ऊँचे बँधे हों तो शायद पैदावार हो ही जाय, फिर घाघ को गालियाँ तो दोगे ही ॥ ५९ ॥

जौ हल जोतै खेती बाकी ।
और नहीं तो जाकी ताकी ॥ ६० ॥

अर्थ—खेती तो उसकी है जो स्वयं हल जोतता है । और नहीं तो जिसकी-तिसकी होती है अर्थात् जिसकी जैसी है, वैसी ही रहती है, अच्छी नहीं होती ॥ ६० ॥

दश बाहँ का गाड़ा ।
बीस बाहों का माड़ा ॥ ६१ ॥

अर्थ—गेहूं का खेत कम से कम दश बार तो जोतो । और ऊख का खेत बीस बार जोतना चाहिये ॥ ६१ ॥

बाहें क्यों न असाढ़ एक बार ।
अबका बाहें बारंबार ॥ ६२ ॥

अर्थ—यदि गेहूं बोनेवाले खेत को (पलिहर को) आषाढ़ (आषाढ़ मास) में एक बार नहीं जोता तो उसे अब बारम्बार क्या जोतता है ? ॥ ६२ ॥

बाली छोटी भई काहें ।
बिना असाढ़ के दो बाहें ॥ ६३ ॥

अर्थ—गेहूं की बाली छोटी क्यों हुई ? इसका उत्तर यही है कि आषाढ़ में दो बाँह अर्थात् दो बार जुताई नहीं की गई ॥ ६३ ॥

गेहूँ भवा काहें, असाढ़ के दुइ बाहें ।
गेहूँ भवा काहें, सोलह बाहें नौ गाहें ॥ ६४ ॥

शब्दार्थ—भत्रा=हुआ काहें=क्यों। बाहें=बाँह लगायें, जुताई करने। गाहें=हेंगा पाटा फेरने।

अर्थ—(कवि प्रश्नों में कहता है—) गेहूं क्यों हुआ ? आषाढ़ में दो बार जुताई करने से अर्थात् गेहूं की पैदावार तभी अच्छी होती है जब वह आषाढ़ में दो बाहें कर दिया जाता है। फिर कवि प्रश्न में कहता है कि—गेहूं क्यों हुआ; (उत्तर) सोलह बार जोतने और नौ बार हेंगाई करने से अर्थात् सोल्ह बाँह करके नौ बार पाटा घुमाने से जिससे मिट्टी के कण छोटे हो जाते हैं ॥६४॥

गेहूँ भवा काहें ? सोलह बाहें बाहें।
गेहूँ भवा काहें ? कातिक के चौबाहें ॥ ६५ ॥

अर्थ – गेहूं क्यों हुआ ? खड़िया वेड़िया सोलह बार जोताई करने से फिर गेहूं क्यों हुआ ? कार्तिक में चार बाँह करने से ॥ ६५ ॥

जब इतनी बार किसान गेहूं के खेत की जुताई और हेंगाई करे, तब गेहूं अच्छा होवे।

फिर कहा है :—

गेहूँ बाहें धान बिदाहें ॥ ६६ ॥

अर्थ—गेहूं की पैदावार के लिए उसकी जुताई बारम्बार होनी चाहिये। १६ बार तक की जोताई और ९ बार पाटा चलाई की विधि-क्रिया की जाती है। और धान तब अच्छा होता है, जब उसकी बिदहनी कर दी जाती है। बिदहनी—उसे कहते हैं, कि, जब धान के पौधे जमकर उनके अँकुर निकल आवें, तब से लेकर दो-चार-छ-इन्च तक के हो जावें तब ज्यों ही बरसात का पानी खेत में बरसकर जमा हो जावे, खेत को कदम-कदम पर पतला जोतकर उसे पटड़े से हेंगा देवे तो, फसल अच्छी होती है। धान की बालें तभी बढ़ती हैं। इस समय ४-६ हेंगा देना अच्छा होता है, इससे धान के पौधों का हर तरह विकास तो होता ही है, साथ ही उनको हानि पहुंचाने वाले सँवई, मकरा, मोथा, नकली धान, (डौंरा)

आदि, पाटा से दबाये जाने पर जोती हुई मिट्टी में दबकर सड़ जाते हैं और फिर नहीं उभड़ते। इस प्रकार बिदहनी से धान की वह निकाई भी हो जाती है, जो बहुत जरूरी होती है ॥६६॥ फिर धान के लिए कहा है–

गहिर न जोतै बोवै धान।
सो घर कोठिला भरै किसान ॥ ६७ ॥

अर्थ—गहरी जुताई न करके धान बावे तो वह किसान घर में भण्डार भर देता है ॥ ६७ ॥

कच्चा खेत न जोतै कोई।
नाहीं बीज न अंकुर होई ॥ ६८ ॥

अर्थ—कच्चा अर्थात् गीला खेत कोई न जोतो, नहीं तो बीज से अंकुर भी नहीं निकलेगा ॥ ६८ ॥

कहा होय बहु बाहें, बोता जाय न थाहें ॥ ६९ ॥

अर्थ—बहुत बार जोतने से क्या होता है; यदि गहराई से थाह लगाकर न जाता जाय ॥ ६९ ॥

कातिक मास रात हल जोतौ।
टाँग पसारे घर मत सूतौ ॥ ७० ॥

अर्थ—कातिक के महीने में रात के समय हल जोतना चाहिये। कवि कहता है कि, इस समय पैर फैलाकर घर पर सोते न रहो ॥७०॥

चिरैया में चीर फार।
असरेखा में टार-टार।
मघा में कांदो सार ॥ ७१ ॥

अर्थ—चिरैया (पुष्य नक्षत्र) में अगहनी धान का खेत या ताल थोडा-बहुत जोतकर रोप दिये जायें तो ठीक होता है। उसी प्रकार श्लेषा में यदि उस खेत के ढेलों को हटा-बढ़ाकर भी धान लगा दिये

तो काम चल जाता है। परन्तु मघा नक्षत्र के आ जाने पर तो उसकी जोताई और सड़ी हुई खाद पतवार डाल कर ही जब धानों के पौधे बैठाओगे तब अच्छा होगा ॥ ७१ ॥

जो जौ चहै तो उत्तरा गहै ।
कांच पकै के जोतत रहै ॥ ७२ ॥

अर्थ—यदि जौ की पैदावार अच्छी चाहो, तो उत्तरा नक्षत्र में कच्चे खेतों को जोतकर उसे पकाकर फिर ढेलों की रोरी एवं उनके बारीक कण बनाकर तैयार करो और पुनः उसमें जौ बोओ तो फसल अच्छी होगी ॥ ७२ ॥

जो कपास को नाहीं गोड़ी ।
उसके हाथ न आवै कौड़ी ॥ ७३ ॥

अर्थ—जो कपास की गोड़ाई नहीं करेगा उसके हाथ पैसा नहीं आयेगा। अर्थात् खेत को बिना गोड़े कपास नहीं पैदा होती ॥ ७३ ॥

जोतै खेत घास न टूटै ।
तेकर भाग साँझ हीं फूटै ॥ ७४ ॥

अर्थ—जिस किसान के खेत की जोताई में उसकी घास नहीं टूटती, उसका भाग्य साँझ ही फूटा हुआ समझो ॥ ७४ ॥

असाढ़ जोतै लड़के बारे, सावन भादों में हलवाहे ।
कुआर में जोते किसानका बेटा, तब ऊँचे हों होनेहारे ॥७५॥

अर्थ—आषाढ़ मास में तो लड़के भी हलवाही करके खेत जोत लेते हैं, किसानी सँभाल लेते हैं। परन्तु सावन में तो पूरा जवान हलवाहा ही सँभाल सकता है और क्वार में तो कोई होनहार किसान का बेटा ही खेतों को जोतता है कि जिससे फसल ऊँची होती है ॥ ७५ ॥

खेती को जुताई-गुड़ाई का कार्य खेतो के लिये बड़ा महत्वपूर्ण है। यदि इस ओर ध्यान न दिया जाय तो खेतों की उपजाऊ शक्ति कम हो जायेगी और पौधे निर्बल उगेगें। साथ ही उन पर अनेक हानिकारक कीड़े-मकोड़े तथा बीमारियों का आक्रमण होगा और पैदावार बहुत कम होगी और अन्न की कमी हो जायेगी, इसलिए किसानों को उचित है कि खेतों की जुताई-गुड़ाई बराबर करते रहें। इससे उनको पैदावार अच्छी होगो और वे खुशहाल रहेंगे। इसका नाम भूमि परिष्करण है। इससे खेत की मिट्टी बोने योग्य हो जाती है और यह जुताई से ही होता है, कोई विद्वान् यह भो कहते हैं कि निकाई भी इसी कार्य में है। सबका उद्देश्य एक ही है। जुताई-गुड़ाई और निकाई से मिट्टी की भौतिक दशा सुधर जाती है और वह मुलायम होकर पौधों के उगने योग्य हो जातो है। दूसरा यह कि खेत से खर-पतवार नष्ट होकर वे साफ हो जाते हैं। तीसरा यह कि, खेत से हानि-कारक कीड़े-मकोड़े तथा उनके अण्डे-बच्चे नष्ट हो जाते हैं। (१) जलधारण-शक्ति बढ़ाने तथा शोषित करने के उपायों में वृद्धि हो जाती है। (२) भूमि में नमी बनी रहती है। (३) भूमि में वायु-संचार ठीक होता है। (४) भूमि में लोच बनी रहती है। (५) भूमि को उर्वरा शक्ति बनीं रहती है। (६) अन्य आवश्यक कार्य आदि। इसके दो भाग हैं—(७) बीज बोने की पहली क्रिया। (८) बीज बाने के बाद की क्रिया।

इस प्रकार के उपरोक्त कार्यों से खेती करने वालों को बड़ा लाभ होता है।

जुताई का समय.

जुताई करने की तीन ऋतुएँ हैं। (१) ग्रीष्म ऋतु में जुताई करना। (२) वर्षा ऋतु में जुताई करना। (३) शरद ऋतु में जुताई करना।

(१) ग्रीष्म ऋतु की जुताई तब होती है जब रबी की फसल कट जाती है। इससे बहुत लाभ होता है, एक तो यह कि फसल कट जाने पर शेष खर-पतवारों को नष्ट कर दिया जाता है, जो खेत में खाद का कार्य देते हैं।

(२) यह कि भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है।

(३) यह कि वर्षा ऋतु में धरती में पानी सोखने की शक्ति बढ़ जाती है और धरती के भराव की संभावना कम रहती है।

(४) यह कि हानिकारक कीड़े तथा बीमारियों के कीड़े और अण्डे नष्ट हो जाते हैं।

(५) यह कि पृथ्वी में लोच आ जाती है।

(६) यह कि भूमि समतल हो जाती है।

(७) यह कि पैदावार बहुत अच्छी होती है।

इसी प्रकार वे मिलते-जुलते लाभ सभी ऋतुओं में जुताई से कृषक को होते हैं। खाड़या-बेड़िया और घुमावदार यह कई प्रकार से होती है। अच्छी जुताई सभी को दिखाई देती है कि यह अच्छी है। उससे खेत पर एकदम आब आ जाती है और अच्छा लगता है तथा खेत में खर-पतवार भी नहीं रहते।

हेंगाई या पाटा फिराई

इसी प्रकार पाटा का भी प्रयोग किया जाता है, जब कि खेत में बड़े-बड़े ढेले पड़ जाते हैं। ढेलों को बारीक करने के लिए यन्त्र काम में लाये जाते हैं, जो लकड़ी का या आधुनिक ढंग का रोलर बना होता है। उनसे ढेले फूट जाते हैं और खेत एक सा हो जाता है। लकड़ी का पाटा या हेंगा अथवा रोलर यह दोनों ही बड़े उपयोगी होते हैं। ढेलों के तोड़ने से (१) जमीन एक सी हो जाती है। (२) और नमी सुरक्षित रहती है। (३) जमीन भुरभुरी हो जाती है। और मिट्टी में लोच लाने में सहायता

मिलती है। (४) खर-पतवारों के सड़ने में सहायता मिलती है। (५) जमीन की सभी प्रकार उर्वरा शक्ति बढ़ती है। (६) हानिकारक कीड़े-मकोड़े उनको चलाने से नष्ट हो जाते हैं। (७) फसल बोने पर वह बीज ढकने के लिए बड़े ही उपयोगी होते हैं।

निकाई-गुड़ाई

निकाई-गुड़ाई का यह उद्देश्य है कि भूमि में नमी बनी रहे और भूमि में खड़ी फसल से खर-पतवार नष्ट हो जावें। पौधों को भोजन मिलता रहे। भूमि में खड़ी फसल के पौधों की जड़ों में वायु का संचार रहे। जिससे उन्हें आवश्यक आहार मिलता रहे। इससे यह भी लाभ है कि पौधों से पानी नहीं उड़ता। पौधों को सभी प्रकार से बढ़ने में सहायता मिलती है और हानिकारक कीड़े-मकोड़े नष्ट हो जाते हैं।

बोआई के कुछ और पद्य

महाकवि घाघ का कहना है—

बोओ गेहूँ काट कपास।
ना हो ढेला ना हो घास ॥ ७६ ॥

अर्थ—कपास काटकर उस खेत में गेहूं बोओ, परन्तु ध्यान रहे कि खेत में ढेला और घास न रहे अर्थात् खेत खरपतवार से रहित हो ॥ ७६ ॥

कातिक बोवै अगहन भरै।
ताको हाकिम फिर का करै ॥ ७७ ॥

अर्थ—जो कार्तिक में रबी की फसल ठीक समय से बोवे और अगहन में उसे पानी से भरे अर्थात् सींचे या सिंचाई कर देवे तो फिर सरकार के हाकिम अर्थात् अफसर उसका क्या कर सकते हैं? उसकी मालगुजारी (भूमिकर) नहीं रुक सकती ॥ ७७ ॥

अदरा में जो बोवै साठी ।
दुःखै मार निकारै लाठी ॥ ७८ ॥

अर्थ—जो आर्द्रा में साठी धान बो देवें तो दरिद्रता को डण्डे मार कर भगा देगा ॥ ७८ ॥

आगे की खेती आगे आगे ।
पीछे की खेती बड़े भागे ॥ ७९ ॥

अर्थ—यदि बोआई पहले करोगे तो वह पहले तैयार होगी और पीछे खेती अर्थात् देर में बोई गई फसल तो बड़े भाग्य से ही होती है ॥ ७९ ॥ फिर कहते हैं—

अगाई बोआई, सवाई लबाई ॥ ८० ॥

अर्थ-आगे की बोआई सवाया लाभ देती है अर्थात् समय पर जितना ही जो आगे बोता है, वह उतना ही सवाया अन्न काटता है ॥ ८० ॥

मक्का जोन्हरी और बाजरी ।
इनको बोवै कछुक बीड़री ॥ ८१ ॥

अर्थ—मक्का, जोन्हरी और बाजरी या बाजरा को कुछ बीड़र अर्थात् दूर-दूर पर बोवें ॥ ८१ ॥

अब्बर खेती जो जुट्ठी खाय ।
सड़े बहुत तो बहुत मोटाय ॥ ८२ ॥

अर्थ—यदि कमजोर खेत में बीज बोया जाय फिर खाद डाली जाय तो वह उपजाऊँ हो जाती हैं ॥ ८२ ॥

आकार कोदो नीम जवा गाडर गेहूँ बेर चना ॥ ८३ ॥

शब्दार्थ—आकार=मदार। गाडर=इस नाम की घास ।

अर्थ—जिस साल मदार खूब फले और फूले तथा वृद्धि हो तो समझें कि उस वर्ष कोदो की फसल अच्छी होगी और जब नीम फूले-फले

तब जानो कि जो अच्छा होगा जब गाडर नामक घास की अधिकता हो तो गेहूं अच्छा हो और बेर की फसल अच्छी हो तो समझे कि इस वर्ष चना अच्छा होगा ।। ८३ ।।

आस-पास रबी, बीच में खरीफ।
नोन मिर्च डालकर खा गया हरीफ ।। ८४ ।।

शब्दार्थ—रबी=गेहूं की फसल। खरीफ=धान की फसल। हरीफ= एक कीड़ा, घातक व्यक्ति या घातक प्रभाव ।

अर्थ—खरीफ की फसल वहाँ बोओ जहाँ आस-पास रबी की फसल के खेत (पलिहर) न हों, अन्यथा उसपर घातक प्रभाव पड़ेगा । पलिहर में लोग अपनी गायें और भैंसे चराने को लावेंगे यही उसे नमक-मिर्च के रूप में लेकर हड़प कर जायेंगी अर्थात् चर जायेंगी ।। ८४ ।।

फसल खरीफ धान जड़हन की खेती

धान की खेती हमारे देश में लगभग ९० लाख एकड़ में होती है और दिनपर दिन बढ़ती ही जा रही है। हमारे देश में धान पूर्वी जिलों में अधिक होता है। परन्तु पश्चिमी भाग में सहारनपुर जिले में भी धान अधिक मात्रा में पैदा होता है। पहाड़ी जिलों में भी इसकी खेती अच्छी होती है।

धान की कई जातियाँ हैं। पर यह दो भागों में विभाजित किया जाता है। (१) दाने के गुण के अनुसार। (२) काटे जाने के समय के अनुसार।

१ दाने और गुण के अनुसार धान की जातियों को और तीन भागों में बाँटते हैं (अ) बारीक और उत्तम जाति का—इसका दाना पतला, सुगन्धित और खाने में उत्तम होता है। इसके नाम बासमती, हंसराज, अञ्जी और गौरैया आदि हैं। (ब) मध्यम श्रेणी की जातियाँ, इनके नाम अञ्जना, गजराज, दल-बादल और लकड़ा आदि

हैं। (स) मोटी श्रेणी की जातियाँ—इनके नाम साठी, देवा, सरया, बगरो, रौधिब आदि हैं।

२—काटे जाने के अनुसार धान की जातियाँ—धान की कुछ जातियों के नाम काटे जाने के अनुसार पड़े हैं। जैसे अगहनी, कतिकवा, क्वारी, भदईं आदि। इनका विभाजन इस प्रकार किया गया है।

(अ) शीघ्र पकने वाली जातियाँ—इनको क्वारी भदईं कहते हैं। इनके नाम देवला, बगरी, दुद्धी, मुंटुरी, रानोकाजल, मस्सुरी, बक्की साठा, यन २-।११, चाहना १० और टी० १३६ आदि हैं।

(ब) मध्य में पकने वाली जातियाँ—इसे कतिकवा भी कहते हैं। नाम दलबादल, अञ्जना, टी० २१, ३ और १३७ आदि हैं।

(स) देर से पकने वाली जातियाँ—उन्हें अगहनियाँ या जड़हन भी कहते हैं। इनके नाम लकड़वा बाँसो, टी० ९,१७,२३ और १००आदि हैं।

(द) जेठी या बोरो—इस जाति का धान, तालाब, नदियों और झील के किनारे जैसे-जैसे पानी घटता जाता है, लगाया जाता है। इसकी फसल जेठ में काटी जाती है।

धान की कुछ विशेष जातियाँ

(१) ऊसर में होने वाली सहनशील जातियाँ—जैसे टी० १३, टी० १०० (अगहनो), एन० २२, टी० ३६, क्वारी आदि।

(२) गहरे पानी में पैदा होने वाली जातियाँ - हमारे प्रदेश में धान की कुछ ऐसी जातियाँ हैं जो ६ फुट से लेकर ३० फुट तक गहरे पानी में उगाई जाती हैं। गर्मियों में जब तालाब सूख जाता है, तब इसके पौधे की बोआई-रोपाई की जाती है, पकने पर नाव में बैठकर इसकी कटाई की जाती है।

भूमि—धान के लिए सबसे अच्छी भूमि चिकनी मिट्टी है, परन्तु सिचाई का प्रबन्ध होने पर यह भड़ भूमि को छोड़ कर सभी प्रकार की

भूमि में पैदा हो सकता है। यह बहुधा ऊसर भूमि को ठीक करने के लिए बोया जाता है।

खेत की तैयारी—उन्नतिशील किसान अपने धान की खेत की तैयारी गर्मियों में ही आरम्भ कर देते हैं। वे खेत को एक या दो बार पहले जोतते हैं। ऐसा करने से वर्षा ऋतु में खर-पतवार कम पैदा होते हैं और धरती अधिक पानी सोख लेती हैं। खेत की तैयारी जुताई के ढंग पर निर्भर है।

धान के लिए खाद—धान के लिए ढेंचा की हरी खाद बहुत ही लाभदायक है। इनको वर्षा से पहले पलेवा करके या बाद में करके बोया जाता है। ७-८ सप्ताह बाद मिट्टी पलटने वाले हल से उसे जोत देते हैं और पानी भर देते हैं ताकि वह सड़ जाय। खली की खाद और रासायनिक खादों से भी धान की पैदावार बढ़ती है। १०-१५ प्रति एकड़ गोबर खाद डालने से भी अच्छा लाभ होता है।

बीज और बुआई—धान की बुआई दो प्रकार से होती है—

(१)—बेढ़ लगाकर—खेत तैयार हो जाने के बाद तैयार की हुई बेड़ से पौधे लेकर खेतों में ९ इञ्च के फासले पर धान के दो या तीन पौधे लाइनों में रोप दिये जाते हैं।

(२) -छिटकवाँ—जहाँ वर्षा अधिक होती है, वहाँ किसान पहले धान को खेत में छिटका कर जुताई कर देते हैं। खेतों में पानी जमा करके हल चलाकर पलेवा कर देते हैं और उसमें धान छींट कर पटला फेर देते हैं। इस प्रकार ३०-३५ सेर बीज प्रति एकड़ पड़ता है।

निकाई और गुड़ाई—खर-पतवारों को नष्ट करने के लिए निकाई और गुड़ाई करना आवश्यक है। जब धान के पौधे कुछ बड़े हो जायँ तब देशी हल से जुताई कर देना बहुत लाभदायक होता है। इससे खर-पतवार नष्ट हो जाते हैं और पैदावार में वृद्धि होती है। बालें लम्बी होती हैं।

कटाई—जातीय के अनुसार धान की कटाई भादों, क्वार, कातिक और अगहन में हँसिया से की जाती है। धान सूखने के बाद मड़ाई करके पुआल अलग कर लेते हैं और फिर मशीन या मूसल से चावल निकाला जाता है।

पैदावार—साधारणतः छिटकवां बोये गये खेत की पैदावार प्रति एकड़ १५-२० मन और रोपे गये धान की पैदावार २५-३० मन होती है।

धान के रोग—धान का गंधी नामक कीड़े से बहुत हानि पहुंचती है। जब दाने में दूध पडने लगता है, उस समय यह कीड़ा उसके दूध को चूसकर खोखला कर देता है। इसका आक्रमण सितम्बर में होता है। इससे बचने का यह उपाय है कि धान की उन्नतिशील जातियाँ बोई जायें। जिनमें यह कीड़ा असर न कर सके। ऐसी जाति का धान बाया जाय, जिसकी बालियों में सितम्बर के महीने में दूध न पड़ता हो। दूसरे यह कि कीड़े को मारने का सभी प्रकार का उपाय किया जाय।

जापानी ढंग से धान की खेती

जापानी ढंग से धान की खेती करने से धान की पैदावार अच्छी होती है। अतः सरकार इस ओर विशेष ध्यान दे रही है। जापानी ढंग से खेती करने के नियम इस प्रकार हैं:—

(१) पेड़ तैयार करना मुख्य काम है। इसके लिए अच्छी और ऐसी भूमि हो, जहाँ सिंचाई के साधन हों। (२) पेड़ लगाने के लिए २५ फुट लम्बी-चौड़ी और खेत के समतले ३-४ इञ्च ऊँची छोटी-छोटी क्यारियाँ बनाई जाती हैं। क्यारी के चारों ओर एक फुट चौड़ी ४ इञ्च गहरी नाली बनायी जाती है। एक एकड़ धान लगाने के लिए २५ फुट लम्बी ४ फीट चौड़ी लगभ २० क्यारियों की आवश्यकता होती है।

(३) क्यारी तैयार होने पर प्रत्येक क्यारी में १ मन के हिसाब से गोबर की सड़ी खाद डालकर मिट्टी मिला दी जाय और फिर क्यारी को

समतल करके उसके ऊपर कम्पोस्ट खाद की १/८ इन्च की तह लगा देनी चाहिये। फिर एक राख की पतली तह लगा देनी चाहिये। इसके बाद अमोनियम सलफेट और आधा सुपर फास्फेट मिलाकर ८ सेर के लगभग उस तह के ऊपर छिड़क देना चाहिये। (४) एक बाल्टी पानी में दो मुट्ठी नमक डालकर धान के बीजों की परीक्षा कर लेनी चाहिये। अच्छे बीज पानी के अन्दर बैठ जायेंगे और खराब बीज ऊपर तैरते रहेंगे। फिर अच्छे बीजों को निकालकर अच्छे पानी से धोकर और सुखाकर बोने के काम में लावें। (५) सुखाये बीजों को क्यारी में समान रूप से बो देना चाहिये। कहीं अधिक और कहीं कम बीज न पड़े। (६) बीज बोकर उन्हें पतली मिट्टी की सतह से ढँक देना चाहिए। (७) क्यारियों में नित्य सबेरे और शाम हजारों से पानी का छिड़काव करते रहना चाहिये। पानी क्यारी से बाहर न निकले। (८) इसके बाद क्यारियों के चारों ओर सिंचाई के लिए बनी नालियों के द्वारा पानी देना चाहिये। क्यारियों में पानी अधिक देर तक न ठहरना चाहिये।

(९) पेड़ जब लगभग एक सप्ताह के हो जायँ तो खुरपी से उनकी निराई-गुड़ाई करके खरपतवार नष्ट कर दिये जायें।

(१०) आवश्यकतानुसार समय-समय पर पानी देते रहना चाहिए। यदि पौधे अच्छी तरह न बढ़ रहे हों तो आधा अमोनिया सल्फेट और आधा सुपर फास्फेट का मिश्रण क्यारी में छिड़ककर पानी डालना चाहिए।

(११) जब पौधे ५-६ इन्च के हो जायँ या उसमें छठवीं पत्ती निकले तो उनकी रोपाई दूसरे खेतों में कर देनी चाहिये।

(१२) रोपाई करने से पहले खेत को खाद आदि डालकर तैयार कर लेना चाहिए।

(१३) जब खेत रोपाई के लिए तैयार हो जाय, तब पेड़ को मिट्टी समेत खुरपी से उठा लें, फिर जड़ों को पानी में धो लेवें।

(१४) पेड़ को खेत में १०-१० इन्च के फासले पर लगाना चाहिये। लगाते समय पहले दो उँगलियों के बीच में अँगूठे ऊपर रखते हुए पकड़ना चाहिए। एक जगह पर २ से ३ तक पौधे लगाये जा सकते हैं। रोपाई के बाद हर सप्ताह बाद जापानी प्रैडोहा से गोड़ाई कर देनी चाहिये। इस प्रकार धान की पैदावार दुगुनी होती है। अतः प्रत्येक किसान को जापानी ढंग से धान की खेती करनी चाहिये। इस सम्बन्ध में घाघ की कहावतें देखियें :—

साठी होवै साठ दिना।
जब दैव बरसैं रात दिना ॥ ८५ ॥

अर्थ—जब पानी रात-दिन बरसता रहे, तब साठी धान केवल साठ दिनों में ही तैयार हो जाता है ॥ ८५ ॥

साठी होई साठे दिन।
जब पानी पावे आठे दिन ॥ ८६ ॥

शब्दार्थ—साठी=एक प्रकार का मोटा धान। साठे=साठवें।
अर्थ—साठी धान को यदि आठवें दिन भी पानी मिलता रहे तो वह साठवें दिन तैयार हो जाता है ॥ ८६ ॥

धान गिरै सुभागे का।
गेहूँ गिरै अभागे का ॥ ८७ ॥

धान भाग्यवान् का गिरता है और गेहूं भाग्यहीन का ॥ ८७ ॥

वेश्या बिटिया नील है, बन सावाँ पुत जान।
वो आई सब घर भरै, दरब लुटावत आन ॥ ८८ ॥

अर्थ—नील वेश्या की कन्या है और कपास तथा सांवा उसके पुत्र हैं। पुत्री हुई तो धन से उसका घर भर देती है और पुत्र आया तो जानो कि वह सारे द्रव्य को लुटा देगा ॥ ८८ ॥

विधि का लिखा न होवे आन।
बिना तुला ना फूटे धान ॥ ८९ ॥

जब तुला के सूर्य आते हैं तभी धान में बालें लगती हैं, ब्रह्मा के इस लेख में दूसरा नहीं होता ॥ ८९ ॥

साठी में साठी करे, अरु बाड़ी में बाड़ी।
ईख में जो धान बोवे, फूँको वाकी दाढ़ी ॥ ९० ॥

जो साठी बोये जाने वाले अर्थात् धान के खेत मे फिर धान ही बोता है या कपास और जो ईख के खेत में धान बोता है तो अच्छा नहीं ॥ ९० ॥

सात सेवाती धान उपाट ॥ ९१ ॥

अर्थ—स्वाती नक्षत्र के सात दिन बाद धान पक जाता है ॥९१॥

वर्षा और वायु के सिद्धान्त और उसकी जानकारी

गर्मी द्वारा समुद्र का पानी तथा अन्य तालाब आदि का पानी भाप बनकर उड़ जाता है। वह भाप वायुमंडल में मिल जाती है और हवा उसको भाप रूप में न होकर पानी के रूप में बदलकर भूमिपर डाल देती है तो उसे हम वर्षा कहते हैं। हमारे देश में जून से जुलाई, अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर तक वर्षा होती है। जाड़े में भी जनवरी, फरवरी में वर्षा, पूर्वी उत्तरी मानसून द्वारा होती है। गर्मी में भी अधिक वर्षा होती है। इसकी मात्रा पश्चिमी जिलों में २५ से ३० इन्च और पहाड़ी भागों में ६० से ६५ इन्च होती है। जाड़ों में केवल १ से ४ इन्च ही वर्षा होती है।

इसी प्रकार वायुमण्डल की भी जानकारी करने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक है। १ ताप, २ धूप, ३ वायु का दबाव, ४ हवा, ५ नमी, ६ वाष्पीकरण, ७ बादल, ८ वर्षा। मौसम का अध्ययन करने के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है। यहाँ पर हम आपको इनका ज्ञान करायेंगे। अतः ध्यान देने की आवश्यकता है।

वायुमण्डल क्या है ? वायु पृथ्वी को चारों ओर से आवृत किये हुए है। यद्यपि इसकी तह १०० मील मोटी मानी गई है। किन्तु हमारा सम्बन्ध प्रायः ४७ मील दूरी तक ही अधिक होता है। जो वायु के द्वारा स्थापित है। और पृथ्वी के साथ हो चक्कर लगाया करता है। वायु की उपस्थिति से ही जीवन सभव है अन्यथा चन्द्रमा के समान ही पृथ्वी भी जीव रहित होगी।

अब कृषि सम्बन्धी वर्षा और वायु के विचार महाकवि घाघ के शब्दों में स्मरण रखिये—

वायु चलेगी उत्तरा, माड़ पियेगें कुत्तरा ॥ ९२ ॥

अर्थ—जब उत्तर दिशा की वायु चलेगी तो कुत्ते भी माड़ पीयेंगे अर्थात् धान की फसल अच्छी होगी ॥ ९२ ॥

वायु चलेगी पुरवा, पियो माँड़ का कुरवा ॥ ९३ ॥

अर्थ—जब पूरब की वायु चलेगी तो जानो कि माड़ का पुरवा खूब पिओगे अर्थात् धान की फसल अच्छी होगी ॥ ९३ ॥

अगहन बरसे हून, पूस बरसे दून।
माघ वरसे सवाई, फागुन वरसे मूर गंवाई ॥ ९४ ॥

अर्थ—हून=पर्याप्त, काफी। दून=दूना। मूर=बीज।

अर्थात्—यदि अगहन में वर्षा हो तो फसल अच्छी होती है और पूस में वर्षा हो तो दूनी और माघ में वर्षा होने से सवाई पैदावार होती है। परन्तु वर्षा यदि फागुन के महीने में होती है तो मूल अर्थात् बीज भी नहीं मिलता ॥ ९४ ॥

अंबाझोर चलै पुरवाई।
तब जानो वर्षा ऋतु आई ॥ ९५ ॥

शब्दार्थ— अम्बाझोर=जोर की, प्रबल। पुरवाई=पुरुवा हवा।

अर्थ—यदि लगातार पूर्वी हवा चले, तो जानो कि वर्षा ऋतु आ गई है ॥९५॥

उलटा बादर जो चढ़े, विधवा खड़ी नहाय।
घाघ कहैं सुन भड्डरी, वह बरसे वह जाय ॥ ९६ ॥

अर्थ—घाघ का कहना है—हे भड्डरी! सुन, जब बादल हवा के विपरीत (उलटा) चढ़े और विधवा स्त्री खड़ी होकर स्नान करे तो जानो कि बादल तो बरसेगा और वह (विधवा) किसी के साथ निकल जायेगी ॥९६॥

उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़े।
बरषा होई भूँइ जल बढ़े ॥ ९७ ॥

अर्थ—जब गिरगिट उलटा होकर ऊपर की ओर चढ़े, तो समझो कि वर्षा होगी और पृथ्वी पर जल बढ़ेगा ॥९७॥

उत्तर मलके करे दखिन करे निशान।
कह दो अहिरा से ऊपर करै बँधान ॥ ९८ ॥

अर्थ—जब बादल उत्तर दिशा की ओर घुमड़कर चले और यदि बिजली चमके तो अहीर से कह दो कि अपनी गायों को ओसारे में बांध दे क्योंकि पानी की जोर से वर्षा होगी ॥९८॥

जो हर होंगे बरसनहार।
काह करे दक्खिनी बयार ॥ ९९ ॥

अर्थ—यदि भगवान् बरसनेवाले होंगे तो दक्षिणी वायु क्या करेगी? अर्थात् कुछ नहीं ॥९९॥ क्योंकि :—

आदि न बरसे आद्रा, हस्त न बरस निदान ।
कहै घाघ सुन भड्डरी, भये किसान पिसान ॥ १०० ॥

अर्थ—यदि वर्षा के आरम्भ में आर्द्रा नक्षत्र न बरसे और हस्त नक्षत्र अन्त में न बर्षे तो घाघ कवि भड्डरी से कहते हैं कि, सुनो ऐसी दशा में किसान की दशा अच्छी नहीं रहती और वह कष्ट से चूर्ण हो जाता है ॥१००॥

ढेले ऊपर चील्ह जो बोलै ।
गली-गली में पानी डोलै ॥ १०१ ॥

अर्थ जब देखो कि कहीं खेत में ढेले के ऊपर बैठा हुई चील्ह बोल रही है तो समझो कि वर्षा होगी और गली-गली में पानी डोलता रहेगा ॥१०१॥

आर्द्रा चौथ मघा पंचक ॥ १०२ ॥

अर्थ—आर्द्रा नामक नक्षत्र ही वर्षा के लिए मुख्य है। प्रथम में आर्द्रा बरस गया तो समझो आर्द्रा, पुष्य, पुनर्वसु और श्लेषा ये चारो नक्षत्र बरसेंगे। इसी प्रकार यदि आदि में मघा बरस जाय, तो समझो कि मघा, पूर्वा, उत्तरा, हस्त और चित्ता ये पाँचों बरसेंगे, इसमें संदेह नहीं ॥१०२॥

आद्रा गैले तीनि गैल, सन साठी और कपास ।
हथिया गैले सब गैल, आगिल पाछिल मास ॥१०३॥

अर्थ—जब आर्द्रा नक्षत्र चला गया और वर्षा न हुई तो समझो कि सन, साठी—(साठी नामक धान) और कपास ये तीनों फसलें चली गईं, नहीं होगी। ऐसे ही जब हथिया (हस्त नक्षत्र) न बरसा और चला गया तो समझो कि आगे-पीछे की बोयी हुई फसल नष्ट हो गई ॥१०३॥ क्योंकि—

दिनको बादर रात को तारे।
चलो कंत जहँ जीवें बारे ॥ १०४ ॥

यदि दिन में बादल होते हों और रात को तारे उदय रहें तो ऐसी हालत देखकर किसान की स्त्री कहती है कि समय अच्छा नहीं होगा अर्थात् अकाल के लक्षण हैं। इसलिए हे कंत (स्वामी) ! यहाँ छोड़कर किसी ऐसी जगह चलो जहाँ ये छोटे-छोटे बच्चे जी सकें अथवा इनके खाने-पीने का प्रबन्ध हो ॥१०४॥

दखिनी कुलखिनी, माघ पूस सुलखिनी ॥ १०५ ॥

कृषि-कार्य के लिए दक्षिणी हवा कुलक्षिणी है, किन्तु वही यदि माघ, पूस में दक्षिणी हवा चले तो उसे सुलक्षिणी जानना चाहिए ॥१०५॥

दिन सात जो चलै भाँड़ा।
सूखे जल सातो खाँड़ा ॥ १०६ ॥

जब दक्षिणो हवा कुछ पश्चिम से मिल कर निरन्तर सात दिन तक बहती रहे तो समझो कि पृथ्वी के सातों खण्ड का पानी सूख जायेगा अर्थात् वर्षा नहीं होगी ॥१०६॥

उत्तर चमकै बीजुरी, पूरब बहती बाउ।
घाघ कहै सुन भड्डरी, बरधा भीतर लाउ ॥ १०७ ॥

जब उत्तर की दिशा में बिजली चमकती हो और पूरब की वायु बहती हो, तो घाघ कहते हैं कि हे भड्डरी ! सुन बैल को घर के अंदर ला, वर्षा अवश्य होगी ॥१०७॥

आवत आदर ना कियो, जात न दीनो हस्त।
ये दोऊ पछितात हैं, पाहुन औ गिरहस्त ॥१०८॥

अर्थ—यदि आर्द्रा नक्षत्र ने आते ही वर्षा न किया और हस्त के

जाते-जावे जल न बरसा दिया तो किसान को वैसे ही पछतावा होता है, जैसे किसी पाहुन के आने पर उसका आदर न किया और जाते-जावे उसके हाथ पर कुछ न घर दिया तो वह पछताता ही रहता है ॥१०८॥

औआ बौआ बहै बतास।
तब होवे बरखा कै आस ॥ १०६ ॥

जब वर्षा ऋतु में औआ-बौआ अर्थात् कभी इधर और कभी उधर, कभी तेज, कभी मन्द, अनिश्चित हवा चलने लगे, तो जानो कि पानी अवश्य बरसेगा ॥१०९॥

खन पुरवैया खन पछियाव।
खन-खन बहै बबूरा बाय।
जो बादर-बादर में जाय।
घाघ कहैं जल-कहाँ समाय ॥ ११० ॥

महाकवि घाघ का कहना है कि—जब क्षण में पुरवा और क्षण में पछुआं हवा चले और क्षण-क्षण में बवंडर उठाकर चले और जब बादल में बादल समावे या जाकर मिल जाते हों तो समझो कि ऐसी अपार वर्षा का जल कहाँ समायेगा, वर्षा अधिक होगी ॥११०॥

करिया बादल जिउ डेरवावै।
धवरे बदरे पानी आवै ॥ १११ ॥

काला बादल केवल हृदय को डराता है और उससे पानी नहीं बरसता। पानी तो धवल बादलों से आता अर्थात् बरसता है ॥१११॥

वायु में वायु समाय।
घाघ कहैं जल कहाँ समाय ॥ ११२ ॥

जब हवा, हवा से टकराती हो, तो घाघ कवि कहते हैं, कि जल कहाँ समायेगा (रहेगा), वर्षा अवश्य होगी ॥११२॥

पुरवा में पछियाँव बहै।
हँसिके नारि पुरुष से कहै॥
ऊ बरसे ई करे भतार।
घाघ कहैं यह सगुन विचार॥ ११३॥

यदि पूर्वी और पश्चिमी वायु एक साथ मिलकर बहती हो और जब कोई स्त्री पर-पुरुष से हँसकर बातें करती हो तो इसका सगुन विचार कर घाघ कवि कहते हैं कि, वह (वायु) तो जल बरसेगा और वह (स्त्री) उस पुरुष से अनुचित सम्बन्ध करेगी ॥११३॥

रोहिन बरसे मृग तपे, कुछ-कुछ अद्रा जाय।
घाघ कहैं घाघिन से, स्वान भात नहिं खाय॥ ११४॥

घाघ कवि अपनी स्त्री से कहते हैं, हे घाघिन (स्त्री)! सुनो, यदि रोहिणी नक्षत्र बरसे और मृगशिरा नक्षत्र (मृगदाह) तपे और आर्द्रा में भी कुछ दिन चला जावे और तब वर्षा हो, तो मुख्यतः क्वार की तथा और भी फसलों की उपज इतनी अच्छी हो कि कुत्ता तक भात न खावें अर्थात् खाते-खाते इतने तृप्त हो जावें कि, फिर उन्हें भात खाने की इच्छा ही न रहे। जब यह दशा कुत्तों की है तो किसानों का तो कहना ही क्या है? क्योंकि वह तो धान की अच्छी फसल पावेगा ही ॥११४॥

लाल पियर जब होय अकास।
तब नहीं बरखा की आस॥ ११५॥

जब आकाश लाल-पीला होने लगे, तब वर्षा की आशा नहीं है ॥११५॥

सब दिन बरसै दखिना बाय।
कभी न बरसै बरखा पाय॥ ११६॥

और सब दिनों में तो दक्षिणी वायु से वर्षा होती भी है, पर वर्षा ऋतु को पाकर वह कभी भी जल बरसाने वाली नहीं होती ॥११६॥

माघ पूस जो दखिना चले।
तो सावन के लच्छन भले ॥ ११७ ॥

जो माघ, पूस में दक्षिणी हवा चले तो जानो कि सावन का लक्षण अच्छा है। अर्थात् श्रावण मास में वर्षा अच्छी होगी ॥११७॥
और जब—

रात दिना घम छाहीं।
घाघ कहैं तब वर्षा नाहीं ॥ ११८ ॥

यदि रात में आकाश स्वच्छ और दिन में घमछाहीं अर्थात् धूप-छाँह होती रहे तो घाघ कवि का कहना है कि अब वर्षा नहीं है॥११८॥

रात निबद्दर दिन को छाया।
कहैं घाघ अब बरखा गया ॥ ११९ ॥

जब रात्रि में बादल न हों और दिन में बदली की छाया हो, तो घाघ कहते हैं कि, अब वर्षा चली गई ॥११९॥

पहला पवन पुरुब से आवे।
बरसे मेघ अन्न झरि लावै ॥ १२० ॥

वर्षा ऋतु में यदि पहली हवा पूरब की अर्थात् पुरवा चले तो जानो कि वर्षा अच्छी हो और अन्न की वर्षा-सी होगी ॥१२०॥

धनुष पड़े बगाली।
मेह साँझ या काली ॥ १२१ ॥

जब पूर्व दिशा बंगाल की ओर आकाश धनुष निकले तो जानो कि साँझ-सबेरे में वर्षा होनी ही चाहती है ॥ १२१ ॥

पूरब धनुहीं पच्छिम भान।
घाघ कहै बरखा नियरान ॥ १२२ ॥

जब वर्षा ऋतु में सूर्य पूर्व से पश्चिम दिशा को चले गये हों अर्थात् संध्या का समय हो रहा हो, तब यदि पूर्व की ओर आकाश-धनुष निकले तो समझना चाहिये कि वर्षा निकट है ॥ १२२ ॥

सावन सुकला सप्तमी, गगन स्वच्छ जो होय।
कहै घाघ सुन भड्डरी, पुहुमी खेती होय ॥ १२३ ॥

यदि श्रावण की शुक्ला सप्तमी के दिन आकाश स्वच्छ हो तो जानो कि खेती की दशा अच्छी नहीं है ॥ १२३ ॥

लगा अगस्त फूले वनकास।
अब छोड़ो बरखा की आस ॥ १२४ ॥

जब अगस्त नामक तारा उदय हो गया और वन में कास फूल गई, तब वर्षा की आशा छोड़ दो ॥ १२४ ॥

साँझै धनुष बिहानै पानी।
कहै घाघ सुन पण्डितज्ञानी ॥ १२५ ॥

कवि का कहना है कि हे ज्ञानी पण्डितों! सुनो, यदि सन्ध्या, समय इन्द्रधनुष दिखाई पड़े तो समझो कि दूसरें दिन सबेरे ही, पानी बरसेगा ॥ १२५ ॥

दिन में गरमी रात को ओस।
कहै घाघ बरसा सौ कोस ॥ १२६ ॥

यदि दिन में गर्मी पड़ती हो और रात में ओस पड़े तो घाघ कहते हैं कि वर्षा सैकड़ों कोस दूर है ॥ १२६ ॥

दिन को बद्दर रात निबद्दर।
बह पुरवैया झब्बर झब्बर ॥

घाघ कहैं कुछ होनी होई ।
कुआँ के पानी से धोबी धोई ॥ १२७ ॥

(बरसात के दिनों में) जब दिन में बादल हों और रात में बादल न हों और पुरवा हवा रुक-रुक कर चले । झब्बर-झब्बर चले अर्थात् जब चले तब झोंहाकर चले, तो घाघ का कहना है कि, यह कुछ होनहार है, अच्छा नहीं होगा और यह अवर्षण का योग है जिसमें धोबी कुएँ के पानी से वस्त्र धोवेंगे ॥ १२७ ॥

दूर गुड़ासा दूरै पानी ।
नियर गुड़ासा नियरै पानी ॥ १२८ ॥

शब्दार्थ—गुड़ासा=इस नाम का एक कीड़ा ।

अर्थ—जब गुड़ासा नामक कीड़ा दूर या ऊँचाई से या जोर से बोले तो समझो कि पानी दूर है । और यदि यह कीड़ा निकट से बोले या धीरे से बोले तब समझो कि बरसात नजदीक है ॥ १२८ ॥

धनि वह राजा धनि वह देश, जहँवाँ बरसे अगहन सेस ।
पूस में दूना माघ सवाई, फागुन बरसै घरों से जाई ॥१२९॥

अर्थ—वह राजा धन्य है और वह देश धन्य है जहाँ अगहन का शेष भाग बरसे और यदि पौष मास में वर्षा हो तो फिर कहना ही क्या है ? इस वर्षा से दूना अनाज पैदा होता है और माघ में वर्षा हो, तो सवाया अन्न पैदा हो, परन्तु वही वर्षा यदि फाल्गुन के महीने में होती है तो समझो कि घर से भी चला गया और कुछ नहीं होगा ॥१२९॥

पानी बरसे आधे पूस ।
आधा गेहूँ आधा भूस ॥ १३० ॥

यदि आधे पौष में वर्षा होवे तो आधा गेहूँ और आधा भूसा होता

है। अर्थात् रबी की फसल के लिए यह वर्षा बहुत लाभदायक होती है ॥ १३० ॥

पुष्य पुनर्वसु भरे न गाढ़ ।
फिर बरसेगा लौटि असाढ़ ॥

यदि पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र में ताल और पोखर नहीं भर गये तो समझो कि फिर लौट कर आषाढ़ मास में ही वर्षा होगी। फिर ऐसा भी कहा है—

पुष्य पुनर्वसु भरे न ताल ।
तो फिर भरिहैं अगली साल ॥ १३१ ॥

यदि पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र ने अपनी वर्षा से ताल नहीं भर दिया तो वह फिर अगले अर्थात् आनेवाले दूसरे साल या वर्ष में ही भरेगा ॥ १३१ ॥

तपै मिरगसिर जोय, बरखा पूरन होय ॥ १३२ ॥

यदि मृगसिर (मृगिदाह) नक्षत्र तपे तो जानो कि वर्षा पूर्ण रूप से होगी ॥ १३२ ॥

जेठ मास जो तपै निराशा ।
तो जानो वर्षा की आशा ॥ १३३ ॥

यदि ज्येष्ठ का महीना इतना तपे कि मनुष्य उसकी गर्मी की पीड़ा से जीवन से निराश हो जावें तो जानो कि वर्षा की आशा है और वर्षा अच्छी होगी ॥ १३३ ॥

चमके पच्छिम उत्तर ओर ।
तब जानो पानी है जोर ॥ १३४ ॥

जब पश्चिम और उत्तर की ओर चमके तो जानो कि जोर से बरसेगा ॥ १३४ ॥

जब बहै हड़हवा कोन।
तब बनजारा लादै लोन॥ १३५॥

जब पश्चिम-दक्षिण कोन की वायु चले, तब समझो कि वर्षा नहीं है और बनजारा व्यापारी लोन (नमक) लादेगा। क्योंकि पानी में नमक गल जाता है॥ १३५॥

जो बरखा चित्रा में होय।
सगरी खेती जावै खोय॥ १३६॥

जो वर्षा चित्रा नक्षत्र में होगी, तो उससे सारी खेती अर्थात् फसल नष्ट हो जाती है॥ १३६॥

इसलिए चित्रा नक्षत्र की वर्षा अच्छी नहीं कही जाती।

जो बरसे पुनर्वसु स्वाती।
चरखा चले न बोले ताँती॥ १३७॥

यदि पुनर्वसु और स्वाती नक्षत्र में वर्षा हो तो न तो चरखा ही चल सकेगा और न ताँत ही बज सकेगी, क्योंकि रूई की फसल नष्ट हो जाती है॥ १३७॥

जो कहुँ मघा बरसै जल।
सब नाजों में होगा फल॥ १३८॥

यदि कहीं मघा नक्षत्र बरस गया तो सब अनाजों में फल होगा अर्थात् फसल पुष्ट होगी॥ १३८॥

जो बरसेगा उत्तरा, नाज न खावै कुत्तरा॥ १३९॥

यदि उत्तरा नक्षत्र में वर्षा होगी तो कुत्ते भी अन्न न खायेंगे अर्थात् पैदावार अच्छी होगी॥ १३९॥

बोली गोह फुली बनकास।
अब नाहीं बरखा की आस॥ १४०॥

जब गोह बोलने लगी और वन में काँस भी फूल गई तो समझो कि अब वर्षा होने की आशा नहीं ॥ १४० ॥

दिन का बादर सूम का आदर ॥ १४१ ॥

यदि दिन में बादल हो और रात में बादल न हो, तो ऐसे बादल की उपमा सूम के उस आदर के समान है जो सर्वथा ही व्यर्थ होता है। इस प्रकार दिन का बादल और सूम का आदर एक ही समान है कि जिससे किसी की भलाई नहीं होती। (तत्तुल्य उपमा अलंकार) ॥ १४१ ॥

चैत के पछिवाँ भादों जला।
भादों पछिवाँ माघ के पला ॥ १४२ ॥

यदि चैत्र के महीने में पछुआँ (पश्चिमी हवा) चले तो जानो कि भादों (भाद्रपद) के महीने में वर्षा अच्छी होगी और यदि भादों के महीने में पश्चिमी वायु बहे तो जानो कि माघ में पाला अवश्य गिरेगा ॥१४२॥

ढोकी बोलै जाय अकास।
अब नाहीं बरखा के आस ॥ १४३ ॥

ढोकी नाम का पक्षी बोलकर जब आकाश को उड़ जावे तो जानो कि वर्षा अच्छी नहीं होगी ॥ १४३ ॥

छीपा छेड़ी ऊँट कोंहार।
पीलवान औ गाड़ीवान ॥
आक जवासा वेश्या बानी।
दसो दुखी जब बरसे पानी ॥ १४४ ॥

जब पानी बरसता है, तब रंगरेज, छेड़ी (बकरी), ऊँट, कुम्हार, पीलवान, गाड़ीवान, मदार, वेश्या और बनियाँ ये दश दुखी होते हैं। ॥ १४४ ॥

मेदिनी, मेघा, भैंस, किसान ।
मोर, पपीहा, घोड़ा, धान ॥
बाढ्यो मच्छ लता लपटानी ।
दसौ सुखी जब बरसे पानी ॥ १४५ ॥

जब वर्षा होने लगती है तब पृथ्वी, मेढक, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा, धान, मछली और लताएँ दसों सुखी होते हैं ॥ १४५॥

एक पानी जो बरसै स्वाती ।
कुरमिन पहिरै सोने कै पाती ॥ १४६ ॥

यदि स्वाती नक्षत्र में एक बार भी वर्षा हो जावे तो निस्सन्देह कुर्मी किसान की स्त्री (कुर्मिन) सोने की पत्तियाँ अर्थात् गहने पहनेगी॥१४६॥

एक बूँद जो चैत में परै ।
सहस बूँद सावन में हरै ॥ १४७ ॥

यदि चैत्र मास में एक बूँद भी जल बरस जाय तो हजार बूँद की हानि सावन में हो, अर्थात् सूखा पड़ जायेगा ॥ १४७ ॥

चढ़त जो बरसै चित्तरा, उतरत बरसै हस्त ।
केतनों राजा डाँड़ लें, हारे ना गिरहस्त ॥ १४८ ॥

यदि चित्रा नक्षत्र चढ़ते और उत्तरा नक्षत्र उतरते बरस जाय तो किसान का कहना है कि राजा कितना भी दण्ड लें तो भी गृहस्त न हारेगा ॥ १४८ ॥

चित्रा बरसे तीन जाय, मोथी माष उखार ॥ १४९ ॥

चित्रा की वर्षा अच्छी नहीं कही जाती, क्योंकि इस नक्षत्र की वर्षा से मोथी, उड़द और ऊख की फसल को बहुत क्षति पहुंचती है, और वह नहीं होती ॥१४९॥

अटका मघा पटकि गा ऊसर ।
दूध भात में परिगा मूसर ॥ १५० ॥

(मघा सब नक्षेत्रों का राजा है, किसान के लिए मघा की वर्षा बड़े काम की होती है) यदि कहीं मघा नक्षत्र तप गया और वर्षा न हुई तो जानो कि ऊसर भूमि सूख गयी । क्योंकि ऊसर भूमि में केवल एक ही फसल धान की होती है और बिना पानी के तो उसकी घास भी सूख जाती है; फिर धान कहाँ से होगा ? इसलिए घाघ कवि कहते हैं कि, मघा के बरसने से जिस ऊसर भूमि में घास और धान यही दो होते हैं उसमें इसके (मघा) न बरसने से अवश्य ही दूध-भात में मूसल पड़ गया और इस प्रकार घास के अभाव में न तो दूध ही होगा और न धान के अभाव में भात ही, इसीलिए मूसल शब्द कवि ने कहा है ॥ १५० ॥

मघा के बरसे, माता के परसे ।
भूखा न माँगे, फिर कुछ हरसे ॥ १५१ ॥

अर्थ—वर्षा के सब नक्षत्रों में मघा नक्षत्र की वर्षा कृषकों के लिए ऐसी ही लाभदायक एवं तृप्तिकर है जैसे माता द्वारा परसे स्पर्श किये या परसे (परोसे) गये भोजन से पुत्रको तृप्ति हो जाती है। फिर उस हर्ष में भूखा कुछ नहीं मांगता, हर्ष के अर्थ में कृषक और भूखे अर्थ में पुत्र दोनों ही तृप्त हो जाते हैं ॥ १५१ ॥

मघा भूमि अघा ॥ १५२ ॥

मघा की वर्षा से पृथ्वी अघा जाती है अर्थात् तृप्त हो जाती है ॥१५२॥

हथिया बरसे तीन होय, साठी सक्कर मास ।
हथिया बरसे तीन जाय, तिल कोदो और कपास ॥१५३॥

हस्त नक्षत्र की वर्षा से धान, ईख और उड़द न तीनों की पैदावार

अच्छी होती है और इसी हथिया (हस्त नक्षत्र) को वर्षा से तिल, कोदो और कपास तीनों का नाश होता है ॥ १५३ ॥

सावन सूखा स्यारी।
भादों सूखा उन्हारी ॥ १५४ ॥

श्रावण मास का सूखा (अवर्षण) और स्यारी अर्थात् खरीफ की फसल को और भादों का सूखा रबी की फसल को नष्ट करता है ॥१५४॥

सावन मास बहै पुरवाई।
बरधा बेचि बेसाहो गाई ॥ १५५ ॥

जब श्रावण मास में पूर्वी वायु चले तो कृषक को चाहिये कि वह अपने बैलों को बेचकर गायें खरीद ले, क्योंकि वर्षा का योग नहीं है और गायों से वह अपना निर्वाह कर लेगा ॥ १५५ ॥

सिंह, गरजै हथिया लरजै ॥ १५६ ॥

यदि सिंह नक्षत्र में आकाश में बादल गरजें तो हस्त नक्षत्र में बरसनेवाले बादलों को लज्जा आती है। क्योंकि वर्षा का योग मन्द होता है ॥ १५६ ॥

हथिया बरसै चित्रा मँडराय।
घर बैठे किसान रिरिआय ॥ १५७ ॥

हस्त नक्षत्र की वर्षा अच्छी कहलाती है और चित्रा की नहीं। यदि हस्त नक्षत्र में वर्षा हो और चित्रा में केवल बादल ही मँडराते रहें और वर्षा न हो तो किसान घर बैठे चिल्लाते अथवा हर्ष मनाते रहें ॥ १५७ ॥

हथिया पूँछ डोलावै, घर बैठे गेहूँ आवै ॥ १५८ ॥

हथिया (हस्त नक्षत्र की वर्षा इतनी अच्छी होती है कि यदि यह अपनी थोड़ी ही पूँछ डुला दे अथवा बरस दे तो जानों कि बिना परिश्रम ही घर में गेहूं आ गया ॥ १५८ ॥

सावन क पछुवाँ दिन दुइ चार।
चुल्ही क पाछा उपजै सार॥ १५९॥

यदि श्रावण में दो-चार दिन भी पछिवा हवा चले तो चूल्हे के पीछे तक खेती होती है अर्थात् वर्षा अच्छी होने से ऊँची-नीची समस्त सूखे की भूमि को भी किसान अपनी खेती के लिए उपयोग करता है और उसमें अच्छी उपज होती है॥ १५९॥

पूरब कै बादर पच्छिम जाय।
पतरी पकावै मोटी खाय॥
पछुवाँ बादर पुरुब को जाय।
मोटी पकावै पतरी खाय॥ १६०॥

यदि पूरब से उठा बादल पश्चिम दिशा को जावे तो समझो कि वर्षा होने वाली है, इसलिए पतली रोटियाँ पकाते हुए भी मोटी रोटी पकाकर खाओ। यदि बादल पश्चिम से पूरब की ओर जाता हो तो समझो कि अब वर्षा नहीं होगी, इसलिए मोटी रोटियों की जगह पतली रोटियाँ पकाकर खाओ॥ १६०॥

पछिवाँ क बादर लबार क आदर॥ १६१॥

पश्चिम का उठा हुआ बादल नहीं बरसता। इसी प्रकार लबार (झूठे) की कही हुई बात सच नहीं होती, चाहे वह कितना ही आदर क्यों न करे॥ १६१॥

पहिले पानी नदी उफनाय।
तो जानियो कि वर्षा नाय॥ १६२॥

जब वर्षा के पहले ही पानी से नदी उमड़ गई तो जानो कि वर्षा नहीं है॥ १६२॥

पूनो परिवा गाजे । दिना बहत्तर बाजे ॥ १६३ ॥

जब असाढ़ की पूर्णिमा और प्रतिपदा पड़वा के दिन बादलों में गड़गड़ाहट के साथ बिजली चमके तो समझो कि बहत्तर दिन वर्षा होगी ॥ १६३ ॥

बयार चले इसाना ऊँची, खेती करो किसाना ॥१६४॥

घाघ का कहना है कि वायु पूरब और उत्तर कोन की चल रही है, इसलिए हे किसान ! ऊँचे स्थान में खेती करना क्योंकि वर्षा का जोर मालूम हो रहा है ॥ १६४ ॥

वायु चलेगी दखिना ।
माँड़ कहाँ से चखिना ॥ १६५ ॥

जब दक्षिणी हवा चलेगी तब माँड़ कहाँ से चखोगे ? कवि के कहने का अभिप्राय यह कि जब दक्षिणी हवा चलेगी तब पानी नहीं बरसेगा और जब पानी नहीं बरसेगा तब धान कहाँ से होगा और जब धान नहीं होगा तब माँड़ (भात का सार) कहाँ से मिलेगा ॥ १६५ ॥

माघ पूस बहै पुरवाई ।
तब सरसों को माहू खाई ॥ १६६ ॥

जब माघ पूस में पुरवा हवा चलती है तब सरसों को माहू (सरसों का एक रोग-कीड़ा) खाता है ॥ १६६ ॥

माघ में बादर लाली धरै ।
तब सच जानों पथरा परै ॥ १६७ ॥

जब माघ में लाल बादल हों, तो यह सच जानो कि पत्थर पड़ेगा ॥ १६७ ॥

रात को करे दौड़ धूप, दिन करे छाया ।
कहैं घाघ अब वर्षा गया ॥ १६८ ॥

यदि रात्रि में बादल दौड़-धूप करें और दिन में स्थिर होकर छाया किये रहें तो घाघ कवि का कहना है कि अब वर्षा चली गयी और पानी नहीं बरसेगा ॥ १६८ ॥

खेती में जल का प्रयोग और सिंचाई

कृषि कार्य में फसलों को पानी देने की कई रीतियाँ हैं और वह कई बातों पर निर्भर हैं।

(१) जल की मात्रा; (२) खेत का धरातल, (३) फसल की किस्म और बोने का तरीका, (४) भूमि तथा खाद आदि, (५) ऋतु, (६) अन्य बातें।

इन बातों का ध्यान रखते हुए खेतों में पानी देने की कई रीतियाँ हैं। (१) तोड़ से (२) सम्पूर्ण खेत में एक साथ पानी काटना; (३) क्यारियों में पानी देना, (४) कूड या नाली में पानी देना, (५) बाग में पानी लगाना; (६) भूमि के नीचे पानी देना, (७) छिटकाव रीति से पानी देना। इन सबके अपने-अपने तरीके अलग हैं जो सभी जानते हैं।

इसी प्रकार (१) दोना बेड़ी द्वारा, (२) चरसा, (३) बलदेव बाल्टी, (४) इजिप्शियनस्क्रू, (५) चेन पम्प, (६) ढेकुली, रहट, (७) रहट, (८) नलकूप इत्यादि तरीकों से सिंचाई की जाती है।

जिस प्रकार पानी के बिना कोई प्राणी जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार पेड़-पौधे और खेती-बारी भी बिना पानी के जीवित नहीं रह सकते। पौधों के लिए तो पानी और भी जरूरी है। क्योंकि वे पृथ्वी से अपनी खुराक घोल के रूप में लेते हैं और वह घोल उन्हें पानी से ही प्राप्त होता है। फसल और पौधों के लिए पानी की आवश्यकता उनका एक विशेष महत्व है। यह पानी पौधों को उन्हें भूमि पर वर्षा से प्राप्त होता है। पानी के अभाव में भूमि से नमी समाप्त हो जाती है, जिससे बाहर से पानी प्राप्त कर पौधों को हरा-भरा रखा

जाता है। तब बाहर से बनावनटी साधनों से पौधों की सिंचाई की जाती है। इसी बनावटी विधि का नाम सिंचाई है। इसका महत्त्व सभी को ज्ञात है और आवश्यकता पड़ने पर सब कठिनाइयों के रहते हुए भी कृषक को इसे करना पड़ता है। किसी फसल में कम और किसी में अधिक सिंचाई करनी पड़ती है। यह फसल की क़िस्म और मौसम के ऊपर निर्भर है। जैसे धान के लिए अधिक पानी चाहिए। परन्तु उसकी कुछ जातियाँ ऐसी हैं जिनके लिए कम पानी देने से भी काम चल जाता है। गन्ने तथा सब्जियों में अधिक पानी देना पड़ता है। गेहूँ में भी अधिक पानी की आवश्यकता होती है। परन्तु चने की फसल में कम पानी की आवश्यकता पड़ती है। कुछ फसल लगातार सिंचाई चाहती हैं और कुछ फसलें एक ही सिंचाई चाहती हैं और कुछ फसलें सिंचाई चाहती ही नहीं और वे केवल वर्षा के ही जल से हो जाती हैं।

जल के अभाव की पूर्ति वर्षा से हो जाती है। फिर भी यदि और आवश्यकता पड़ती है तो सिंचाई के अन्य साधनों से पानी दे दिया जाता है। सिंचाई की कमी कभी-कभी बहावट आदि से पूरी हो जाती है। वर्षा काफी मात्रा में पानी देता है। परन्तु उसका पानी भाप बनकर विभिन्न रूपों में उड़ जाता है तथा कुछ सूख जाता है और शेष बह जाता है। यही कारण है कि फसलों में पानी देने की आवश्यकता पड़ती है। अतः किसान को अपने पास सिंचाई करने का अपना निजी साधन रखना चाहिये जिससे कि समय और आवश्यकता पड़ने पर वह अपने खेतों की सिंचाई कर सके।

विभिन्न फसलों में पानी की आवश्यकता

१. धान की फसल में प्रति एकड़ ३७ इंच, ज्वार में १०, मक्का में १५, गेहूं में ८; जौ में ६, मटर में ६, चना में ३, गन्ना में ५० और आलू में २०।

सिंचाई कैसी हो ? इसका उत्तर यह है कि खेतों में फसलों को जैसी आवश्यकता हो। अधिक पानी देने से भी फसलों में हानि पहुँचती है और कम पानी देने से भी। छोटी-छोटी फसलों और पौधों में थोड़ा ही पानी देना चाहिये जिससे कि वे गल न जायँ। फूल और फल आते समय फसल में अवश्य पानी दिया जाय। यदि उस समय पानी न दिया जाय तो हानि की सभावना रहती है। यदि वर्षा का अधिक पानी खेत में हो तो किसान उसे निकलवा देवें। क्योंकि अधिक पानी फसल को नुकसान पहुँचाता है।

फसलों एवं कृषि कार्य के लिए पानी कई तरह से प्राप्त किया जाता है। (१) आकाश से प्राप्त पानी—जैसे वर्षा तथा ओस द्वारा (२) पृथ्वी की सतह का पानी—जैसे नदी, नहर, तालाब आदि, (३) पृथ्वी धरातल से—जैसे कुँआँ, ट्यूबवेल आदि।

इसमें (१) अधिकतर पानी हमको वर्षा से प्राप्त होता है और यह कुछ अंशों में कृषि के कार्य में आता है; किन्तु अधिक जल नष्ट हो जाता है। परन्तु किसान को बिना प्रयत्न और व्यय के अधिक जल वर्षा से ही प्राप्त होता है।

अत: उनको इससे पूर्णत: लाभ उठाना चाहिये। पानी का कुछ भाग ओस द्वारा भी मिलता है। ओस से पौधों को काफी लाभ होता है। इससे पौधे हरे-भरे रहते हैं और खेतों में नमी बनी रहती है। अत: पौधे अधिक बढ़ते हैं। (२) पृथ्वी की सतह का जल। यह हमको नदी, नहर और तालाबों से मिलता है, जिससे हम अपने खेतों की सिंचाई कर लेते हैं। हमारे यहाँ हजारों नहरें नदियों से निकाली गई हैं। वर्षा के पानी को तालाबों में एकत्र करके फिर आवश्यकता-नुसार सिंचाई करते हैं। (३) धरातल के नीचे से—इस विधि से हम कुँए, ट्यूबवेल और आर्टी जनवेल तैयार करते हैं। इसका विस्तार दिन पर दिन बढ़ रहा है।

अब प्रश्न है कि खेत में कितना पानी देवें ? इसका उत्तर यह है कि जितना पानी मिट्टी के कणों को आवश्यक है, जिससे मिट्टी के छिद्र बन्द हो जायें, उतना ही पानी देना चाहिये। अतः थोड़ा-थोड़ा पानी कई बार देना चाहिये और पानी देने के बाद जैसे ही गुड़ाई के योग्य हो जाय तो खेत की गुड़ाई कर देनी चाहिये।

इसके अतिरिक्त भूमि की किस्म देखकर पानी देवें। कुछ भूमि अधिक पानी चाहती है, कुछ कम। अतः पानी की मात्रा भूमि के किस्म पर निर्भर है।

(२) इसके लिए ऋतु का अध्ययन भी आवश्यक है। यदि ऋतु गर्म है तो अधिक पानी देना चाहिए। यदि ठण्डी या नम है तो कम पानी देना चाहिये।

(३) फसल का अध्ययन करना चाहिये। कौन-सी फसल बोई है-यह भी देख लें। क्योंकि कुछ फसलें जैसे—गेहूँ, जौ, गन्ना, धान आदि अधिक पानी चाहता है और कपास आदि भी अधिक पानी चाहती है। अतः इस बात का ध्यान रखें।

(४) फसल की अवस्था क्या है—यह भी देख लेवें। उसमें अभी बीज बोया गया है या कल्लें फूट रहे हैं, अथवा बड़े-बड़े पौधे हैं या उसमें फूल आ रहे हैं। या फसल पक रही हैं—जैसी अवस्था हो उसके अनुसार पानी देवें।

खेतों में पानी देने की रीतियाँ

इसकी भी कई रीतियाँ हैं। १. जल की मात्रा, २. खेत की धरातल, ३. फसल की किस्म बोने का तरीका, ४. भूमि तथा खाद आदि, ५. ऋतु और ६. अन्य बातें।

इन बातों का ध्यान रखते हुए खेत में पानी देने के निम्नलिखित तरीके अपनाये जायें।

(१) तोड़—जब फसल सारे खेत में खड़ी हो तो पूरे खेत में समान रूप से पानी देने के लिए खेत में पानी को काट दिया जाता है। इस

विधि से पानी की अधिक आवश्यकता होती है और खेत भी समतल होना चाहिये।

इसके भी दो तरीके हैं। १. सारे खेत में एक साथ पानी काट देना। २. क्यारियों में पानी देना—सारे खेत में जब देना हो तब नाली को खेत के ऊँचे स्थान पर काटकर पानी छोड़ देवें और भर जाने पर बन्द कर देवें। दूसरा जब क्यारियों में देना हो तो समस्त खेत को क्यारियों में बाँट देवें और अलग-अलग क्यारियों में पानी काट देवें। इस विधि से पानी कम खर्च होता है।

(२) कूंड़ या नाली में पानी देना—जब फसल कूंड़ या नाली के तरीके पर बोई जाती है तो पानी नालियों में दिया जाता है। पानी अलग-अलग नाली में काटा जाता है। नाली में पानी देने के लिए हल्की ढाल बना देनी चाहिये। इस प्रकार नाली द्वारा पौधों को नमी प्राप्त होती रहती है।

(३) बाग में पानी देना—पेड़ों को पानी देने के लिए उनके चारों ओर थाले बना दिये जाते हैं और थाले के चारों ओर नाली होती है। इस प्रकार सभी थाले एक कतार में नाली से जुड़े रहते हैं और ऊपर से नाली में पानी काट दिया जाता है। इससे अन्त में पेड़ को सबसे पहले पानी दिया जाता है। जब पानी पेड़ के चारों ओर नाली में भर जाता है तो दूसरे पेड़ के लिए काट दिया जाता है। इसी प्रकार सब पेड़ों को सींचते हैं।

(४) छिटकवा विधि से पानी देना—इस विधि से गमलों या कम संख्या में बाग के कीमती पेड़ों में छिटकवा द्वारा पानी दिया जाता है। इसके लिए हजारे का प्रयोग किया जाता है। यह विधि अच्छी तो है पर मूल्यवान् है।

काले फूल न पाया पानी।
धान मरा अधबीच जवानी ॥ १६६ ॥

सिंचाई के सम्बन्ध में घाघ कवि का कहना है :—

अर्थ—यदि धान में फूल लगते ही उसने पानी नहीं पाया और काला हो गया तो उसे फौरन पानी देवे; अन्यथा वह अपनी जवानी के आधे भाग में पहुँचते ही मर जायेगा ॥१६९॥

चेना जीका लेना, सोलह पानी देना।
बीस बीस के बच्छा हारे हारे बलम नगीना ॥
हाथ में रोटी बगल में पैना।
एक बार बहे पुरवाई, लेना है न देना ॥१७०॥

शब्दार्थ—चेना = एक प्रकार के अन्न का नाम। बच्छा = बछड़ा या बैल। बलम नगीना = नौजवान पति। पैना = हल के साथ बैलों को हाँकने वाला बाँस का डण्डा। पुरवाई = पूर्वी वायु।

अर्थ—कवि का कहना है—चेना क्या है, जी का (प्राण का) लेना अर्थात् ले लेने वाला है, क्योंकि इसमें सोलह पानी देना है या इसे सोलह बार पानी से भरना है और इसमें मिलना-जुलना कुछ नहीं होता। चेना बोने वाले किसान की स्त्री कहती है—यह चेना नहीं प्राण का लेना है। सोलह पानी दिये जाते हैं और उसे पानी के देने से मेरे बीस-बीस मुट्ठी के बछड़ा (नवीन बैल) और अँगूठी के नगीने के समान खूब सूरत मेरा नौजवान पति हार गया। इस चेना के पीछे तो मेरा पति एक हाथ में रोटी लिए, उसे दूसरे हाथ से तोड़कर खाते हुए और बगल में बाँस का डण्डा दबाये बैलों के पीछे चलता ही रहता है, उस पर भी यह भय लगा ही रहता है कि यदि कहीं पुरवैया हवा ने एकबार भी कृपा की तो न कुछ लेना है न देना अर्थात् लाभ कुछ नहीं ॥१७०॥

अगहन से सरवा भर, फिर करवा भर ॥१७१॥

शब्दार्थ—सरवाभर=तालाब का एक चुल्लू भर या कटोरा भर। करवाभर=एक घड़ा भर।

अर्थ—अगहन में तालाब का एक कटोरा पानी काफी होता है अथवा कडौते या बाँस की बेड़ीभर और काठ के हथवाहों द्वारा जो खेत सींचे जाते हैं—ऐसी क्रिया द्वारा फसलों को सींचो। फिर चाहे घड़े भरकर ही सींचो तो फसल तैयार हो जायेगी। इसका दूसरा अर्थ यह है कि जब तालाब का पानी सूख जावे तब कुँओं के द्वारा कड़ों और मोट और चरस के द्वारा सिचाई करें ॥१७१॥

जोताई, कोड़ाई।

इस सम्बन्ध में घाघ की कुछ कहावतें—

अगहन में ना दी थी कोर।
तेरे बैल क्या ले गये चोर ॥१७२॥

शब्दार्थ—कोर=कोड़ाई, गोड़ाई।

घाघ का कहना है—तूने अगहन में कोड़ाई क्यों नहीं की? क्या तेरे बैल चोर चुरा ले गये थे? ॥१७२॥

छोटी नसी धरती हँसी।
हर लगा पताल, तो टूट गया अकाल ॥१७३॥

शब्दार्थ—नसी का हल फल। काल—अकाल, दरिद्रता।

अर्थ—हल के छोटे फल या फाल (लोहे की फाल) देखकर भूमि हँसती है कि यह मुझसे क्या पैदा करेगा? प्रत्युत हल जब धरती की गहराई में लग जावे तो जानो अकाल एवं दरिद्रता चली गयी, क्योंकि पैदावार अच्छी होती है ॥१७३॥

जेतना गहिरा जोतौ खेत।
बीज परे फल अच्छा देत ॥१७४॥

खेत को जितना ही गहरा जोतोगे; बीज पड़ने पर वह उतना ही अच्छा फल देगा ॥१७४॥

थोड़ा जोत बहुत हेंगावै, ऊँच न बाँधै आड़ ।
ऊँचे पर खेती करै, पैदा होवै भाड़ ॥१७५॥

जो किसान थोड़ा तो जोतता है, हेंगाता बहुत है और खेतों के किनारे ऊँचा मेंड़ बाँधता और जो ऊँचाई पर खेती करता है उसके खेत में केवल भाड़ (एक काँटेदार वृक्ष) के सिवा और क्या होगा ? ॥१७५॥

नौ नसी न एक कसी ॥१७६॥

शब्दार्थ—नसी=नशतोड़ जुताई, भूमि की गहरी जुताई। कसी =फावड़े या कुदाल से भूमि खनने की क्रिया।

अर्थ—नौ बार की जुताई न एक बार की गोड़ाई अर्थात् नौ बार जुताई एक बार की गोड़ाई के बराबर है ॥१७६॥

मेंड़ बाँध दस जोतन, देय ।
दस मन बिगहा मोसे लेय ॥१७७॥

यदि खेत का मेंड़ बाँधकर धरती को अच्छी तरह जोतने दो तो (घाघ कवि कहते हैं कि) दस मन का बीघा पैदावार मुझसे ले लो ॥१७७॥

माघ में टारे, जेठ में जारे भादों सारै ।
तेकर मेहरी डेहरी पारै ॥१७८॥

यदि माघ में खेतों की जुताई करके जेठ में उसको जलावे और भादों में मिट्टी सड़ावे। जो ऐसा कर सकेगा, उसकी स्त्री अन्न रखने की डेहरी (मिट्टी का कोठिला या अन्न रखने का पात्र) पारे या डालेगी और उसमें अनाज भरेगी ॥१७८॥

खेती की प्रशंसा

उत्तम खेती मध्यम बान।
निरधिन सेवा भीख निदान ॥१७९॥

शब्दार्थ—बान=वाणिज्य, वनिज, व्यापार। निरधिन=निषिद्ध, निदान=अन्तिम, निन्दनीय।

खेती का कार्य उत्तम, वाणिज्य मध्यम, नौकरी निषिद्ध और भिक्षा माँगना सर्वथा निन्दनीय है ॥१७९॥

उत्तम खेती जो हर गहा।
मध्यम खेती जो सँग रहा ॥१८०॥

जो स्वयम् अपने हाथ से हल पकड़कर खेती करता है। उसकी खेती उत्तम होती है और जो हलवाहे के साथ रहता है उसकी मध्यम अर्थात् दूसरे दर्जे की होती है ॥१८०॥

उड़द मोठ की खेती करिहौ।
कुण्डा तोड़ ऊसर मेँ धरिहौ ॥१८१॥

यदि उड़द और मोठ की खेती करो तो मिट्टी का कुण्डा तोड़कर ऊसर में रख आओगे अर्थात् बड़ा लाभ होगा ॥१८१॥

खेती वह जो खड़े रखावै।
सूनी खेती हरिना खावै ॥१८२॥

अर्थ—खेती वही है जिसे खड़े होकर रखा लेवे और नहीं तो सूनी खेती को हिरन चरकर खा लेते हैं ॥१८२॥

खेती कर अधिया, बैल न बधिया ॥१८३॥

अर्थ—यदि बैल बधिया न हो तो खेती अधिया अर्थात् बटाई पर करना चाहिये ॥१८३॥

खेती तो थोरी करै, मिहनत करे सिवाय।
राम कहैं वहि मनुष को टोटा कबौं न आय ॥१८४॥

अर्थ—खेती करने के लिए खेत भले ही थोड़े हों, यदि उसमें परिश्रम अधिक किया जाय तो राम की कृपा से उस मनुष्य को घाटा कभी नहीं जाता ॥१८४॥

खेती तो उनकी, जो कर अहान-अहान।
और उनकी क्या खेती, जो देखें साँझ बिहान ॥१८५॥

शब्दार्थ—अहान-अहान=निगरानी। देखभाल।

अर्थ—खेती तो उनकी है जो ठीक तरह से देखभाल करें और उनकी खेती क्या होगी, जो साँझ-सबेरे ही देखभाल करते हैं ॥१८५॥

खेती करै साँझ घर सोवै।
काटै चोर हाथ धरि रोवै ॥१८६॥

खेती करके जो साँझ से ही घर में सो जाता है, उसकी खेती को चोर काट लेते हैं और तब वह शिर पर हाथ धर कर रोता है ॥१८६॥

खेती करै तो अपने बहै।
ना तो जाय कन्हौड़े रहै ॥१८७॥

शब्दार्थ—बहै=बहो, कटो ('बहना' क्रिया सकर्मक)। कन्होड़े=कन्धे पर सवार रहना, मुस्तैदी, निगरानी।

खेती करो तो स्वयं करो और नहीं तो जाकर मजदूरों के सिर पर सवार रहो या मुस्तैद रहो ॥१८७॥

तिल कोरे उर्द बिलोरे ॥१८८॥

तिल कोड़ने और उर्द बिलोरने (निराई करने से) अच्छा होता है ॥१८८॥

तेरह कार्तिक तीन अषाढ़ ।
जो चूका सो गया बजार ॥१८९॥

जो किसान कार्तिक के तेरह और अषाढ़ के तीन दिन से चूक गया, जानो उसे बाजार ही दौड़ना पड़ेगा ॥१८९॥

पूरी खेती स्वयं सेती ।
आधी केकी ? जो देखै तेकी ॥
बिगड़ै केकी ? घर बैठे पूछे तेकी ॥१९०॥

उसकी खेती तो पूरी (पूर्ण रूप से) होती है, जो स्वयं अपने हाथ से करता है, और आधी (खेती) किसकी है ? जो देखभाल करता है, और बिगड़ती किसकी है ? जो घर बैठे पूछता है, उसकी ॥१९०॥

बहुत करै सो और को ।
थोड़ी करै सो आपको ॥१९१॥

जो बहुत करता है (खेती, व्यापार या कोई भी काम), वह औरों के लिए होता है और जो थोड़ी करता है वह अपने लिए होता है ॥१९१॥

मास अषाढ़ जो गवहीं कीन्ह ।
ताकी खेती होवै हीन ॥१९१॥

यदि कृषक अषाढ़ के महीने में गवहीं अर्थात् पहुनाई किया तो उसकी खेती अच्छी नहीं होती ॥१९१॥

अगसर खेती अगसर मार ।
घाघ कहैं ते कबहुँ न हार ॥१९२॥

घाघ कवि कहते हैं कि आगे की हुई खेती और आगे (पहले) की मार जो करता है वह कभी नहीं हारता ॥१९२॥

यकसर खेती यकसर मार।
घाघ कहैं ये सदहूँ हार ॥१९३॥

अर्थ—घाघ का कहना है कि अकेले की खेती और अकेले की मार करने से सर्वदा हार ही होती है ॥१९३॥

हल-बैल का प्रयोग और लाभ

कृषि के कार्य में इन दोनों का (हल-बैल का) अन्योन्य प्राचीन सम्बन्ध है। यद्यपि आधुनिक विज्ञान ने हल से बैलों को दूर भी कर दिया है। परन्तु अभी अधिकांश खेती बैलों के ही द्वारा होती है और आगे भी हल से बैलों का सम्बन्ध सर्वदा ही अक्षुण्ण रहेगा। हल कृषि एक ऐसा यन्त्र है जिसके प्रयोग से कृषक के समय की बचत होती है, श्रम कम लगता है, कार्य अधिक, अच्छा और शीघ्र होता है। पैदावार में वृद्धि होती है। किसान सुगमतापूर्वक कार्य कर सकता है। अधिक संख्या में खेती की जाती हैं। प्राकृतिक प्रकोप से भी मुक्ति मिलती है। हलों के द्वारा भूमि नर्म और पोली होती है। जिससे बीज आसानी से उग आते हैं। भूमि में जल सोखने की शक्ति बढ़ती हैं। पृथ्वी में जल, वायु का संचार होने से पौधों के खाद्य तत्त्वों की वृद्धि होती है। खाद तथा कूड़ा-करकट भूमि में दब जाता है और सड़कर खाद का काम देता है। हल से खर-पतवार नष्ट हो जाते हैं। भूमि की भौतिक और रासायनिक दशा में सुधार होता है। हल द्वारा, भूमि में नाना प्रकार के कीटाणुओं की वृद्धि होती है, जो भूमि, के जीवांश को सड़ा-गला देते हैं तथा पृथ्वी को भुर-भुरी बनाकर मिट्टी में लोच ला देते हैं।

ये हल दो प्रकार के होते हैं। देशी और नवीन वैज्ञानिक। देशी हलों के सम्बन्ध में कहना ही क्या है ? इसके बारे में सभी अपने-अपने यहाँ के हलों की बनावट से काम चलाते और उन्हें जानते हैं। इसके ७ मुख्य भाग होते हैं। १ फार (फाल), २ पनिहारी, ३ नगरा, ४ हरीस, ५ पचाय, ६ परहथा, ७ मुठिया। यों देशी पूरा हल, ८ लकड़ियों से निर्मित होता है। १ नांधा, २ खोंपी, ३ अगवासी, ४ पाटा, ५ गुल्ली, ६ हरीस, ७ जघाँ, ८ मुठिया। इस प्रकार कहीं ७, कहीं ८ भाग इसके होते हैं। यह न्यूनाधिक स्थान-स्थान पर निर्भर है। बैलों के कन्धे पर रखने का एक जोठा होता है, जो चार लकड़ियों का होता है। उनके नाम ये हैं—जोठा, बरोंठा, ३ सैल, ४ पचाड़ी। इस प्रकार हल और जोठा मिलकर कुल १२ लकड़ियाँ जोठा सहित हुईं।

दूसरा वैज्ञानिक हल होता है, जिसके कई नाम हैं। १ मेंस्टन हल। २ वाट्स हल। ३ विक्टरी। ४ पंजाब हल। ५ प्रजा हल। ६ टर्नरेस्ट हल। इन सबकी अलग-अलग व्याख्या है। मेस्टन हल २०) का, वाट्स हल ३०) लगभग का और टर्नरेस्ट हल १५) का मिलता है। अन्य भी इसी प्रकार के मूल्य के होते हैं।

जिस प्रकार देशी हल के साथ मिट्टी को भुरभुरी या सम न करने के लिए अलग से पाटा या हेंगा होता है, इसी प्रकार इन वैज्ञानिक हलों के साथ अलग से (करहा) पटेला और रोलर होते हैं जिन्हें चलाने के लिए मजबूत बैल की आवश्यकता पड़ती है।

देशी तथा उन्नतिशील हलों की तुलना

देशी हल	उन्नति शील हल
१. इस हल में फाल लम्बा है जिससे यह पतला और नुकीला होता है।	१. इस हल का फाल चौड़ा और छोटा होता है जिसमें केवल एक ही ओर इसमें धार होती है।

२. देशी हल में पंखा नहीं होता, जिससे यह मिट्टी को कुछ भी पलट नहीं सकता, केवल चीरता है।	२. इस हल में फाल के अलावा एक पंखा भी लगा होता है जो कटी हुई घास को पलटकर ऐसा गिरा देता है जो नीचे चली जाती है और मिट्टी ऊपर हो जाती है।
३. इस हल से घास-फूस अच्छी तरह नहीं उखड़ती और न मिट्टी में दबाई जा सकती है।	३. इससे घास-फूस जड़ से उखड़ भी जाती है और मिट्टी में दबाई जाती है जिससे सड़कर वह हरी खाद बन जाती है।
४. इससे पिछली फसलों की जड़ें आसानी से नहीं उखाड़ी जा सकती हैं।	४. इसके द्वारा पहले की फसलों की जड़ें आसानी से उखड़ जाती हैं।
५. इसी रबी के लिए खेती की तयारी में यह हल बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है।	५. इससे रबी के खेत की तैयारी में केवल २-३ बार ही प्रारम्भिक जुताई की जा सकती है।
६. इससे गन्ने की नालियाँ बनाई और तोड़ी नहीं जा सकतीं।	६. इससे गन्ने की नालियाँ आसानी से और कम समय में बनाई और फसल काटने पर आसानी से तोड़ी जाती हैं।
७. इससे गर्मी तथा वर्षा के समय की जुताई ठीकप्रकार से नहीं की जा सकती।	७. इससे गर्मी तथा वर्षा की जुताई ठीक प्रकार से की जा सकती है।
८. यह हरी खाद के पलटने का काम नहीं कर सकता।	८. यह हरी खाद को दबाने का एकमात्र साधन है।
९. हल्का होने के कारण इसे कमजोर बैल भी खींच सकते हैं।	९. इसमें बलवान् और बड़े बैलों की आवश्यकता पड़ती है।

१०. इस हल के द्वारा हल के पीछे-पीछे बुआई की जा सकती है।

११. बनावट में यह ऐसा साधारण है कि इसे देशी बढ़ई बना सकता है।

१२. इसका मूल्य हर प्रकार से १०-१२रुपये से अधिकनहीं पड़ता।

१३. इसमें लम्बी हरीस लगी होती है।

१४. यह एक दिन में लगभग पौन एकड़ ही जोतता है।

१५. इससे जुताई करके खेत को समतल बनाया जा सकता है।

१०. इसके पीछे-पीछे बुआई का कार्य नहीं किया जा सकता।

११. इसे देशी कारीगर नहीं बना सकते।

१२. यह १५) से ७०) तक मूल्य का होता है।

१३. इसकी हरीस लम्बी नहीं होती।

१४. यह एक दिन में एक एकड़ में जोतता है।

१५. यह खेत को समतल तब बनाता है जब तरीका बदल कर प्रत्येक बार इससे जुताई करें।

अब इस सम्बन्ध में घाघ की उक्तियाँ देखिये—

कीकर पाका सिरस हल, हरियाने का बैल।
लोधा डाल लगाय के, घर बैठा चौपड़ खेल ॥१९४॥

अर्थ—यह कि किसान के पास सिरस (शीशम वृक्ष) का हल और बबूल का जाँघा एवं हरियाने का बैल हो तो तथा जिस कृषक के पास लोध का वृक्ष या बबूल का वृक्ष हो उसका कहना ही क्या है ? वह घर बैठे ही चौपड़ खेलता रहे, तब भी उसकी खेती का काम चला जाता है ॥१९४॥

१. हरियाने का बैल—इस जाति के बैल पंजाब के रोहतक, हिसार, कर्नाल और गुड़गाँव जिलों में होते हैं, जो जुताई में मजबूत और तेज पड़ते ही हैं, साथ ही बोझा ढोने में भी बड़े बलवान् होते हैं और बैल गाड़ियों में भी अच्छा काम आते हैं। इन बैलों का मुंह, गर्दन, डील

और आगे का भाग गाढ़ा और भूरा होता है। इनका चेहरा लम्बा और पतला होता है। माथा चौड़ा उभरा हुआ, आँखें बड़ी-बड़ी और निकली हुई होती हैं। सींगें छोटी ऊपर को—

दुइ हर खेती एक हर बारी।
एक बैल से भली कुदारी ॥१९५॥

अर्थ—खेती के लिए (कम से कम) दो हल होना चाहिए। एक हल से तो खेती नहीं, किन्तु बारी अर्थात् फुलवारी या साग-सब्जी की बाड़ी होती है और जिस किसान के पास एक ही बैल हो तो उसके लिए तो यही अच्छा है कि वह कुदाली से ही खेती करे, किन्तु एक बैल व्यर्थ है ॥१९५॥

फिर कहा है—

एक हर हत्या दो हर काज।
तीन हर खेती चार हर राज ॥१९६॥

अर्थ—एक हल की खेती हत्या है, २ हल की खेती कुछ काम की है, और ३ हल की खेती करने के योग्य होती है तथा जिनके पास ४ हल की खेती है तो राज्य के समान है ॥१९६॥

दश हल राव आठ हल राना।
चार हलों का बड़ा किसाना ॥१९७॥

जिस किसान के पास दस हल चलते हों तो वह राव और जिसके पास आठ हल हों वह राना है तथा चार हल वाला बड़ा किसान कहलाता है ॥१९७॥

बैलों की पहचान

कार कछोटी, झुनहरे बान।
इन्हें छाँड़ि जनि बेसहो आन ॥१९८॥

काली काछी और सुनहले बालों वाले बैल को छोड़कर दूसरे बैल न खरीदो अर्थात् इस तरह के बैल अच्छे होते हैं ॥ १९८ ॥

कार कछौटी झबरे कान ।
इन्हें छाँड़ि जनि लीजो आन ॥१९९॥

काली कच्छ और झबरे कान वाले बैल को छोड़कर दूसरा बैल न लेना ॥ १९९ ॥

करिया काछी धौरे बान ।
इन्हें छाँड़ि नहिं बेसहो आन ॥२००॥

काली कच्छ और धवल (चाँदी के-से सफेद) बालों वाले को छोड़कर दूसरा बैल न खरीदो ॥ २०० ॥

उदंत बरदें उदंत ब्यायें ।
आप जायँ और खसमैं खायें ॥२०१॥

उदंत गाय का बरदाना अच्छा नहीं। ऐसी गौ यदि ब्याये या बछड़ा दे, तो या तो वह मर जावे या मालिक को खा जावे ॥२०१॥

अमहा जबहा जोतो आय ।
भीख माँग के जाहु बिलाय ॥२०२॥

यदि अमहा और जबहा बैल लेकर जोतने जाओगे तो भीख माँगते हुए बर्बाद हो जाओगे ॥ २०२ ॥

एक बात तुम सुनो हमारी ।
बूढ़े बैल से भली कुदारी ॥२०३॥

घाघ कवि कहते हैं—तुम हमारी एक बात सुनो :—बुड्ढे बैल से कुदाल अच्छी होती है ॥ २०३ ॥ क्योंकि उसे खोदखाद करके काम चल जाता है, परन्तु बुड्ढे बैल से नहीं ॥२०३॥

छोटा मुँह और ऐंठा कान।
यही बैल की है पहिचान ॥२०४॥

अच्छे बैल का यही पहचान है कि उसका मुँह तो छोटा और कान ऐंठे हुए से हों ॥ २०४ ॥

छोटी सींग और छोटी पूँछ।
ऐसा बरद लियो जे पूँछ ॥२०५॥

छोटी सींग और छोटी पूँछ वाले बैल को बिना पूँछे ही खरीदना चाहिये ॥ २०५ ॥

जहँ देखो पटवा की डोर।
तहाँ दीजिये थैली छोर ॥२०६॥

शब्दार्थ-पटवा=पीले रंगवाला। डोर=डोरी, पगहा, बनी।
अर्थ—जहाँ डोरी में बँधा पीले रंग का बैल देखो, वहाँ थैली खोल दो अर्थात् उसे अवश्य खरीद लो ॥ २०६ ॥

बाँसड़ और मुँह का धोआ।
इन्हें देख चरवाहा रोआ ॥२०७॥

शब्दार्थ—बाँसड़ = कुबड़ा। मुंह धोआ = सफेद मुंहवाला।
अर्थ—कुबड़ा और सफेद मुँहवाला बैल अच्छा नहीं होता। ऐसा बैल खेती के काम नहीं आता। जब चरवाहे को चराने को दिया जाता है, तो उसे देखकर चरवाहा भी रोने लगता है ॥ २०७ ॥

उजर बरौनी मुँह का महुआ।
ताहि देखि हरवाहा डरुआ ॥२०८॥

जिस बैल की आँखों की बरौनी सफेद हो, और मुँहरा अर्थात् थथुना पीला हो तो उसे देखकर हलवाहा भी डर जाता है ॥२०८॥

इसलिए यह बैल अच्छा नहीं कहलाता। (इस पद के अन्तिम चरण के शब्द 'डरुआ' के स्थान में 'रोआ' शब्द भी आता है। जो ठीक नहीं बैठता।) ॥२०८॥

खेत बेपानी बूढ़ा बैल।
सो गृहस्थ साँझ गेह गैल ॥२०९॥

बूढ़ा बैल अच्छा नहीं, जिस कृषक के पास बूढ़ा बैल हो और बिना पानी का (निपनियाँ) खेत हो अर्थात् जिस खेत के समीप में पानी न हो, उस गृहस्थ का घर साफ ही हो गया समझो ॥ २०९ ॥

एक समय विधना का खेल।
रहा ऊसर में चरत अकेल ॥
एक बटोही हर-हर कहा।
ढाढ़े गिरा होस ना रहा ॥२१०॥

एक समय भगवान् का यह खेल भी देखो कि, एक गादर (कायर) बैल ऊसर भूमि में चरता रहा कि उधर से कोई एक यात्री हर-हर करता हुआ आ निकला, उसका शब्द सुनकर वह बैल खड़े ही पृथ्वी पर ऐसा गिर पड़ा कि, चेतना-रहित हो गया ॥ २१० ॥

छद्दर कहै मैं आऊँ जाऊँ।
सद्दर कहै गुसैयें खाऊँ ॥
नौदर कहै मैं नौ दिग जाऊँ।
हित कुटुम्ब उपरोहित खाऊँ ॥२११॥

शब्दार्थ—छद्दर = छः दाँतों वाला। सद्दर = सात दाँतों वाला। नौदर = नौ दाँतों वाला। उपरोहित = पुरोहित, पूर्ण हितैषी। गुसैंये = परमेश्वर, मालिक, स्वामी। कुटुम्ब = परिवार।

अर्थ—छः दाँतवाला बैल कहता है, मैं तो सब जगह आता-जाता हूँ अर्थात् मेरा कहीं गुजर नहीं होता। सात दाँतवाला कहता है कि, मैं तो अपने मालिकको ही खा जाता हूँ और नौ दाँतोंवाला बैल कहता है कि, मैं तो नवों दिशा में दौड़ता हूँ, अर्थात् जब हल में जुतना होता है तब सीधी एक भी हराई नहीं चलता और इधर-उधर नीचे-ऊपर नवों दिशाओं में उछल-कूद तल-तूफान दिखाता हूँ॥ २११ ॥

जब देखो पिय सम्पति थोड़ी।
बेसहो गाय बिआउर घोड़ी ॥२१२॥

शब्दार्थ—बेसहो = खरीदो। बिआउर = बियानेवाली, बछेड़ा देने वाली। प्रिय = प्रियतम, स्वामी, पति।

अर्थ—किसानकी स्त्री अपने पतिसे कहती है—हे प्रियतम! यदि दाम थोड़ा हो तो बछड़ा, व्याई हुई गौ और घोड़ी खरीदो ॥२१२॥

जब देखा घोंघी वहि पार।
तब थैला खोला यहि पार ॥२१३॥

घाघ कवि कहते हैं—यदि तुम नदीके इसी तटपर खड़े हो और उसके पार तुम्हें घोंघी अर्थात् आगेकी ओर गोल मुड़ी हुई सींगोंवाला बैल जब कोई दिखाई पड़े तो उसे खरीदने के लिए इसी पार थैली खोल दो और वहाँ जाते ही खरीद लो॥ २१३ ॥

जहाँ देखिये रूपा धौर।
सुकाचार बस दीहो और ॥२१४॥

शब्दार्थ—रूपा = सफेद चाँदीके रंगका। धौर = धवल, उज्ज्वल, सफेद। सुकाचार = चार सुकेका रुपया। बस = या, और।

अर्थ—जहाँ धवल रंगवाला सफेद बैल देखो, वहाँ भले ही एक रुपया अधिक लगे, परन्तु देकर उसे खरीद लो ॥ २१४ ॥

जहाँ पड़े फुलवा की लार।
झाड़ू लिये बुहारे सार ॥२१५॥

शब्दार्थ—फुलवा = फुलहा, आँखों में फूली वाला। सार = ओसारा। अर्थ—जहाँ फुलहा बैलकी लार टपके, वहाँ फौरन ही झाड़ से बुहार दो, क्योंकि ऐसा बैल और उसकी लार बड़ी अशकुनकी होती है ॥२१५॥

जहवाँ देखिहा लोह बैलिया।
तहवाँ दीहो खोलि थैलिया ॥२१६॥

घाघका कहना है—जहाँ लाहा या लाल रंगका बैल देखो, वहाँ उसको खरीदने के लिए थैलीको खोल देना ॥२१६॥

जोतैके पुरबी लादैके दमोय।
हेंगा क काम दे, जो देवहा होय ॥२१७॥

खेतों की जुताई के लिए पूरब के (पूर्वी, पुरबहा) बैल अच्छे होते हैं, और लदनी (पीठपर बोझा लादने वा बैलगाड़ी में जोतकर लदनी करने के लिए), दमोय (दक्षिण के सागर और दमोय की तरफ के) तथा देवहा जाति के बैल हेंगा अर्थात् खेतके ढेलोंको बराबर करने के काम में अच्छे होते हैं ॥ २१७ ॥

डग-डग डोलन फरका फेंकन। कहाँ चले तुम बाढ़ा।
पहिले खाइब रान परासिन। फिर गोसयें कब छाड़ा ॥२१८॥

शब्दार्थ—डगडग = डगमगाते हुए। फरका फेंकन = उँची जातिका वह बैल जिसके छप्पर में घुसने पर छप्पर की रगड़ उसके पीठ में

लगती हो। बाँड़ा = कटी पूँछ वाला। रान परोसिन = अगल-बगल के लोग, गोंसयें = मालिक, स्वामी।

जब कोई ऊँची जाति वाला बैल कटी पूँछका हो जाता है और छप्पर उलट जाता है और वह डगमगाते हुए चलता है—ऐसा बैल तो पहले अपने पड़ोसी को खाता (नाश करता) है, फिर मालिक को कब छोड़ेगा? ॥ २१८ ॥

नामोहिं नाधो उलिया-कुलिया, ना मोहिं नाधो दाँयें।
बीस बरस तक करों बरदई, जो ना मिलिहैं गायें ॥२१९॥

शब्दार्थ—उलिया-कुलिया = छोटे-छोटे खेत। नाधो = जोतो। बरदई = हल में चलने का कार्य। गायें = गाय।

बैल का कहना कवि के शब्दोंमें—बैल कहता है कि "मुझे छोटे-छोटे खेतों में न जोतो और न तो दायें पर जोतो।" यदि इस नियम का पालन मेरे साथ करते रहोगे और मैं गायों से न मिलने पाऊँगा तो निश्चित ही तुम्हारे यहाँ बीस वर्ष तक बरदई अर्थात् हल जोतने के काम आता रहूँगा ॥ २१९ ॥

नासुर करै राज का नाश ॥२२०॥

नासुर बैल वह जिसके शरीर में नशे तो अधिक हों परन्तु पसलियों की कमी हो—ऐसा बैल राज्यों को नाश कर देता है ॥२२०॥

नीला कंधा बैंगन खुरा।
कभी न निकले कंता बुरा ॥२२१॥

किसान की स्त्री अपने पति से कहती है कि, हे कंत! (स्वामी) जिस बैल का कंधा नीला, खुर बैगंनी रंग का हो वह कभी बुरा नहीं निकलता ॥ २२१ ॥

नाटा खोटा बेचिके, चार धुरन्धर लेहु।
आपन काम निकारिकै, औरन मँगनी देहु ॥२२२॥

कवि का कहना है कि—नाटे बैल अच्छे नहीं होते। इनको बेंचकर अच्छे-अच्छे चलने वाले चार बड़े बैल खरीदो, जिससे अपना काम निकाल कर औरों को भी मँगनी दो ॥ २२२ ॥

नटिया बैल छोटिया हारी।
दूब कहै मोर काह उपारी ॥२२३॥

नाटे कदके बैल और छोटा हल होने से खेतों की दूब नहीं जाती, इसलिए वह प्रबल दूब कहती है कि यह मेरा क्या उपाड़ लेगा ? ॥२२३॥

पतली पेंड़ुली मोटी रान, पूँछ होय भुइन तरियान।
जाके होवे ऐसी गोई, वाको तकैं और सब कोई ॥२२४॥

पतली पेडुली और मोटी रानवाले बैल जिनकी पूछ जमीन को छू रही हो। जिस किसान के पास ऐसी जोड़ी होगी उसकी ओर सभी कोई देखेंगे अर्थात् वह भाग्यशाली है॥ २२४ ॥

पूँछ झपा और छंटे कान।
ऐसे बरद मेहनती जान ॥२२५॥

जिन बैलों की पूछ तो झपा अर्थात् जबरी और गुच्छेदार होती है और जिनके कान मोटे होते हैं—ऐसे बैलों को परिश्रमी जानो ॥ २२५ ॥

बड़िसिंगा जनि लीनो मोल।
कुएँ में डारो रुपया खोल ॥२२६॥

बड़सिंगा अर्थात् लम्बी सींगोंवाला बैल मत खरीदो, भले ही रुपया कुएँ में फेंक दो, क्योंकि ऐसा बैल खरीदना व्यर्थ है ॥ २२६॥

बरद बेसाहन जाओ कंता।
कबराका जनि देखो दंता ॥२२७॥

कबरा जाति का बैल अच्छा होता है, इसलिए किसान की स्त्री अपने पति से कहती है कि हे कन्ता! (प्रियतम!) बैल खरीदते जाओ तो कबरा (वह बैल जिसकी आँखें बड़ी सुन्दर, पलकों के कोए लाल वर्ण के हों और बरौनी भी चिकनी) ऐसा बैल मिले तो उसके दाँत न देखना उसे खरीद लेना ॥ २२७ ॥

बैल बेसाहन जाओ कंता।
भूरे का मत देखो दंता ॥२२८॥

किसान की स्त्री कहती है—हे स्वामी! बैल खरीदने जाओ, तो भूरे बैल का दांत मत देखो। क्योंकि भूरा बैल अच्छा होता है, खरीद लो ॥ २२८ ॥

बैल तरकना औ टूटी नाव।
ये काहू दिन देहैं दाव ॥२२९॥

शब्दार्थ-तरकना = तड़कनेवाला, चौंकनेवाला, धोखे से मारनेवाला। काहू = किसी। दांव = दगा, धोखा देगें ॥ २२९ ॥

यदि बैल चौंकना या तड़कनेवाला हो और नौका टूटी हो तो इनका विश्वास नहीं, ये किसी दिन अवश्य धोखा देंगे ॥ २२९ ॥

बैल चमकना जोतमें, औ चमकीली नार।
ये बैरी हैं जानके, लाज रखै करतार ॥२३०॥

शब्दार्थ—चमकना = चौंकना। जोत में = खेतीके काम में। चमकीली=चटकीली, चटकमटक से रहनेवाली, चंचल। करतार=ईश्वर, परमात्मा।

यदि खेती के काम में जोता जानेवाला बैल चौंकता है और स्त्री चटक-मटकवाली या चंचला है तो, ये दोनों जान के घातक हैं, ईश्वर ही लाज रखें ॥ २३० ॥

बरद बेसाहन जाओ कंता ।
खैरा जनि देखो दंता ॥
जहाँ परै खैरे की खरी ।
तो कर डारै चापर पूरी ॥
जहाँ परै खैरे की लार ।
बढ़नी लेइ बहारो सार ॥२३१॥

शब्दार्थ—बरद = बैल। बेसाहन = खरीदना, खरीदने। कंता=पति, स्वामी। खैरा = खैर रंगवाला। दंता = दाँत। पुरी=नगर, गाँव। बढ़नी=बुहारी, कूँचा, झाड़ू। सार=ओसारा, घर। चापर = चौपट, नाश।

किसान की स्त्री अपने पति से कहती है कि स्वामी, जब बैल खरीदने जाओ तो खैरा रंग के बैल का दाँत न देखो। क्योंकि जहाँ पर खैरे रंग वाले बैल की खुर पड़ेगी वहाँ नगर, गाँव चौपट कर देगा और जहाँ पर खैरे की लार पड़ेगी वहाँ झाड़ू लेकर घर को साफ कर देना चाहिए, क्योंकि इस रंग का बैल बड़ा अशकुनहा होता है ॥२३१॥

बैल लीजै कजरा ।
दाम दीजै अगरा ॥२३२॥

शब्दार्थ—कजरा = कजली आँखोंवाला। अगरा=अगाड़ी पहले।

अर्थ—कज्जली आँखोंवाला बैल खरीदो, हो सके तो इसके लिए दाम (मूल्य) पहले ही दे दो॥ ३२ ॥

बाँधा बछड़ा जाय मराय ।
बैठा ज्वान जाय धुँदिआय ॥२३३॥

शब्दार्थ—मठाय=आलसी और सुस्त हो जाना। थुंदिआय= तोंद निकलना, पेट बढ़ना।

अर्थ—बाँधा हुआ बछड़ा सुस्त हो जाता है। और जवान मनुष्य के बैठा रहने से तोंद निकल आती है और वह भी सुस्त तथा आलसी हो जाता है ॥ २३३ ॥

बैल मुसरहा जो कोइ लेय, राज भंग पलमें कर देय।

त्रिया बाल सब कुछ छुट जाय, भीख माँगके घर-घर खाय ॥२३४॥

शब्दार्थ—मुसरहा=वह बैल जिसके पूँछ के बालों के बीच-बीच में बाल काले में सुफेद या सफेद में काला—ऐसी भिन्नता हो, शरीर के रंग से न मिलता हो, लेटके शरीर का हो। राज्य=राज, काम-काज, ठाट-बाट।

अर्थ—मुसरहा बैल अच्छा नहीं होता। जो इसे खरीदता है तो वह पल-भर में उसके ठाट-बाट को भंग कर देता है। यहाँ तक कि वह अपनी स्त्री बाल-बच्चों सहित सबसे छूट जाता है। और घर-घर भीख माँगकर खाता है ॥ २३४ ॥

भैंसा बरद की खेती करे, करजा काढ़ि बिरानो खाय।

बधिया ऐंचत है एहरी को, भैंसा ओहरीको लै जाय ॥२३५॥

शब्दार्थ—बिरानी=पराये, दूसरे। बधिया=बरध, बैल। ऐंचत=खैंचत, खींचना। एहरी=खेत की हराई की ओर। ओहरी= उस ओर।

अर्थ—भैंसा और बैल एकसाथ जोत कर खेती करना और दूसरे से कर्जा लेकर खाना एक ही समान है। बैल तो इधर खेत की ओर खींचता है और भैंसा उधर पानी या गड्ढे की ओर खींचकर ले जाता है, क्योंकि उसे जल प्रिय होता है ॥ २३५ ॥

मत कोइ लेय मुसरहा वाहन।

खसम मारिके डारे पाहन ॥२३६॥

शब्दार्थ—मुसरहा=मनहूस लक्षण वाला, मरकहा=मारनेवाला, बिगड़यल। वाहन=बैल। खसम=स्वामी, मालिक। पाहन=पैर।

अर्थ—मनहूस लक्षणों वाला बैल (मुसरहा बैल) कोई मत खरीदो। क्योंकि यह ऐसा बिगड़यल होता है कि मालिक को मारकर अपने पैरों के नीचे डाल देता है॥२३६॥

मुँहका मोट माथका महुआ, इन्हें देखि जनि भूल्यो रहुआ।
धरती नहीं हराई जोरे, बैठ मेड़पर पागुर भरे ॥२३७॥

शब्दार्थ—महुआ=पीला, महुये के रंग का। रहुआ=राही, मुसाफिर, यात्री। जोरे=जोड़े, खेत जोतना। पागुर=पगुरी या जुगाली करना। भरे=भरना, करना क्रिया। माथ=सर।

अर्थ—मोट मुँह और माथका पीला रंगवाले बैल को देखकर, हे बैल खरीदने वाले यात्री! भूलकर भी ऐसा बैल न खरीदो। क्योंकि ऐसा बैल धरती की एक भी हराई नहीं जोतता और खेत के मेंड़ पर बैठकर पागुर या जुगाली ही भरता है॥२३७॥

मरद निकौनी बरदे दायें।
दुमरी चलनेमें दुःख पाये ॥२३८॥

शब्दार्थ—निकौनी=निरौनी, निराई, खेतोंसे खरपतवार निकालने की एक क्रिया। दुमरी - गर्भिणी स्त्री।

अर्थ—मर्दको खेतोंसे घास निकालने एवं निरौनी करनेमें और बैलको हलमें दहिने में तथा गर्भिणी स्त्री को मार्ग यानी रास्ता चलने में दुःख होता है॥ २३८॥

मयनो बैल बड़ो बलवान।
तनिकमें करिहैं ठाढ़े काम ॥२३९॥

शब्दार्थ—मयनो=एकप्रकार की तिरछी सींग वाला, मैनी जातिका।

अर्थ—मैनी जातिका बैल बड़ा बलवान् होता है, यह तनिक में (थोड़ेमें ही) खड़े-खड़े अपने काम कर देता है ।। २३९ ।।

लम्बे लम्बे कान, और ढीला मुतान ।
छोड़ो-छोड़ो किसान, ना तो जाता है परान ।।२४०।।

शब्दार्थ—मुतान=मूत्र स्थान, छुछुली। ढीला=लम्बा-चौड़ा। परान=प्राण।

अर्थ—लम्बे कान और लम्बी छुछुलीवाले बैल अच्छे नहीं होते। हे किसान! इन्हें छोड़ दो, नहीं तो इनके प्राण निकल जायेंगे ।।२४०।।

वह किसान है पातर, जो बरदा राखै गादर । २४१।।

शब्दार्थ—पातर=निर्बल, गरीब। गादर=सुस्त, कादर, कायर, कमजोर।

अर्थ—वह किसान गरीब है जो कमजोर बैल रखता है ।। २४१ ।।

सात दाँत उदन्तको, रंग जो काला होय ।
इनको कबहुँ न लीजिए, दाम चहै जो होय ।।२४२।।

शब्दार्थ—उदन्त=दूध का दाँत न टूटना।

अर्थ—यदि काले रग का बैल सात दाँत का उदन्त ही क्यों न हो, और चाहे इसका मूल्य कितना भी कम क्यों न हो, परन्तु इसे कभी न लो ।। २४२ ।।

सींग मुड़े माथा उठा, मुँह का होवे गोल ।
रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल ।।२४३।।

जिस बैल की सींगें मुड़ी हुई अर्थात् घोंची हो, माथा उभड़ा हुआ हो और जो मुँह का गोल हो। जिसके शरीर के बाल मुलायम और कान चचल हों, वह बैल चलने में तेज और अमूल्य अर्थात् बहुत मोल का और अच्छा होता है ।। २४३ ।।

सींग गिरैला बरद के, औ मनई का कोढ़ ।
ये नीके ना होयँगे, चाहे बदलो होड़ ॥२४४॥

शब्दार्थ—गिरैला=गिरी हुई । मनई=मनुष्य । कोढ़=कुष्टरोग । नीको=अच्छे । बदलो=लगालो । होड़=शर्त ।

अर्थ—जिस बैल की सींग गिरी हो (बेतरीके झुकी हो) और जिस मनुष्य को कुष्ट रोग हो जाता है, चाहे कितनी भी शर्त करलो वह कदापि अच्छा नहीं होता है ॥ २४४ ॥

श्वेत रंग औ पीठ बरारी ।
ताहि देख जनि भूल्यो अनारी ॥२४५॥

शब्दार्थ—जिस बैल की पीठ नीची और रीढ़ की हड्डी दबी हुई हो और जो श्वेत (सफेद) रंग का हो, उसे भूलकर भी न खरीदो ॥ २४५ ॥

सौंख कहा मोर देख करा ।
वे मेहरीका करौं घरा ॥२४६॥

शब्दार्थ—सौंख=बैल के मस्तक पर एक निशान । करा=कर्तव्य । सोखहा बैल कहता है, मेरा कर्तव्य तो देखो । मुझे जो ले जायेगा उस किसान का घर बिना स्त्री का कर दूंगा ॥ २४६ ॥

हिरन मुतान औ पतली पूँछ ।
बैल बेसाहो कंत बेबूझ ॥२४७॥

शब्दार्थ—हिरनमुतान=हिरन की टेढ़ी चाल से मूतने या पेशाब करनेवाला । बेबूझ=बिना समझे-बूझे, निःशंक होकर ।

अर्थ—किसान की स्त्री अपने पति से कहती है—हे स्वामी ! हिरन-मुतान और पतली पूँछवाले बैल को निःशंक होकर खरीद लेना, उसमें कुछ भी समझने-बूझने की आवश्यकता नहीं है ॥ २४७ ॥

अवर्षण-अकाल सुकाल तथा फसलों के रोग

माघे गर्मी जेठे जाड़ ।
कहैं घाघ हम होब उजाड़ ॥२४८॥

कवि का कहना है—यदि माघ के महीने में गर्मी और जेठ के महीने में जाड़ा पड़ता है तो समझो कि अब हमें उजड़ जाना पड़ेगा अर्थात् अकाल पड़ेगा ॥ २४८ ॥

मंगल पड़े तो भूचलै, बुधके पड़े अकाल ।
फगुआ होय सनीचरा, निहचै पड़े अकाल ॥२४९॥

यदि होली (फाल्गुनकी पूर्णिमा) मंगलवारको पड़े तो भूकम्प हो और बुधवारको पड़े तो समय अच्छा न हो तथा शनिवार को पड़े तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा ॥ २४९ ॥

सवान शुक्र न दीसै, निहचै पड़े अकाल ॥२५०॥

जिस वर्ष श्रावणके महीनेमें ही शुक्रास्त हो जावे, उस वर्ष निश्चय ही अकाल पड़ेगा ॥ २५० ॥

ढोकी बोले जाय अकास ।
अब नाहीं वर्षा कै आस ॥२५१॥

जब ढोकी नामक पक्षी बोलकर आकाशमें उड़ जाये तो जानो कि अब वर्षा नहीं होगी ॥ २५१ ॥

माघक ऊमस जेठक जाड़, पहिले वरखा भरिगा गाड़ ।
कहैं घाघ हम होब वियोगी, कुआँ खोदिके धोइहैं धोबी ॥२५२॥

यदि माघके महीने में गर्मी और जेठ के महीने में (जाड़ा) का अनुभव होवे और आषाढ़ मास में जब पहली ही वर्षा से ताल-पोखरे या गड्ढे भर जावें तो घाघ का कहना है कि अब मैं इस देश को

छोड़कर वियोगी हो जाऊंगा, क्योंकि यहाँ सूखा पड़ेगा जिसमें कुंआ खोदकर धोबी वस्त्र धोवेंगे ॥ २५२ ॥

नीचे ओद उपर बरदाई ।
घाघ कहै अब गेरुई आई ॥२५३॥

घाघ कविका कहना है कि, जब खेत नीचे से गीला रहता है और ऊपर से कई दिन लगातार बादल छाये रहते हैं, तब गेहूँ में गेरुई नामक रोग लगता है ॥ २५३ ॥

फागुन मास बहै पुरवाई ।
तब गेहूँ में गेरुई आई ॥२५४॥

यदि फाल्गुन मास में पुरुवा (पुरुवा हवा) चले तो जावों कि गेहूँ में गेरुई नामक रोग आ रहा है ॥२५४॥

प्रतिकूल मौसम

प्रतिकूल मौसम से फसलों को बड़ा नुकसान पहुँचता है और यह कई प्रकार से होता है।

(१) सूखा पड़ना—इसमें पौधों में पानी न मिलने से फसल को नुकसान होता है। पानी के अभाव में पौधे मुर्झा जाते हैं और उनका विकास रुक जाता हैं। यदि कहीं सूखा लम्बा पड़ा हो तो फसल ही नष्ट हो जाती है।

(२) असामयिक वर्षा—ऐसी वर्षा जो पौधों में फूल लगने के समय और फसल पकते समय होती है, सिवा हानि के लाभ नहीं, इससे फसल बर्बाद हो जाती है।

(३) पाला पड़ना—इससे भी फसल को नुकसान पहुँचता है, पौधे सूखकर मुरझा जाते और नष्ट हो जाते हैं।

(७) अधिक गर्मी पड़ना—पौधे अधिक गर्मी नहीं सहन कर पाते। इसी प्रकार आँधी या तेज हवाओं से भी फसल को नुकसान पहुँचता है और ओलों के पड़ने से भी फसल बर्बाद हो जाती है और खेतों में कुछ भी शेष नहीं रहता। इस प्रकार पैदावार कुछ भी नहीं होती। यही प्रकृति वह सबसे भयंकर शक्ति है जिससे फसलें नष्ट हो जाती हैं और पैदावार भी नहीं होती। बेचारा किसान देखता ही रह जाता है।

प्रतिकूल मौसमसे फसलकी रक्षाका उपाय

यों, तो मौसमका बदलना मनुष्य के लिए असम्भव है, तथापि मौसम के बचाव के लिए उसे कुछ उपाय तो करना ही चाहिए। किसान अपनी फसलों की रक्षा के लिए निम्नलिखित उपाय कर सकता है।

(१) सिंचाई करना, (२) खेत के चारों ओर घास, कूड़ा-करकट जलाना, (३) तेज हवाओं से बचने का उपाय करना।

इसमें तेज हवाओं से इस प्रकार बचाव करे कि यदि हवाएँ सर्वदा एक ही दिशा में चलती हों तो उनके आने के मार्ग पर वृक्षों की कतारें लगावें। इसके साथ ही गाँव के चारों ओर बाग लगाना बहुत लाभदायक है।

(४) सूखा पड़ना—इससे बचने का यही उपाय है कि खेतों की सिंचाई कर दी जाय। सिंचाई के साधनों में वृद्धि की जाय। सिंचाई नहर या कुंआ से की जाय अथवा वर्षा का पानी इकट्ठा करके तब खेतों को सींचा जाय ताकि सूखा का प्रभाव न पड़े।

(५) असामयिक वर्षा—अधिक वर्षा होने पर पानी के निकासका प्रबन्ध किया जाय और इसके लिए नालियाँ बनाई जाँय। न्यून वर्षा के लिए कुँओं का प्रबन्ध हो और सभी साधनों से सिंचाई की जाय।

(६) फसलें समय पर बोई और काटी जाँय। उसमें किसी भी प्रकार की देरी करना उचित नहीं।

(७) सरकार के कृषि-रक्षा केन्द्र तथा सूचना केन्द्रों से समय-समय पर जानकारी प्राप्त की जाय।

(८) समय जैसा हो तदनुसार अपने फसल की रक्षा करें। सभी उपाय परिस्थिति पर निर्भर है। उसके लिए सावधान रहना उचित है। सर्वोपिर ईश्वर ही सहायता है।

"सच्चे किसान की पहचान"

काँध कुदारी खुरपी हाथ।
लाठी हँसुवा राखै साथ॥
काटै घास औ खेत निरावै।
सो पूरा किसान कहलावै॥२५५॥

इस सम्बन्ध में घाघ कवि का कहना है कि पूरा किसान वही कहलाता है कि जो कुदालको काँधे अर्थात् कन्धे पर लिये और हाथमें खुरपी (खरपतवार निकालने का एक औंजार) लिए तथा लाठी और हँसुवाको सदैव अपने साथ रखता है। हँसुआ से तो घास काटता है और खुरपी से खेत निराता है॥ २५५॥

सबका हर तर जो खसम सिरपर॥२५६॥

यदि खसम (मालिक) हर समय सिर पर तैयार रहे अथवा पूर्णतः तैयार होकर हलवाहे या मजदूर से काम ले तो सभी कार्य (खेती का कार्य या व्यापार भी) हल के नीचे-नीचे ही है॥ २५६॥

समथर जाते पूत चरावै, लगते जेठ भुसाला छावै।
भादों मास उठे जो गरदा, वीस बरस तक जोतो बरदा॥२५७॥

शब्दार्थ—समथर=समतल या बराबर भूमि। समर्थ पूत=योग्य पुत्र या बेटा।

अर्थ—यदि बैल से समतल या बराबर की भूमि में जोताई का काम लिया जाय और किसान का बेटा उसे चरावे, जेष्ठ का महीना लगते ही भूसा रखने का घर छा देवे और यदि भादों के महीने में बैल ऐसी सूखी जगह में बाँधा जावे कि जहाँ धूल उड़ती रहे तो उस बैल को २० वर्ष तक जोता जा सकता है ॥ २५७ ॥

गेहूँ आदि फसलों के सम्बन्ध में कुछ और उक्तियाँ

गेहूँ वाहा धान विदाहा, ऊख गोड़ाई से है आहा ॥२५८॥

शब्दार्थ—गाहा = जोतने की क्रिया या बाँह लगाना। आहा = अच्छा।

अर्थ—गेहूँ कई बार की जुताई के बाहों से और धान बिदहने से, ऊख कई बार के गोड़ने (गोड़ाई) से अच्छी होती है ॥ २५८ ॥

गेहूँ वाहे चेना दलाये।
धान गाहे मक्का निराये ऊख कसाये ॥२५९॥

अर्थ—गेहूँ बाहों द्वारा अर्थात् हल द्वारा कई बार की जोताई करने एवं खेत को पलिहर के रूप में तैयार करने पर और चना दलाये अर्थात् खोटने और पैरों से कांड़ने (दबाये जाने और दल-मल जाने पर और धान गाहे-जोतने एव बिदहनी करने), पानी भरने पर और मक्का निकाई करने पर तथा ऊख को उसकी बुवाई करने से पहले उसे रात भर पानी में डूबा रखने से लाभ होता है ॥ २५९ ॥

गेहूँ जा जब पाछिवाँ पावै।
तब जल्दी से दाँया जावै ॥२६०॥

अर्थ—गेहूँ और जौ जब पाछवाँ हवा पाता है तब शीघ्र दायाँ जाय ॥ २६० ॥

गेहूँ गेरुई गाँधी धान।
घिना अन्नके मरा किसान ॥२६१॥

अर्थ—जब गेरुई नामक रोग गेहूँ में लग गया और धान की फसल में गंधी नामक कीड़ा लग गया तो समझो कि किसान को अन्न नहीं मिला और वह अन्न के बिना मर गया ॥ २६१ ॥

इसीलिए घाघ कवि ने यह भी कहा है कि—

ठाढ़ी खेती गाभिन गाय ।
तब जानें जब मुँह में जाय ॥ २६२ ॥

अर्थ—खड़ी खेती (तैयार फसल) और गाभिन अर्थात् ब्याने वाली गायको तब सफल समझो जब उसका अन्न और दूध मुंह में जावे, क्योंकि इन दोनों पर बड़ी बाधाएँ होती हैं ॥ २६२ ॥

मैदें गेहूँ ढेले चना ॥ २६३ ॥

अर्थ—गेहूँ के लिए पलिहर खेत की मिट्टी जब मैदा अर्थात् बारीक आटा के समान कोमल हो जावे तब उसमें अच्छी पैदावार होती है और चना के लिए खेत में ढेला (मिट्टी के बड़े-बड़े कण) होना चाहिये, तब चना अच्छा होगा ॥ २६३ ॥

चना की खेती

चना सींचपर जब हो आवै ।
ताको पहिले तुरत खोंटावै ॥ २६३ ॥

अर्थ—जब चना सींचने योग्य हो जावे तब उसको फौरन ही खोंटवा देवें और फिर उसमें पानी भरवा देवें तो वह अच्छा होता है ॥ २६४ ॥

चना अधपका जौ पका काटै ।
गेहूँ बाली लरका काटै ॥ २६५ ॥

अर्थ—चना अधपका भी काटे तो हर्ज नहीं, परन्तु जौ तो पकने पर ही काटना चाहिये और गेहूँ तो पूर्णतः पककर जब उसकी बालें टेढ़ी होकर लटक जावें तब काटना चाहिये ॥ २६५ ॥

चना में सरदी बहुत समाई।
ताको जान गधैला खाई ॥ २६६ ॥

अर्थ—चना अधिक पानी नहीं चाहता, उसमें सर्दी बहुत लगती है, और जब ऐसा हो जावे तब समझो कि उसे गधेला नामक कीड़ा खा जायेगा। इससे पैदावार कम होती है ॥ २६६ ॥

जब सैल खटाखट बाजे।
तब चना खूब ही गाजे ॥ २६७ ॥

अर्थ—चना बोते समय जब खेत में हल चले और बैलों के जुआठे की सैल (यह बैलों को रोकने की बाँस की एक लकड़ी होती है) खट-खटकर बजने लगे अर्थात् खेत में कड़ापन हो, क्योंकि चने के लिए नम मिट्टी नहीं चाहिए, तब समझो कि, उस खेत में चने की पैदावार अच्छी होगी। इसलिए चना, धान कटने पर उसी खेत में बोना चाहिए। ऐसे खेत को जरीका खेत कहा जाता है ॥ २६७ ॥

जोत न मानै अरसी चना।
पोस न मानै हरामी जना ॥ २६८ ॥

शब्दार्थ—जोत = जुताई। अरसी = अलसी, तीसी। पोस = पालन-पोषण अच्छाई। हरामीजना = दुष्टजन।

अर्थ—अलसी और चना जुताई को वैसे ही अच्छा नहीं मानते, जैसे दुष्टजन पालन-पोषण या अच्छाई को नहीं मानते ॥ २६८ ॥

जो तेरे कुनबा धना, तो क्यों न बोये चना ॥ २६९ ॥

अर्थ—यदि तेरा परिवार लम्बा है या बाल-बच्चे अधिक हैं तो चना क्यों नहीं बोता, क्योंकि चने की पैदावार अच्छी होती है और चना बड़ा उपयोगी अनाज है, इससे चना अवश्य बोये ॥ २६९ ॥

मकड़ी घासा पूरा जाला।
बीज चनेका भरि-भरि डाला ॥२७०॥

अर्थ—जब मकड़ी घासों पर जाला पूरने लगे, तब चने के खेतों में बीज टोकरियों में माप के अनुसार भर-भर कर बोना चाहिये ॥२७०॥

सरसे अरसी नीरस चना ॥२७१॥

अर्थ—सरसे अर्थात् सरस या ठंडे खेत में अलसी और नीरस खेत में चना बोना चाहिये ॥२७१॥

कोठिला+बठी बोली जई, आधे अगहन क्यों न वई।
जो कहुँ बोते बिगहा चार, तो मैं डरतेउँ कोठिला फार ॥२७२॥

+कोठिला में अनाज रखने की विधि बड़ी प्रचलित है। इसे सभी किसान जानते हैं और मिट्टी का कुठला या डेहरा बनाकर रखते हैं और फसल तैयार होने पर अन्न को सूखा-बनाकर डेहरे में रखते हैं। इसे पीली चिकनी मिट्टी में भूमा लगाकर बनाते हैं। छोटे-बड़े जैसे चाहे बनाले। कुठिला ऐसा बनावे जिसमें १० मन से लेकर २० मन तक अनाज भरा जा सके। कुठिला में अनाज भरकर उसे ढक्कन से बन्द कर देवे। इसमें नीचे एक छेद से जितना चाहे अन्न निकालते हैं और शेष अन्न को डेहरे के मुँह पर मिट्टी लगाकर उसे ढक्कन से बन्द कर देते हैं। इस प्रकार कुठिला के ऊपर दो ढक्कन होते हैं। अब तो आधुनिक ढङ्ग से ये सीमेन्ट के भी बनने लग गये हैं। कुठिला बाँस या झाऊ से भी बनाते हैं। परन्तु इन पर भी चिकनी मिट्टी लपेटनी पड़ती है। और यह उतना स्थायी नहीं बन सकता जितना कि मिट्टी वाला। फिर इसमें यह एक ऐसी त्रुटि भी है कि इनके भीतर की लकड़ियों में छेद हो जाते हैं और वायु-प्रवेश द्वारा अनाजको घुन लगा देते हैं। इसकी रचना में बड़ी शुद्ध चिकनी और हो सके तो सर्वथा ही पीली मिट्टी का प्रयोग करे। कुठिला का सम्बन्ध बीज-गुदाम तक से है। इसमें कोठे, खत्ती, अनाज का अड्डा आदि तक आ जाते हैं।

बीज गुदामों में तो बोरे से ही काम चलाना पड़ता है। उसके ढंग हैं। बोरे में अनाज भरकर भूसे में रख देते हैं। परन्तु इसमें घुन लगने की आशंका रहती है। अन्न के बीज को केवल भूसे में रखते हैं। परन्तु इसमें अधिक भूसे की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे ही पृथ्वी से गड्ढे खोदकर उसके चारों ओर चटाई और नीचे चटाई तथा भूसा देकर भी अन्न या उसके बीज रखते हैं। उसमें भी अधिक भूसा लगता है। इससे खेत्ती को किसी ऐसी ऊँची जगह में बनावे, जहाँ पानी न लगता हो। टीनकी छोटी टङ्की भी बना लेते हैं। क्योंकि बीजका रखना बहुत आवश्यक है।

शब्दार्थ—कोठिला = मिट्टी का डेहरा, अन्न रखने का बखार या भंडार। जई = जौ। बई—बीज बोना, बोआई। कहुँ = कहीं।

अर्थ—डेहरे पर बैठकर जो कहता है कि मुझे आधे अगहन में क्यों नही बो दिया। यदि कहीं मुझे चार बीघे में बो दिया होत। तो मैं डेहरा या अन्न रखने का बखार फोड़ दिया होता अर्थात् तेरा भंडार भर दिया होता॥ २७२॥

बिडरे खेत पुराने बीया।
ताकी खेती छाया बीया॥ २७३॥

जिसके खेत बिडरे, बिररे अर्थात् दूर-दूर हों और जिसके बीज पुराने हों तो जानो उसकी खेती छिया-बिया में पड़ी है, नष्ट है। यहाँ तक कि ऐसी खती नहीं करना। इसलिए बीजों को नवीन और विकसित बड़े-बड़ होना चाहिये॥ २७३॥

कपास चुनाई, खेत खनाई॥ २७४॥

अर्थ—कपास की चुनाई और खेत की खनाई (कोड़ाई) ही खेती में प्रधान कार्य है॥ २७४॥

कर्महीन खेती करै, बैल मरै सूखा परै॥ २७५॥

अर्थ—जब कर्महीन मनुष्य खेती करने लगता है, तब बैल मरता है या सूखा पड़ता है ।। २७५ ।।

कामिनी गरभ और खेती पकी ।
ये दोनों हैं दुर्बल बदी ।। २७६ ।।

गर्भवती स्त्री और पकी खेती ये दोनों ही दुर्बल हैं ।।२७६ ।।

कुम्भे आवे मीने जाय ।
पेड़ी लागै पालौ खाय ।। २७७ ।।

कुम्भ की संक्रान्ति से गेहूँ में गेरुई रोग लगता है और मीन की संक्रान्ति तक निवृत्त हो जाता है। यह रोग गेहूँ की जड़ से लगता है और उसकी शिखा तक खा जाता है अर्थात् उसे कमजोर या पीला कर सर्वथा ही नष्ट कर देता है ।। २७७ ।।

खनिके काटे घनके मोराये ।
जब बरदाके दाम सुनाये ।। २७८ ।।

ऊख को जब खूब खनकर अर्थात् जड़ से काटकर कोल्हू में भली-भाँति पेरकर लाभ उठाओगे तब बैलों का परिश्रम पूरा होगा ।।२७८।।

दो दिन पछिवाँ छः पुरवाई, गेहूँ जौ को लेइ दँवाई ।
ताके बाद ओसावै साई, भूसा दाना अलगे होई ।।२७९।।

दँवाई (दौनी-देवनी) के लिये दो दिन पछिवाँ और छः दिन पुरवा मिल जाय तो इतने ही दिन में गेहूँ और जौ की दौनी कर लेनी चाहिये। इसके बाद जो ओसाता है तो भूसा और दाना अलग हो जाता है ।। २७९ ।।

पछिवाँ हवा ओसावै जोई ।
घाघ कहैं घुन कबहुँ न होई ॥ २८० ॥

घाघ कवि का कहना है कि यदि पछिवाँ हवा में ओसाओगे तो रबी की फसल (गेहूँ, मटर) में घुन कदापि न लगेगा ॥ २८० ॥

बाजरा और मड़ुवाकी एक उक्ति :—

उठके बजरा यों हँसि बोलै ।
खाये बूढ़ा जुवा हो जाय ॥ २८१ ॥

बाजरा नामक अन्न हँसकर ऐसा बोलता है कि मुझे जो खायेगा वह बुड्ढा भी जवान हो जायेगा ॥ २८१ ॥

ऊँचे चढ़के बोला मँड़ुवा, तब नाजों का मैं हूँ भंडुआ ।
आठ दिना जो मुझको खाय, भले मर्दसे उठा न जाय ॥२८२॥

मँड़ुवा नामक अन्न ऊँचाई पर चढ़कर बोलता है कि मैं सब अनाजों का भँड़ुवा हूँ। यदि मुझे कोई आठ दिन भी खा लेवें तो वह अच्छा मर्द भी हो तो उससे उठा न जायेगा ॥ २८२ ॥

मँडुवा मीन पीन संग दही ।
कोदो क भात दूध संग लही ॥ २८३ ॥

अर्थ—मँड़ुवा नामक अनाज के साथ मछली, दही के साथ चीनी और कोदो का भात दूध के साथ खाने से अच्छा लगता है ॥ २८३ ॥

ओझा कमियाँ वैद किमान ।
आँड़ू बैल और खेत मिसान ॥ २८४ ॥

शब्दार्थ—ओझा = झाड-फूंक करने वाले। कमियाँ = कीमियागिरि करने वाले, काम करनेवाले श्रमिक, मजदूर, हलवाहा। वैद—वैद्य। आँड़ूबैल = बिना कुटाये, बिना बद्धी किये गये बैल। मसान = मसान, मरघट, मुर्दा जलाने का स्थान।

अर्थ—यदि हलवाहा ओझा हो जावे और किसान वैद्य हो जावे और अंडू बैल जिसके पास हो तो जानो कि उस कृषक का खेत मरघट के तुल्य हो जावेगा ॥ २८४ ॥

निकाई या गुड़ाई

यह हमारे कृषि-कार्य की एक ऐसी पद्धति है कि जिसके बिना खरीफ की फसल प्राप्त करना कभी कठिन-सा हो जाता है। इसी से इसका नाम भी निकाई है। इसका और भी अर्थ अच्छा ही है। अच्छाई के बिना अच्छा भी क्या होगा ? अतः इसकी बड़ी महत्ता है। जिस किसान के खेतों में निकाई हो जाती है, खरपतवार नहीं रहते, उसकी फसल अच्छी होती है। इससे खेत से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं। ऐसे ही गुड़ाई से भी यही लाभ होता है। इससे यह दोनों के लिए हितकर है। इन निकाई और गुड़ाई दोनों का अन्योन्य सम्बन्ध है। जैसे जब धान के पौधे कुछ बड़े हो जायँ तो देशी हल से जुताई करा देना बहुत लाभदायक है। इससे खरपतवार नष्ट होकर पैदावार बढ़ती है। धान में तो निकाई की बडी प्रधानता है। गेहूँ के लिए उतनी अधिक निकाई नहीं चाहिये, जितनी धान की। फिर भी गेहूँ में कर दे तो यह और भी अच्छा है। इस निकाई पर महाकवि घाघ की उक्तियाँ क्या है ? वे कहते हैं—

दो पत्ती क्यों न निराये।
अब बीनत क्यों पछिताये ॥ २८५ ॥

जब फसल दो पत्ती की हो गई तब उसे निराया क्यों नहीं अर्थात् तभी उसकी निकाई क्यों न करा दी ? अब एक-एक कर बीनते हुए क्यों पछता रहे हो ? ॥२८५॥

सावन भादों खेत बिरावे।
वह गृहस्थ बहुते सुख पावे ॥ २८६ ॥

जो गृहस्थ श्रावण और भादों के महीने में अपने धानों की खेती निरा लेता है अर्थात् निकाई कर लेता है वह बड़ा सुख पाता है ॥२८६॥

सुथना पहिरे हर जोते, औ पौला पहिर निरावैं।
घाघ कहे ये तीनों भकुवा, सिर बोझा ले गावैं ॥२८७॥

जो सुथना (सकरी मोहरी का पाजामा) पहनकर हल जोतता है और पौला नाम खड़ाऊँ या चट्टी पहनकर निकाई करे और जो सिर पर बोझा लेकर गीत गावे—घाघ कवि कहते हैं कि ये तीनों भकुवा अर्थात् मूर्ख हैं ॥ २८७ ॥

जोन्हरी या मक्का

× जोन्हरी बोवैं तोर मरोर।
तब वह डारै कोठिला फोर ॥ २८८ ॥

× जोन्हरी का दूसरा नाम मक्का है। मक्का का बीज सत्रहवीं शताब्दी में हमारे देश में आया और तब से ही इसकी खेती यहाँ पर होने लगी। कहा जाता है कि इसकी जन्मभूमि अमेरिका है। इसका पौधा ५-६ फुट ऊँचा होता है। यह दाने तथा चारे दोनों के लिए उपयोगी है। यह बहुत जल्द तैयार हो जाता है और इसी से यह गरीबों के बड़े हित का होता है। किसानों में इसकी खाने की बड़ी प्रथा है। परन्तु यह अधिक बलकर नहीं होता। इसके भुट्टों को बाजारों में बेचकर किसान खूब लाभ उठाते हैं। यह दो-ढाई महीने में काट लिया जाता है और इसे दो-ढाई फुट के फासले पर बोते हैं। प्रत्येक पौधे पर एक-दो भुट्टे लगते हैं। यह पीला और सफेद दो प्रकार का होता है। हमारे प्रान्त में सरकार ने इसकी कई उन्नतिशील जातियाँ निकाली हैं। इसके लिए नर्म तथा जीवांश युक्त उपजाऊ भूमि की आवश्यकता है और वह ऐसी कुछ ऊँचास पर हो कि उसके खेत में पानी न लगे। इसके लिए दोमट और हल्की मटियार भूमि अच्छी होती है। भारी तथा रेतीली भूमि में इसकी खेती अच्छी नहीं होती। इसे छिटकवाँ और

लाइनों में २-२।। फुट के फासले पर बोते हैं। छिटकवाँ चारे के लिए और दाने के लिए लाइनों में भट्टा के लिए बोना अच्छा है। मक्का के पौधे जब १५ दिन के हो जायँ तब उसमें खुरपी से निकाई—गुड़ाई करना लाभदायक होता है। जब पौधे २ फुट के हो जायँ तब फिर निकाई-गुड़ाई कर देवे। वर्षा के दिनों में इनको मिट्टी चढ़ाना भी लाभदायक होता है। यदि वर्षा कम हो तो आवश्यकतानुसार इनकी सिंचाई भी करना आवश्यक है। दोनों के लिए बोये गये मक्के की पैदावार २५ से ३० मन प्रति एकड़ होती है। हरे भुट्टे की १५,००० से २०,००० तक भुट्टे प्रति एकड़ में निकलते हैं।

अर्थ—जोन्हरी बोने के लिए खेत की अच्छी जुताई करनी चाहिये, अथवा उसकी बाली तोड़-मरोड़ कर दाने निकाल कर जोन्हरी बोवे तो उसकी इतनी अधिक पैदावार हो कि वह कोठिला को फोड़ डाले एवं रखने की जगह न मिले।। २८८।।

सच्चे किसान का कर्तव्य

बीघा बायर बोय, बाँध जो होय बँधाये।
भरा भुसौला होय, बबुर जो होय बुआले।।
बढ़ई बसे समीप, बसूला बाढ़ धराये।
पुरखिन होय सुजान, बिया बोउनिहा बनाये।।
बरद बगौधा होय, बदरिया चतुर सुहाये।
बेटवा होय सपूत, कहे बिन करे कराये।।२८९।।

किसान की श्रेष्ठता के सम्बन्ध में घाघ कवि का कहना है कि—वही सच्चा किसान है कि जिसके पास बोने के लिए अच्छे-अच्छे लम्बे था एक ही जगह खेतों के प्लाट (बीघे) हों और उन्हें सिंचाई के लिए पानी का बाँध बाँधा हो। किसान का भुसौला भरा और बबूल के वृक्ष बुवाये हों तो उसके समीप में बसूले पर बाढ़ धराये बढ़ई बसता

हो और उसके (किसान के) घर की मालकिन अच्छी जानकार हो कि जो खेतों में समय-समय पर बोने वाले बीजों को बनायें रखती हो। उसके अच्छे बगनी लगे हुए बैल और अच्छे-अच्छे चतुर हलवाहे हों तथा बेटा सपूत हो जो बिना कहे गृहस्थी के सारे कामों को करता-कराता हो ॥ २८९ ॥

जब बरसे तब बाँधो क्यारी।
बड़ा किसान जो हाथ कुदारी ॥ २९० ॥

किसान को चाहिए कि जब पानी बरसे और खेत बोने के दिन हों तब फौरन ही उसमें क्यारी बाँधने के लिए पहुँच जावे, सबसे बड़ा किसान तो वही है कि जो ऐसे समय में कुदाल के लिए खेत पर पहुँच जाता हो अथवा जिसके हाथ में कुदाल रहती हो ॥ २९० ॥

पहिले छावै तीन घरा।
सार भुसौला और बड़हरा ॥ २९१ ॥

(किसान को चाहिए कि) किसान पहले इन तीन घरों के छप्पर तैयार करे। पशुओं के रहने का स्थान, भूसा रखने का स्थान, और बड़हरा अर्थात् कडा (गोहरा-गोहरी) रखने का स्थान हों ॥ २९१ ॥

पाही जोतै और घर जाय।
तेहि गिरहस्तै भवानी खाय ॥ २९२ ॥

जो गृहस्थ पाही अर्थात् दूर—दूसरे गाँव पर खेती करता हो, यदि वह वहाँ अपने खेतों को जोतकर अथवा उसकी खेती करके फिर जहाँ निवास करता है, वहाँ अपने घर पर चला जाता है, तो उसे भवानी उठा ले जायें। कवि के कथन का अभिप्राय यह है कि दूर की खेती अच्छी नहीं होती ॥ २९२ ॥

पूर्वा रोपै पूर किसान।
आधा खखड़ी आधा धान ॥ २९३ ॥

वही पूरा किसान है जो पूर्वा नक्षत्र में धान की रोपनी करे। क्योंकि इस नक्षत्र में आधा धान और आधा खखड़ी-पुआल आदि होते हैं ॥ २९३ ॥

भैंस के सम्बन्ध में दो पद्य :—

भैंस कन्देलिया पिया ले आये।
माँग दूध कहाँ से आये ॥ २९४ ॥

कवि के शब्दों में मानों किसान की स्त्री अपने पति से कहती है कि, हे प्रियतम! तुम भैंस तो कन्देलिया अर्थात् माथे पर चाँदीवाली लाये हो और दूध माँगते हो तो दूध कहाँ से आवेगा। क्योंकि ऐसी भैंस तो दूध देती ही नहीं ॥ २९४ ॥

भुअरी भैंस गले दुइ कंठा।
करिया क दूध न भुअरी क मंठा ॥ २९५ ॥

यदि भैंस भूरे रंग की हो और उसके गले में दो रेखा हो तो वह बड़ी अच्छी होती है। काली भैंस का दूध कुछ नहीं किन्तु भूरी का तो मट्ठा भी अच्छा होता है ॥ २९५ ॥

खेत-खरिहान की सायत और नवान्न-ग्रहण

सुख सुखराती देव उठान, तेकरे बरहें करो नेवान।
तेकरे बरहें खेत खरिहान, तेकरे बरहें कोठिलै धान ॥२९६॥

शब्दार्थ—सुखराती=सुख की रात दीवाली। देवउठान= देवोत्थानी एकादशी। नेवान=नवा, नवान्नग्रहण। कोठिलै=बखार में।

जब सुखद दीपावली और दिठवन एकादशी व्यतीत हो जावे, तब उसके बारहवें दिन नवान्न-ग्रहण अर्थात् नेवान की सायत जानो। और उसके बारहवें दिन खरिहान अर्थात् फसल काटकर खलिहान में लाओ और उसके बारहवें दिन धान को बखार में रक्खो ॥ २९६ ।

दिवालीको बोये दिवालिया ॥ २९७ ॥

अर्थ सरल है; अर्थात् दीपावली के दिन खेतों में बीज न बोओ ॥ २९७ ॥

नरसी गेहूँ सरसी जव्रा ।
अतिके बरसे चना बवा ॥ २९८ ॥

शब्दार्थ—नरसी = न + रसी, जिसमें रस न रहे। नीरस = सूखा। सरसी = स + रसी, सरस, रससहित, गीला, नम।

अर्थ—सूखे पलिहर के खेत में गेहूँ, उससे कुछ गीले एवं सरस खेत में जौ बोना चाहिए। परन्तु जिस साल पानी अधिक बरसा हो उस वर्ष तो चना ही अधिक बोये ॥ २९८ ॥

ऋतु एवं मास के अनुसार पथ्य सेवन

सावन हर्रें भादों चीत, क्वार मास गुड़ खायउ मीत।
कातिक मूली अगहन तेल, पूसमें करै दूधसे मेल ॥
माघ मास घिउ खिचड़ी खाय, फागुन उठिके प्रात नहाय।
चैत मासमें नीम बेसहती, वैसाखेमें खाय जड़हथी ॥
जेठ मास जो दिनमें सोवै, ओकर जर असाढ़में रोवै ॥२९९॥

सावन में हर्रें, भादों में चीता, क्वार में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध, माघ में घी-खिचड़ी, फागुन में प्रातःकाल स्नान, चैत्र में नीम, वैसाख में जड़हन का भात—जो इन चीजों के

अनुसार सेवन करेगा और जो जेष्ठ के महीने में दिन में शयन करता है उसका अषाढ़ में होने वाला ज्वर रोता है अर्थात् उसके पास नहीं आता ।। २९९ ।।

सधुवै दासी चोरै खाँसी, प्रेम विनासै हाँसी ।
घग्घा उनकी बुद्धि विनासै, खाए जो रोटी बासी ।।३००।।

अर्थ—साधु को दासी, चोर को खाँसी और प्रेम को हँसी नाश कर देती है । और घाघ कवि कहते हैं कि जो बासी रोटियाँ खाता है तो वह उसकी बुद्धि को विशेष रूप से नष्ट कर देती है ।। ३०० ।।

+ साग-सब्जी (तरकारी)

तरकारी है तरकारी, यामें पानी की अधिकारी ।।३०१।।

यह तरकारी है तरकारी अर्थात् शाक सब्जी सर्वदा तरावट चाहती है, इसमें पानी अधिक लगता है ।। ३०१ ।।

+ हमारे धर्म-प्राण देश भारत में और वह भी मुख्यतः उत्तर-प्रदेश में भोजन म साग-भाजी का अपना एक महत्त्व है । साग-भाजी में कार्बोहाइग्नेट, प्रोटीन, चिकनाई, खाने के पदार्थ और विटामिन आदि भोजन के मुख्य अंश हमें प्राप्त होते हैं और ये हमारे बड़े उपयोगी हैं । इन्हीं के द्वारा हम अपने भोजन को संतुलित बना सकते हैं । क्योंकि इस समय हमारे देश में धनाभाव तथा दूध, दही और घी की कमी होने के कारण हमें इन्हीं साग-सब्जियों पर निर्भर रहना पड़ता है। भोजन को पुष्टिकर, पाचक और संतुलित आहार बनाने में साग-सब्जी का रसा सर्वोत्तम है । यदि साग-सब्जी के उत्पादन को बढ़ाया जाय तो उससे अधिक जनता का स्वास्थ्य सुधर सकता है । क्योंकि फलों की अपेक्षा साग-सब्जी आसानी से पैदा की जा सकती है । इनमें सभी प्रकार के विटामिन होते हैं और थोड़े समय में ही पैदा हो जाती है और सस्ती भी पड़ती है । अतः पाठशाला, पञ्चायत घर सभी स्थानों पर साग-सब्जियाँ पैदा की जायें । जनता और कृषक

भी अधिक संख्या में साग-सब्जी पैदा करें। शहरों में भी इसका प्रचार हो। गमलों में भी लोग साग-सब्जी पैदा करें। इसमें भी खरीफ और रबी की दो फसलें होती हैं। खरीफ की सब्जी में भिंडी, लौकी, तुरई, टमाटर, बैंगन, क़ाशीफल, मिर्च और टिन्डे आदि हैं।

(२) रबी की सब्जी—मूली, गाजर, शलजम, फूलगोभी, पातगोभी, टमाटर, बैगन आदि।

(३) जायद की सब्जियों में कुछ सब्जियाँ ऐसी होती हैं जो तीनों ऋतुओं में पैदा होतीं हैं। जैसे बैगन, टमाटर आदि। जायद में लौकी, भिंडी, तुरई, काशीफल, ककड़ी, टिन्डे आदि पैदा होते हैं। कुछ सब्जियों के बीज सीधे खेत में बोये जाते हैं तथा कुछ के पौधे तैयार किए जाते हैं। अतः पौधा बड़ी सावधानी व चतुराई से तैयार करना चाहिये।

महाकवि की नीति सम्बन्धी तथा अन्य रचनायें

एक मास ऋतु आगे धावे।
आधा जेठ अषाढ़ कहावे ॥३०२॥

प्रत्येक ऋतुएँ एक मास पहले ही से अपने लक्षण व्यक्त करने लगती हैं। आधे ज्येष्ठ से ही अषाढ़ कहलाने लगता है ॥३०२॥

एक मास दो गहना।
राजा मरै कि सहना ॥३०३॥

शब्दार्थ—गहना = ग्रहण। सहना = प्रजा का प्रधान व्यक्ति।

अर्थ—यदि एक ही महीने में दो ग्रहण लगे तो जानो कि राजा मरेगा या उसकी सेना ही मरेगी ॥ ३०३ ॥

जै दिन भादौं बहै पछार।
तै दिन पूस में पड़े तुषार ॥३२०॥

शब्दार्थ—पछार=पछुवा हवा। तुषार=पाला।

अर्थ—जितने दिन भादों में पछुवा हवा बहे अर्थात् चले तो जानो उतने ही दिन पौष में पाला पड़ेगा॥ ३०४॥

दो तोई घर खोई॥ ३०५॥

शब्दार्थ—तोई=तवा।

अर्थ—एक घर में दो तवा चढ़ने से वह घर नष्ट हो जाता है। अलगाव अच्छा नहीं॥ ३०५॥

माघ मास जो परै न सीत।
महँगा नाज जानियो मीत॥ ३०६॥

अर्थ—यदि माघ महीने में जाड़ा न पड़े, तो हे मित्र! यह निश्चय जानो कि अनाज महँगा होगा॥ ३०६॥

मघा में मक्कर पूर्वा डाँस।
उत्तरा में भया सबका नाश॥ ३०७॥

मघा नक्षत्र में मक्कर (मकड़ी) और पूर्वा नक्षत्र में डाँस, पशुओं को डँसने वाले बड़े-बड़े मच्छड़ डंस, पैदा हो जाते हैं और उत्तरा नक्षत्र आने पर इन सबका नाश हो जाता है॥ ३०७॥

मंगलवार जो होय दिवारी।
हँसै किसान रोवे ब्योपारी॥ ३०८॥

यदि दीपावली मंगलवार को होवे तो वह किसानों को हंसाती एवं शुभकर है और व्यापारियों को रुलाती है अर्थात् अच्छी नहीं॥ ३०८॥

तीन बल घर में दो चाकी।
पूरब खेत राजकी बाकी॥ ३०९॥

यदि घर में तीन बैल हों, दो चक्कियाँ (बँटवारा) हो, पूर्व

दिशा में खेत हो और राजकीय कर या कर्ज का बकाया हो तो ये चारों बातें किसान के लिए बड़ी दुःखद हैं ॥ ३०९ ॥

सावन सूखे धान भादों सूखे गेहूँ ॥३१०॥

धान सावन के सूखा से और गेहूँ भादों के सूखा से अच्छा होता है ॥ ३१० ॥

सावन शुक्ला सप्तमी, उगत न दीखे भान ।
तब लगि देव बरीसि हैं, जब लगि देव उठान ॥३११॥

अर्थ—जब श्रावण शुक्ल सप्तमी को सूर्य उगे हुए न दिखाई पड़ें तो जानो कि वर्षा तब तक होगी कि जब तक देवोत्थानी एकादशी होगी ॥ ३११ ॥

हथियामें हाथ गोड़ चित्रामें फूल ।
चढ़त सेवाती झपा झूल ॥३१२॥

हस्त नक्षत्र में उर्द (उड़द), अपनी नाल फैलाता तथा चित्रा नक्षत्र में फूलता है और स्वाती नक्षत्र चढ़ते ही उसके फलियों के झोंपे झूलने लगते हैं ॥३१२॥

हसुवा ठाकुर खसुआ चोर ।
इन्हें ससुरवा गहिरे बोर ॥३१३॥

हँसकर बात करने वाला ठाकुर (मालिक) और खाँसने वाले चोर समूहों को जब पकड़ पाओ तो गहरे पानी में ले जाकर डुबो दो, क्योंकि ये अच्छे नहीं होते ॥ ३१३ ॥

हरहट नारी बाँस एकाह ।
परुवा बरद सुहुत हरवाह ॥
रोगी हाथ होय इकलन्त ।
कहैं घाघ ई विपतिक अन्त ॥३१४॥

शब्दार्थ—हरहट = दुष्ट, इधर-उधर चक्कर लगाने वाली। एकाह=एकान्त, परुआ = कादर, खेत में बैठ जाने वाला। बरद = बैल। सुहुत = सुस्त। एकाकी = अकेला।

अर्थ—घाघ कहते हैं, दुष्ट स्त्री, एकान्त का वास; कादर बैल, सुस्त हलवाहा और रोगी का अकेले एकान्त में वास, ये विपत्ति के अन्त हैं॥ ३१४॥

हलकन बेंट कुदारी, हो गोहरावै नारी।
भैया कहिके माँगै दम्मा, तीनों काम निकम्मा॥३१५॥

शब्दार्थ—हलकन = ढीला। दम्मा = दाम-पैसा। गोहरावै = बुलावै, पुकारे। निकम्मा व्यर्थ।

अर्थ—कुदाल की बेंट का ढीलापन, स्त्री को हो कहकर बुलाना, और भैया कहकर जो अपना दाम या पैसा माँगे, तो यह तीनों काम व्यर्थ है॥ ३१५॥

अगसर खेती अगसर मार।
कहैं घाघ ते कबहूँ न हार॥३१६॥

घाघ कवि का कहना है कि आगे की खेती, अर्थात् पहले बोई गयी खेती, और आगे अर्थात् पहले की हुई मार, या मार देना अथवा जो पहले ही मार देते हैं, कभी नहीं हारते॥ ३१६॥

घरकी खुनुस और जरकी भूख, छोट दमाद बराहे ऊख।
दूबर खेती बउरहा भाय, घाघ कहैं दुख कहा न जाय॥३१७॥

शब्दार्थ—खुनुस = रंज, रंजिश। जरकी=बुखार की। बराहे=सूखे, सूखती हुई। दूबर = कमजोर। बउरहा = बेवकूफ, नालायक।

अर्थ—घाघ कवि का कहना है कि घर की रंजिश और ज्वर के समय में भी भूख, छोटा दामाद, और (पानी बिना या रोग

से भी) सूखती हुई ईंख। कमजोर खेती और मूर्ख भाई हो तो यह दुख कहाँ समायेगा अर्थात् असह्य है ॥ ३१७ ॥

घर घोड़ा पैदल चले, तीर चलावै बीन।
थाती धरै दमाद घर, जग में भकुआ तीन ॥३१८॥

अर्थ—घर में घोड़ा रहते हुए भी जो पैदल चले, जो बीन-बीन कर तीर चलावे। और जो अपना धन दामाद के घर रक्खे, संसार में ये तीनों ही वेवकूफ हैं ॥ ३१८ ॥

साँझे से परि रहती खाट, पड़ी भंड़हर बारहघाट।
घर आँगन सब घिन-घिन होय, घाघ गहिरे देव डुबोय ॥३१९॥

अर्थ—घाघ कवि फूहड़ स्त्री के सम्बन्ध में कहते हैं कि, ऐसी स्त्री जो सन्ध्या समय होते ही चारपाई डालकर सो रहती है और घर के बर्तन भाँड़े इधर-उधर बिखेरे रहती है। क्या घर, क्या आँगन सब जगह सफाई के बिना घिनौना होता है, उसे गहरे जल में डुबो देना चाहिये ॥ ३१९ ॥

अंतरे-खोतरे डंड करै, ताल नहाय ओसमाँ परै।
देव न मारे आपुई मरै ॥३२०॥

शब्दार्थ—अँतरे-खोंतरे = नागा देकर, कभी-कभी। डंड = कसरत, वर्जिश। तार = तालाब, पोखरा।

अर्थ—जो कभी-कभी या नागा देकर कसरत करता है और तालाब में स्नान और ओस में सोता है, उसे ईश्वर नहीं मारते, वह स्वयं ही मरता है। भावार्थ—ऐसा नहीं करना चाहिये ॥ ३२० ॥

विप्र टहलुआ चीक धन औ बेटी की बाढ़।
याहू पर धन ना घटै तो करै बड़नसे राढ़ ॥३२१॥

यदि ब्राह्मण को टहलुआ अर्थात् सेवक, पैर दबाने आदि का उससे निन्द्य कर्म कराया और यदि कसाई का काम करे अथवा बकरियाँ

पाले और यदि घर में पुत्रियों की अधिकता हो, यदि इस पर भी धन न घटता हो तो बड़ों से झगड़ा कर लो। अर्थात् ये सब दरिद्र होने के लक्षण हैं ॥ ३२१ ॥

घरमें नारी आँगन सोवै, रनमें चढ़िके छत्री रोवै।
रातमें सतुआ करैं बिआरी, घाघ मरै तेहिकर महतारी ॥३२२॥

यदि घर में रहनेवाली स्त्री आँगन में सोती है और यदि युद्ध के मोर्चे पर चढ़ क्षत्री रोने लगे, और जो रात्रि में सत्तू खाता है, घाघ कवि कहते हैं कि जानो उसका माँ मर गई है अथवा उसकी माता मर जावे ॥ ३२२ ॥

घाघ बात अपने मन गुनहीं।
ठाकुर भगत न मूसर धनुहीं ॥३२३॥

घाघ कवि अपने मनमें सोच-समझकर कहते हैं कि, ठाकुर अर्थात् क्षत्री भक्त नहीं होता और मूसर धनुष नहीं हो सकता ॥ ३२३ ॥

आमा नीबू बनियाँ, गर चाँपे रस देयँ।
कायथ कौआ ककरहा, मुर्दाहू से लेयँ ॥३२४॥

आम, नीबू और बनियाँ गला दबाने पर रस देते हैं। कायस्थ, कौआ और कक्कड़हा ये मुर्दे से भी लेते हैं ॥ ३२४ ॥

अहिर मिताई, बादर छाहीं।
होवै होवै, तो नहिं नाहीं ॥३२५॥

अहिर की मित्रता और बादल की छाया एक समान है। जो हुई तो हुई और नहीं तो नहीं ॥ ३२५ ॥

प्रातकाल खटिया से उठिके, पियै तुरन्तै पानी।
ता घर वैद कभी ना आवै, बात घाघके जानी ॥३२६॥

प्रात:काल चारपाई से उठते ही तुरन्त पानी पीना चाहिए। (जो ऐसा करता है) उनके घर वैद्य कभी नहीं आते, घाघ की यह बात (सत्य) जानो ॥ ३२६ ॥

बिन बैलन खेती करै, बिन भैयनके रार।

बिन मेहरारू घर करै, चौदह साख लबार ॥३२७॥

बिना बैलों के खेती करने वाला और बिना भाइयों के भी झगड़ा करने वाला और बिना स्त्री के घर करने वाला, जानो इनकी चौदह पुस्त लबार (झूठी) है ॥ ३२७ ॥

आठ कठौती मट्ठा पीवै, सोरह मकुनी खाय।

वाके मरे न रोइये, घरका दारिद जाय ॥३२८॥

जो आठ कठौती भरकर मट्ठा पीता हो और सोलह मोटे अन्नों की (मटर या जौ की) मोटी-मोटी रोटियाँ खाता हो, उसके मरने पर मत रोओ—जानो घर का दरिद्र चला गया ॥ ३२८ ॥

बैल चमकना जोतमें, और चमकीली नार।

ये बैरी हैं जान के, कुशल करैं करतार ॥ ३२९ ॥

जिस किसान की जोत में (जुताई के) बैल चौंकना हों और घर में चमकीली, चटकमटक वाली स्त्री हो, तो जानो ये दोनों ही उसकी जान के शत्रु हैं—ईश्वर ही खैर करें ॥ ३२९ ॥

आपन-आपन सब कोइ होई, दुखमें नाहिं सँघाती कोई।

अन्न वस्त्र खातिर झगड़न्त, घाघ कहैं यह बिपतिक अन्त ॥३३०॥

यों तो सब कोई अपने ही अपने हैं, परन्तु दुःख में कोई साथी नहीं है। घाघ का कहना है कि, अन्न, वस्त्र के लिए सब लड़ाई करते हैं—यह दुःख का अन्त है ॥ ३३० ॥

फूटेसे बहि जातु हैं, ढोल गँवार अङ्गार।
फूटेसे बनि जातु हैं, फूट कपास अनार ॥ ३३१ ॥

ढोल, गँवार (मूर्ख बिना पढ़ा-लिखा), अङ्गार ये तीनों फूट जाने से नष्ट हो जाते हैं। परन्तु फूट (ककड़ी का पका फल), कपास और अनार ये तीनों फूटने से बन जाते हैं ॥ ३३१ ॥

गया पेड़ जब बगुला बैठा, गया गेह जब मुड़िया पैठा।
गया राज जहँ राजा लोभी, गया खेत जहँ जामी गोभी ॥३३२॥

जिस वृक्ष पर बगुला बैठने लगा, जानो वह नष्ट हो गया अर्थात् वह सूख जायेगा और वह घर नष्ट हो गया, जब उसमें साधु-संन्यासी एवं मुँह मुड़ाने वाले कापालिक आदि प्रवेश कर गये। जहाँ का राजा लोभी होता है, वह राज्य चला जाता है तथा वह खेत नष्ट हो जाता है जिसमें गोभी पैदा होती है ॥ ३३२ ॥

सावन सोवे ससुर घर, भादो खाये पूआ।
खेत-खेत में पूछत डोलै, तोहरे केतिक हूआ ॥३३३॥

जब कृषक श्रावण के महीने में तो ससुराल में जाकर सो गया और भादों में इधर-उधर घूम-फिरकर मालपुआ खाता रहा, तब तो वह हर खेत में जा-जाकर अन्य किसानों से यह पूछता ही रहेगा कि कहो भाई ! तुम्हारी कितनी पैदावार हुई ॥ ३३३ ॥

पूत न माने आपन डाँट, भाई लड़ै चहैं नित बाँट ॥३३४॥
मेहरि कलही करकस होय, नियरैं बसल दुष्ट सब कोय ॥३३५॥
मालिक नाहिं न करैं बिचार, घाघ कहैं यह बिपति अपार ॥३३६॥

शब्दार्थ—पूत=पुत्र। डाँट=डाँटना। बाँट=बँटवारा, अलगाव। अपार=जिसका पार न हो। कलही=लड़ाकिन, झगड़ालू ॥३३४॥

अर्थ—जिसका पुत्र उसका डाँट-दबाव न मानता हो। भाई नित्य घर या खेती-वारी, धन-दौलत का बँटवारा चाहता हो। जिसकी स्त्री झगड़ालू हो, ककंशा हो और सभी कोई दुष्ट नजदीक बसते हों।३३५।

मालिक विचार न करता हो, तो घाघ कवि का कहना है कि वहाँ तो विपत्ति का अन्त ही नहीं है॥ ३३६ ॥

सबके कर हर से डर ॥३३७॥

सबकी भलाई करो और ईश्वर से डरो ॥ ३३७ ॥

आठ गाँवका चौधरी, बीस गाँवका राउ।
अपने काम न आवई, अपनी ऐसी तैसी में जाउ॥३३८॥

कोई आठ गाँव का चौधरी और वीस गाँव का राव ही क्यों न हो, यदि अपने काम (उपयोग) में न आवे, तो वह अपनी ऐसी की तैसी में जाय—हमारा उससे क्या प्रयोजन ? ॥ ३३८ ॥

बैल मरकहा चमकुल जोय, वा घर ओरहन नित उठि होय॥३३९॥

यदि किसान का बैल मरकहा अर्थात् मारने वाला हो और स्त्री चमकुल (चटक-मटक से रहनेवाली, तुनुकमिजाजी) हो तो उस घर में सोकर उठते ही नित्य उलाहना आता रहेगा॥ ३३९ ॥

बाछा बैल बहुरिया जोय, ना घर रहै ना खेती होय ॥३४०॥

यदि किसान का बैल बछड़ा हो और स्त्री बहुरिया अर्थात् नववधू हो तो उसका घर ठीक तरह से न रहेगा और न अच्छी खेती होगी ॥ ३४० ॥

ओछो मन्त्री राजै नासै, ताल बिनासै काई।
सानसाहिबी फूट बिनासै, घग्घा पैर बिवाई ॥३४१॥

घाघ कवि का कहना है कि, ओछा अर्थात् छिछोड़ा मत्री, राजा का नाश कर देता है और काई तालाब को विनष्ट कर देती है। ऐसी ही परस्पर की फूट से इज्जत का नाश हो जाता है और पैर की बिवाई आदमी के पैर को नष्ट कर देती है॥ ३४१ ॥

ओछे बैठक ओछे काम, ओछी बातें आठो याम।
घाघ बताये तीनि निकाम, भूलि न लीजौ इनके नाम ॥३४२॥

घाघ कविने बताया है कि, ये तीन काम निकम्मे हैं। १—ओछे मनुष्य में बैठना या उसकी संगत, २—ओछा अर्थात् घटिया दर्जे का काम और ३—हर समय ओछी बातें करना, अतः भूलकर भी इन तीनों के नाम न लो ॥ ३४२ ॥

बिगड़ बिराने जो रहै, मानै तियकी सीख।
तीनों योहीं जायँगे, पाही बोवै ईख ॥३४३॥

जो झगड़ा और क्रोध करके अपना घर छोड़कर दूसरे के घर रहता हो और जो स्त्री की शिक्षा मानता हो और जो दूसरे गाँव में ईख बोता हो—वह सहज ही नुकसान उठाता है ॥ ३४३ ॥

काँटा बुरा करीलका, जो बदरी का घाम।
सौत बुरी है चूनकी, औ साझे का काम ॥३४४॥

करील का काँटा बुरा होता है और बदरी का घाम भी। ऐसे ही यदि सौत आँटे की हो, तो भी बुरा है और साझे का काम भी बुरा होता है ॥ ३४४ ॥

उधार काढ़ि व्योपार चलावै, छप्पर डारै तारो।
सारे के संग बहिन पठावै, तीनोंके मुँह कारो ॥३४५॥

जो उधार लेकर रोजगार चलाता है और छप्पर के घर में ताला लगाता तथा जो साले के साथ अपनी बहन को कहीं भेजता है, तो इन तीनों के मुख में कालिख पुत जाती है ॥ २४५ ॥

बिना माघ घीउ खीचड़ी खाय, बिन गौने ससुरारी जाय।
बिना ऋतुके पहिरै पौवा, घाघ कहैं ये तीनों कौवा ॥३४६॥

जो बिन माघ का महीना आये घी और खिचड़ी खावे या बिना गौना आये जो ससुराल जावे तथा जो बिना ऋतु अर्थात् वर्षा ऋतु के आवे पौवा (एक प्रकार का खड़ाऊँ) पहनता हो—घाघ कवि का कहना है कि ये तीनों कौआ हैं ॥ ३४६ ॥

नोट—कहा जाता है कि घाघ कवि की पतोहू भी कवित्री थी, जब उक्त पद्य घाघ कविने बनाया तो उसे सुनकर उनकी पतोहूने भी यह पद्य बनाकर, उन्हें जवाब दिया कि :—

मन चाहै घिउ खिचरी खाय, मन चाहै ससुरारी जाय ।
करै जोग तें पहिरै पौवा, कहै पतोहू घाघै कौवा ॥३४७॥

अर्थ—स्वभावत: सरल है। कहा भी जाता है, और पाठक स्वयं देखेंगें कि इसी ग्रन्थ में कई स्थानों में उन महाकवि को रचनाओं में समानता लिए उत्तर रूप में तथा और भी साक्षी और हूंकारी भरने के रूप में घाघ कवि की रचना उनकी स्त्री और पतोहू से भी सम्बधित और संलग्न चल रही है ॥३४७॥

बाढ़े पूत पिता के धर्मा, खेती उपजै अपने कर्मा ॥३४८॥

पितृ-धर्मा एवं पितृ भक्त होने से अथवा पिता के धर्मिष्ठ होने से (इन दोनों प्रकारों से) पुत्रों की उन्नति होती है; और खेती तो केवल एक मात्र अपने कर्त्तव्य से ही होती है (यहाँ यह भी कह सकते हैं कि यही पुरुषप्रयत्न है) ॥३४८॥

कलियुगमें दुइ भगत हैं, बैरागी औ ऊँट ।
वै तुलसीवन काटहीं, ये किये पीपर ठूंठ ॥३४९॥

(कविका कथन है कि) कलियुग में भगवान् के दो ही सच्चे भक्त हैं, एक तो बैरागी साधु और दूसरा ऊँट, बैरागी साधु तो तुलसी वृक्ष के बन को काटते हैं, और दूसरा ऊँट, ये तो पीपल के वृक्ष काट-काटकर ठूंठ करते हैं ॥३४९॥

चाकर चोर राज बेपीर, कहैं घाघ का राखै धीर ॥३५०॥

अर्थ—महाकवि घाघ कहते हैं कि, यदि नौकर चोर है और राजा बेरहम है तो ऐसी दशा में धैर्य की रक्षा क्या हो सकेगी ॥ ३५० ॥

जेहि घर साला सारथी, तिरियाकी हो सीख ।

सावनमें बिन हल हवे, तीनों माँगें भीख ॥३५१॥

जिस घर में शाला (स्त्री का भाई) सार भी (घर का रथ-वाहक) होगा और स्त्री की शिक्षा चलती होगी तथा जो किसान सावन के महीने में विना हल की खेती करेगा तो ये तीनों भीख मागेंगे ॥३५१॥

आलस नींद किसानै, नासै चोरै नासै खाँसी ।

अँखियाँ लीबर बेसवै नासै, बाबै हासै दासी ॥३५२॥

आलस और निद्रा किसान को नाश करती है और चोर को खाँसी नाश कर देती है। यदि वेश्या की आँख लिबड़ही, किचड़ही होती है तो वह उसको नष्ट करती है तथा साधु बाबा यदि दासी रख लें, तो वह दासी उन्हें नष्ट कर देती है ॥ ३५२ ॥

परहथ बनिज सदेशे खेती, बिन बर देखे ब्याहे बेटी ।

द्वार पराये गाड़े थाती, ये चारों मिलि पीटैं छाती ॥३५३॥

शब्दार्थ—परहथ = पराये के हाथ में। बनिज = व्यापार, रोजगार। थाती = धन, रुपया-पैसा।

अर्थ—यदि ब्यापार पराये के हाथ से किया जाय और खेती सन्देश पर हो और बिना बर को देखे बेटी का ब्याह करे तथा यदि दूसरे के घर अपना धन रखे तो ये चारों एक समान ही मिलकर मारे दुःख के अपनी छाती पीट-पीट कर रोते हैं ॥ ३५३ ॥

बनियाँक सखरज ठकुरक हीन।
वैदक पूत ब्याधि नहिं चीन॥
पंडित चुपचुप बेस्वा मइल।
कहैं घाघ पाँचों घर गइल॥३५४॥

शब्दार्थ—सखरज=शाहखर्च। ठकुरक=ठाकुरका, क्षत्रिय का लड़का। ब्याधि=रोग। वेस्वा=वेश्या, रंडी।

अर्थ—यदि बनिये का लड़का शाहखर्च हुआ और क्षत्रिय का बेटा कायर हुआ और वैद्य का बेटा रोग नहीं पहचानता, यदि पडित होकर चुप्पा होता है। और वेश्या मैली-कुचैली रहती है, तो घाघ कवि कहते हैं कि पाँचों घर नष्ट हुआ समझो॥ ३५४॥

नारि करकसा कटहा घोर, हाकिम होइके खाइ अँकोर।
कपटी मित्र पुत्र हो चोर, घग्घा इनको गहिरे बोर॥३५५॥

यदि स्त्री कर्कशा (कड़े स्वभाव की) हो, घोड़ा कटहा हो, हाकिम घूसखोर हो और मित्र कपटी हो तथा पुत्र चोर हो, तो घाघ कवि कहते हैं कि, इनको गहराई में डूबो दो॥३५५॥

गृहस्थ के बारह बकार

बाँस, बाँध, बिगहा, बिया, बारी, बेटा, बैल।
ब्योहार बढ़ई बन बबूर, बात सुनो यह छैल॥
जो बकार बारह बसै, सो पूरन गृहस्थ।
औरन को सुख दे सदा, आप रहैं अलमस्त॥३५६॥

अर्थ सरल है॥ ३५६॥

बैल बगौधा निरधिन जोय।
ता घर ओरहन कबहूँ न होय॥३५७॥

कवि कहते हैं कि, जिस गृहस्थ के घरका बैल बगौधा अर्थात् बगनी लगे खूँटे से मजबूत बँधे रहनेवाले हों और स्त्री जिसकी रुपये-पैसे का लेनदेन करती हो, उसके घर उलाहना कभी नहीं होता।३५७।

कुतव सुतानी मरकनी सरनलील कुचकाट।
घग्घा चारों परिहरौ तब तुम पौढ़ो खाट ॥३५८॥

जिस चारपाई पर कुत्ते पेशाव करते हों, जो खाट मरमराती हो, जिसमें आदमी घुस जाता हो अर्थात् टूटी हुई झिलँगा हो और जो नस-कट हो। घाघ कवि का कहना है कि इन चारों को छोड़कर तब तुम दूसरी चारपाई पर सोओ ॥ ३५८ ॥

जेकरे ऊँचा बैठका, जेकर खेत निचान।
ओकर बैरी का करै, जेकर मीत दिवान ॥३५९॥

जिसकी बैठक उच्च जनों में हो और जिसके खेत सिचाई (नीची जमीन) पर हो तथा जिनके मित्र दीवान साहब होंगे—उसका शत्रु क्या कर सकेगा अर्थात् कुछ नहीं ॥ ३५९ ॥

ऊँच अटारी मधुर बतासा।
घाघ कहैं घरहीं कैलासा ॥३६०॥

घाघ कबि कहते हैं कि जिसकी अँटारी (घर का कोठा) ऊंचा हो और उस पर मधुर-मधुर हवा लगती हो, उसको उस घर में ही कैलाश का सुख है ॥ ३६० ॥

जहाँ चारि काछी, उहाँ बात ओछी।
जहाँ चारि कोरी, उहाँ बात ओरी ॥
जहाँ चारि भुँजी, उहाँ बात ऊँझी ॥३६१॥

शब्दार्थ—काछी=अच्छी कोरी—इस नामकी एक चौथे वर्ण की एक जाति। ऊँझी=उलझी हुई।

अर्थ—जहाँ चार काछी रहते हैं, वहाँ अच्छी-अच्छी बातें होती हैं। जहाँ चार कोरी होते हैं वहाँ अन्तिम बात होती है। परन्तु जहाँ चार भुजवा होते हैं वहाँ की बात उलझ जाती है ॥३६१॥

चोर, जुआरी गंठकटा, जार और नार छिनार।
सौ सौगन्धें खाय जौं, घाघ न करु इतबार ॥३६२॥

यदि चोर ज्वाड़ी, गिरहकट, पर-स्त्रीगामी (व्यभिचारी) और छिनार स्त्री, सैकड़ों कसमें खावें तो भी घाघ का कहना है कि इनका विश्वास न करो ॥ ३६२ ॥

कोपै दई मेघ ना होय, खेती सूखै नैहर जोय।
पूत विदेश खाटपर कंत, कहैं घाघ ई विपतिक अन्त ॥३६३॥

यदि ईश्वर के कोप से बादल न हो, जल न बरसे और खेती सूख रही हो तथा स्त्री नैहर में हो। पुत्र विदेश में हो और पति चारपाई पर हो तो घाघ कवि का कहना है कि यह विपत्ति का अन्त है अर्थात् दुःख की चरम सीमा है ॥ ३६३ ॥

जेहिकी छाती होय न बार।
ओहिसे सदा रहो हुशियार ॥३६४॥

जिसकी छाती में बाल न हो उससे सदा होशियार रहो ॥३६४॥

कोदो मड़ुआ अन नहीं, जोलहा धुनियाँ जन नहीं ॥३६५॥

जैसे कोदो और मड़ूआ अन्न नहीं हैं, वैसे ही जोलहा और धुनियाँ मनुष्य नहीं हैं ॥ ३६५ ॥

एक तो बसा सड़क पर गाँव, दूजे बड़े-बड़नमें नाव ।
तीजे पड़े दरबसे हीन, घग्घा हमको विपदा तीन ॥ ३६६ ॥

एक तो हमारा गाँव सड़क पर बसा है, दूसरे बड़े-बड़ों में नाम है, और तीसरे द्रव्य से हीन हूँ—घाघ कहते हैं कि मुझको यह तीन प्रकार की विपत्ति है ॥ ३६६ ॥

खेती करै बनिजको धाँवै, ऐसा डूबै थाह न पावै ॥ ३६७ ॥

यदि खेती करने वाला रोजगार करने दौड़ता है तो वह ऐसा जा डूबता है कि कहीं थाह या स्थान नहीं पाता ॥ ३६७ ॥

कारी संचै तीतर खाय, पापीको धन पर ले जाय ॥ ३६८ ॥

जैसे चींटी के संचित अन्नको तीतर खा जाते हैं, वैसे ही पापी के धन को दूसरे ही लोग ले जाते हैं ॥ ३६८ ॥

जाको मारा चाहिए, बिन मारे बिन घाव ।
वाको यही बताइये, घुइयाँ पूरी खाव ॥ ३६९ ॥

जिसको बिना चोट के मारना चाहिए, उसको यही बतलाइये कि तुम घुइयाँ (अरवीका शाक) और पूरी खाओ ॥ ३६९ ॥

खेत न जोतै राढ़ी, न भैंस बेसाहै पाड़ी ।
न मेहरी मरद के छाँड़ी, क्यों पावै विपदा गाढ़ी ॥३७०॥

शब्दार्थ—राढ़ी=राढ़ी नामक एक प्रकार की मजबूत घास, कास नामक घास । बिसाहै=खरीदे । पाड़ी=भैंस की बच्ची, पड़िया । मेहरी=स्त्री । पावे=उठावे ।

अर्थ—जिस खेत में काश नामक घास लगती हो उसे न जोतो और न पड़िया खरीदो । पुरुष की त्यागी हुई स्त्री को न रखो—ऐसा करके कठिन विपत्ति क्यों उठाते हो ? ॥ ३७० ॥

खेती पाती बीनती और घोड़ेकी तंग।
अपने हाथ सँवारिये तब जीय रहे आनन्द ॥ ३७१ ॥

खेती करना, चिट्ठी लिखना, विनती करना और घोड़े की तंग (पेटी) कसना, जब यह अपने ही हाथ से सँवारे, या करे तभी चित्त में आनन्द रहता है ॥ ३७१ ॥

छज्जेकी बैठक बुरी, परछाहीं की छाँह।
निअरेका रसिया बुरा, नित उठि पकरै बाँह ॥ ३७२ ॥

कोठे के छज्जे की बैठक और परछाहीं की छाया बुरी है, (ऐसे ही) नजदीक का प्रेमी बुरा है कि, जो प्रतिदिन सोकर उठते ही उठते बाहें पकड़ता है ॥ ३७२ ॥

भूरी हथिनी चँदुली जोय।
पूस महावट बिरले होय ॥ ३७३ ॥

भूरे रंग की हथिनी और गंजे शिरकी स्त्री और पौष मास की वर्षा बिरले ही को प्राप्त होती है ॥ ३७३ ॥

चार छावैं तीन निरावैं, तीन खाट दो बाट ॥ ३७४ ॥

छप्पर की छवाई में चार आदमी, खेती से खरपतवार निकालने एवं निराई करने के लिए कम से कम तीन आदमी और चारपाई बिनने के लिए तीन और रास्ता चलने के लिए कम से कम दो आदमी का साथ रहना चाहिए ॥ ३७४ ॥

लरिका ठाकुर बूढ़ दिवान।
मामिला बिगड़ै साँझ बिहान ॥ ३७५ ॥

यदि ठाकुर (स्वामी, मालिक) लड़का (कम उम्रका) हो और मन्त्री

बूढ़ा हो, तो मामला-मुकदमा या कामकाज साँझ-सवेरे में बिगड़ जावे ॥ ३७५ ॥

निहपछ राजा मन हो हाथ । साधु परोसी नीमन साथ ।
हुकुमी पुत्र धिया सतवार । तिरिया भाई रखै विचार ।
कहैं घाघ हम रत विचार । बड़े भागसे दे करतार ॥३७६॥

जिसको निष्पक्ष राजा मिले, मन उसके साथ हो अर्थात् वह स्वयं विचारवाला हो, पड़ोसी सीधा-सादा सन्त-सा हो और मित्र अच्छे हों, धनी-मानी बलवान हों। पुत्र आज्ञा पालक हों। पुत्री सत्यवती हो और उसकी स्त्री और उसके भाई उसका विचार कर अच्छा व्यवहार रखते हों तो मैं घाघ कवि विचार कर कहता हूँ कि यह ईश्वर उसे बड़े भाग्य से देता है ॥ ३७६ ॥

तीन बैल दुइ मेहरी।
काल बैठ या डेहरी ॥३७७॥

जिस किसान के पास तीन बैल और दो स्त्री हों तो जानो कि इसके डेहरी में या इसके द्वार पर काल बैठा ही है ॥ ३७७ ॥

जोइगर बंसगर बुझगर भाई।
तिय सतवन्ती नीक सुहाई।
धन पुत हो मन होय विचार।
कहैं घाघ ई सुक्ख अपार ॥३७८॥

जिसके भाई स्त्री वाले अर्थात् विवाहित, बलवान् एवं लाठी-डंडा रखने वाले और समझदार हों। अच्छी सुन्दरी और पतिव्रता स्त्री हो, धन और पुत्र हों और उनके मन में विचार हो अर्थात् वे विचारशील हों तो घाघ कवि का कहना है कि अपार सुख है ॥३७८॥

ना अति बरषा ना अति धूप ।
ना अति बकता ना अति चूप ॥३७९॥

अर्थात्—न तो अधिक वर्षा अच्छी है न अधिक धूप। ऐसे ही न तो अधिक बकनेवाला ही अच्छा है और न अधिक चुप्पा ही ॥ ३७९॥

खाइके मूतै सूतै बाउँ । काहे बैद बसावै गाउँ ॥३८०॥

जो खाने के पश्चात् पेशाब करले और जाकर बाँये करवट सोवे तो गाँव में वैद्य को क्यों बसावे अर्थात् वैद्य को क्यों बुलावे ? ॥३८०॥

सारि के टरि रहै, खाय के परि रहै ॥३८१॥

अर्थ—सरल है ॥ ३८१ ॥

बूढ़ा बैल बेसाहै, झीना कापड़ लेय ।
आपुन करै नसौनी, दैवे दूषण देय ॥३८२॥

जो बूढ़ा बैल खरीदता और झीना, झझरा—बारीक कपड़े लेता है वह अपने ही नाश के कर्त्तव्य करता है और दैव का दोष देता है ॥ ३८२ ॥

मुये चामसे चाम कटावै, भुइँ सँकरी माँ सोवै ।
कहैं घाघ ये तीनों भकुवा, उढ़र गये पर रोवै ॥३८३॥

जो मरे चमड़े से अपना चमड़ा कटा लेवे अर्थात् शौकीनी से कड़ा जूता खरीदकर पहने और अपने पैर को उस मुए चमड़े से कटा लेता है और तंग जमीन में सोता है तथा जो स्त्री के भाग जाने पर रोता है—घाघ कहते हैं कि ये तीनों ही मूर्ख हैं ॥ ३८३ ॥

रॉड़ मेहरिया अनाथ भैंसा।
जब बिचलैं तब होवै कैसा ॥३८४॥

विधवा स्त्री और अनाथ (लावारिस, छुट्टा,) भैंसा—जब ये बिगड़ जावें, अथवा क्रुद्ध होकर लड़ने लगें, तो कैसा हो ? अर्थात् बड़ी कठिनाई हो जाती है, खैर नहीं होता ॥ ३८४ ॥

भैंस सुखी जब भड़िया परै।
रॉड़ सुखी जब सबका मरै ॥३८५॥

भैंस तो तब सुखी होती है, जब वह भँड़िया (भूमि पर जलस्तरसे बना एक गड्ढा, जिसमें पानी तो थोड़ा और कीचड़ ही विशेष होता है) में पड़े। क्योंकि भड़िया में जाकर भैंस खूब लोट-पोट करती है। ऐसे ही विधवा स्त्री तब सुखी होती है, जब उसकी तरह सबका पति मरे। कवि के कथन का यह अभिप्राय है कि वह अपने ही जैसा सबको चाहती है, अथवा उसका ऐसा ही कुछ स्वभाव हो जाता है ॥३८५॥

भुइयाँ खेड़े हर हों चार। घर हो गिहथिन गऊ दुधार।
रहरकी दाल जड़हनकै भात। गागल निबुआ औ घिउ तात॥
दही खाँड़ जो घरमें होय, बाँके नैन परोसै जोय।
कहैं घाघ तब सबही झूठा, उहाँ छाँड़ि इहवैं बैकुण्ठा ॥३८६॥

जिसके गाँव की जमीन हो और उसपर चार हल हों अथवा जिसके चार हल की खेती हो और उसके घर में गृहस्थी के कार्यों में दक्ष स्त्री हो और अच्छा दूध देनेवाली गौ हो। जिसे अरहर की दाल और जड़हन के भातके साथ रसदार नीबू और गरम घी मिलता हो।

यदि उसके घर में दही और शक्कर विद्यमान है, (कवि कहता है कि) उसके लिए वहाँ छोडकर यहीं स्वर्ग अर्थात् वैकुण्ठ है ।। ३८६ ।।

परमुख देखि अपनमुख नोवै । चूरी कंकन बेसहि टोवै ।
आँचर टारिके पेट देखावै । अब छिनारिका ढोल बजावै ।।३८७।।

अर्थ सरल है ।।८७।।

झिलँगा खटिया बातल देह ।
तिरिया लम्पट हाटे गेह ।।
बेगा बिगरिके मुदई मिलन्त ।
घाघ कहै यह बिपति के अन्त ।।३८८।।

घाघ कवि का कहना है कि, झिलंगा खटिया (चारपाई), बात-रोगी रहे कुलटा स्त्री, बाजार में घर, भाई से बिगाड़कर, शत्रु से मिल जाना—यह विपत्तिका अन्त है ।। ३८८ ।।

नसकट खटिया दुलकन घोर ।
घाघ कहैं यह बिपतिके ओर ।।३८९।।

कवि का कहना है कि छोटी चारपाई और दुलकी चालका घोड़ा यह विपत्ति का अन्त है ।। ३८९ ।।

ढीठ पतोहू धिया गरियार, खसम बेपीर न करै विचार ।
घरे जलावन अन्न न होई, घाघ कहैं सो अभागी जोई ।।३९०।।

जिसकी पुत्र-बधू ढीठ अर्थात् निडर हो, पुत्री काम-काज में गादर हो, पति अविचारी और बेदर्द हो, घर में जलावन के लिए लकड़ी और भोजन बनाने के लिए अन्न न हो तो वह स्त्री भाग्यहीन है ।। ३९० ।।

ताका भैंसा गादर बैल, नारि कुलच्छन बालक छैल।
इनसे बाँचे चतुरा लोग, राज छाँड़िके साधै योग ॥३६१॥

तिरछा देखने वाला भैंसा, गादर (परुवा, कादर) बैल और कुलक्षण स्त्री, शौकीन बेटा—इन चारों से चतुर जनों को सदैव बचना चाहिए अन्यथा राज्य का भी सुख हो, तो उसे भी त्यागकर योग की साधना करे ॥ ३९१ ॥

धौले भले हैं कापड़े, धौले भले न बार।
अच्छी काली कामरी, काली भली न नार ॥३६२॥

सफेद वस्त्र तो अच्छे हैं, परन्तु सफेद बाल अच्छे नहीं लगते। काली कमली अच्छी लगती है, परन्तु काली स्त्री नहीं ॥३९२॥

नसकट पनहीं बतकट जोय, जो पहिलौठी बिटिया होय।
दूबर खेती बउरहा भाय, घाघ कहैं दुख कहाँ समाय ॥३६३॥

घाघ कहते हैं—यदि जूता पैरों की नस काटने वाला हो एवं एँड़ी की नस काटता हो और स्त्री बात काट देने वाली हो तथा जो पहले-पहल कन्या पैदा हुई हो, कमजोर खेती हो और भाई बेवकूफ हो तो यह दुःख कहाँ समायेगा ? ॥ ३९३ ॥

नीचनसे ब्योहार बसावै, हँसिके माँगे दम्मा।
आलस नींद निगोड़ी घेरे, घग्घा तीन निकम्मा ॥३६४॥

घाघ कवि कहते हैं—जो दुष्टों से व्यवहार एव मित्रता करता है, हँसकर जो अपना पैसा माँगता है और जिसे निगोड़ी नींद और आलस्य घेरे रहता है, तो ये तीनों ही निकम्मे हैं ॥ ३९४ ॥

इन श्वेत बालोंके सम्बन्धमें महाकवि केशवदास ने भी कहा है—
"उजरी उजरी सब भली, उजरी भली न केस।
कामिनि रवै न रिपु नवै, न आदर करै नरेस।"

निचै खेती दुसरे गाय, नाहीं देखै तेकर जाय।
घर बैठल जो बनवै बात, देहसें वस्त्र न पेटसें भात ॥३६५॥

जो दूसरे गाँव में खेती करके नित्य उसे देखने नहीं जाता, तो उसकी खेती चली जाती है। और जो घर में बैठे ही बैठे बातें बनाता है उसे शरीर पर न वस्त्र रहता है, न पेट भर भात ही पाता है अर्थात् वह अन्न-वस्त्र विना मरने लगता है ॥ ३९५ ॥

भेदिया सेवक सुन्दरि नारि।
जीरन पट कुराज दुख चारि ॥३६६॥

जासूसी करने वाला नौकर और सुन्दर स्त्री, पुराना वस्त्र और बुरा राज्य, ये चारों दु:खदायी होते हैं ॥ ३९६ ॥

माँते पूत पिता ते घोर।
नाहीं ढेर तो थोरे थोर ॥३९७॥

पुत्र में माता का अंश होता है—अथवा माता से पुत्र का अंश माना है—यह मनुष्य जाति की दशा है। परन्तु घोड़े में पिता का अंश होता है, अधिक नहीं तो थोड़ा-थोड़ा अवश्य होता है ॥३९७॥

माघ पूस की बादरी, और कुवारा घाम।
ये दोनों जो कोइ सहे, करे पराया काम ॥३६८॥

माघ और पौष के महीने में बदली और आश्विन (क्वार) के महीने की धूप—इन दोनों को जो सह सके वही पराया काम कर सकता है ॥ ३९८ ॥

———

भड्डरी की कहावतें

आर्द्रा तो बरसे नहीं, मृगशिर पौन न जोय।
तो जानै यों भड्डरी, बरसा बूँद न होय ॥ १ ॥

यदि वर्षा का मुख्य नक्षत्र आर्द्रा में वर्षा न हुई, और मृगशिर नक्षत्र में वायु न चला, तो भड्डरी इस प्रकार जानता है कि एक बूँद भी वर्षा न होगी ॥ १ ॥

आसाढ़ी पूनो दिना, बादर भीनो चन्द।
सो भड्डर जोसी कहै, सकल नरा आनन्द ॥ २ ॥

जब अषाढ़ पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा बादल में छिपे हों तो उसे भड्डर ज्योतिषी कहते हैं कि सब मनुष्य आनन्द से रहेंगे ॥२॥

आसाढ़ी पूनो दिना, गाज बीज बरसन्त।
नासै लक्षन कालका, आनन्द मानैं सन्त ॥ ३ ॥

जब अषाढ़ पूर्णिमा के दिन बादल गरजे और बिजली भी चमके तो अकाल का लक्षण नाश होता है और मानों सज्जनों को आनन्द होता है ॥ ३ ॥

आषाढ़ मास आठे अँधियारी, जो निकले चन्दा जलधारी।
चन्दा निकले बादल फोर, साढ़े तीन मास बरखा का जोर ॥४॥

यदि अषाढ़ वदी अष्टमी को चन्द्रमा बादल से छिप कर निकले, तो जानो कि साढ़े तीन महीने तक वर्षा का वेग रहेगा ॥ ४ ॥

अषाढ़ मास पूनो दिवस, बादल घेरे चन्द।
तो भड्डर जोसी कहैं, होवे परम अनन्द ॥ ५ ॥

यदि आषाढ़ की पूर्णिमा के दिन बादल चन्द्रमा को घेरे, तो भड्डर ज्यौतिषी कहते है कि, बड़ा आनन्द होता है ॥ ५ ॥

अगहन द्वादश मेघ अखाड़ ।
अषाढ़ बरसै अछना धार ॥ ६ ॥

जब अगहनकी द्वादशीको आकाश में मेघों का अखाड़ा लगे तो जानों आषाढ़ में (आसाढ़ मास में अछनाधार (घोर) वर्षा होगी ॥६॥

अद्रा भद्रा कृत्तिका, आद्रा रेख मघाहिं ।
चन्द्रा ऊगै दूज को, सुखमें नरा अघाहिं ॥ ७ ॥

जब दूज का चन्द्रमा आद्रा, कृत्तिका, श्लेषा और मघा नक्षत्र में होकर उदय होवे, तो समझो कि मनुष्य सुख से तृप्त होंगे ॥ ७ ॥

आगे रवि पीछे चले, मङ्गल जो आषाढ़ ।
तो बरसै अनमोल ही, भूमि अनन्दै बाढ़ ॥ ८ ॥

यदि अषाढ़ में सूर्य आगे और मंगल पीछे चलते हों, तो अनमोल अर्थात् बहुत पानी बरसेगा और पृथ्वीपर आनन्द की वृद्धि होगी ॥८॥

अखैतीज तीथिके दिना, गुरु होवै संजूत ।
तो भाखै यों भडडरी, उपजै नाज बहूत ॥ ९ ॥

यदि वैशाख अक्षय तृतीया के दिन बृहस्पतिवार पड़े तो भड्डरी इस प्रकार भविष्य वाणी करता है कि अन्न बहुत उत्पन्न होगा ॥९॥

असनी गलिया अन्न विनासै, गली रेवती जलको नासै ।
भरनी नासै तृनी सहूतो, कृतिका बरसै अन्न बहूतो ॥१०॥

यदि चैत के अन्त में अश्विनी नक्षत्र बरसे तो समझो कि चौमासे के अन्त में सूखा पड़ेगा और रेवती बरसे, तो समझो कि वर्षा न होगी

यदि भरणी नक्षत्र वर्षा कर दे तो कड़ा सूखा पड़े और तृण तक का नाश हो जावेगा और कृतिका बरसे तो अन्न बहुत अच्छा होगा; और वर्षा अच्छी होगी ॥ १० ॥

असनी गल भर भीगली, गलियो ज्येष्ठा मूर ।
पुरुवाषाढ़ा बचे धूल किन, उपजे सातौ तूर ॥ ११ ॥

जब अश्विनी, भरनी, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रों ने वर्षा करके गलियों को भर दिया, तो पूर्वाषाढ़ा में कितनी धूलि बचेगी, इसलिए जानो कि सातो प्रकार के अन्नों की पैदावार अच्छी होगी ॥ ११ ॥

कातिक सुदी एकादशी, बादल बिजली होय ।
तो आषाढ़ में भड्डरी, बरखा चोखी होय ॥१२॥

जब कातिक शुक्ल एकादशी को बादल-बिजली होवे तो भड्डरी का कहना है कि, आषाढ़ में वर्षा उत्तम होगी ॥ १२ ॥

कातिक मावस देखो जोसी, रवि शनि भौमवार जो होसी ।
स्वाती नखत अस आयुष जोग, काल पड़ै अरु नासे लोग ॥१३॥

जब कार्तिक की अमावस्या के दिन रविवार, शनिवार और मंगलवार पड़ जावे और स्वाती नक्षत्र तथा आयुष्य जोग भी पड़े तो ऐ ज्योतिषियों ! देखो, अकाल पड़ेगा और लोगों का नाश भी होगा ॥१३॥

कातिक सुदी पूनो दिवस, जो कृतिका रिख होइ ।
तामें बादर बीजुरी, जो संयोग सों होइ ॥ १४ ॥

यदि कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के दिन कृत्तिका नक्षत्र हो और उसमें बादल और बिजली का भी संयोग हो, तो भड्डरी कहते हैं कि चारों महीना वर्षा होगी ॥ १४ ॥

उतरे जेठ जो बोलै दादर ।
कहैं भड्डरी बरसै बादर ॥ १५ ॥

यदि ज्येष्ठ उतरते दादुर (मेढ़क) बोलने लगे तो भड्डरी कहते हैं कि (इस वर्ष) बादल बरसेंगे ॥ १५ ॥

तीतर बरनी बादरी, रहै गगन पर छाय ।
कहै घाघ सुन भड्डरी, बिन बरसे ना जाय ॥१६॥

घाघ कहते हैं कि—हे भड्डरी ! सुन जब आसमान पर तीतर वर्ण के बादल छाये हों तो बिना बरसे नहीं जा सकते ॥ १६ ॥

तीतर बरनी बादरी, विधवा काजर रेख ।
वह बरसै वह घर करै, कहैं भड्डरी देख ॥१७॥

जब आकाश में तीतर वर्ण के बादल हो और विधवा स्त्री के आँखों में काजल की रेखा दिखाई पड़े तो समझना चाहिए कि वह बदली तो जल बरसायेगी और विधवा स्त्री दूसरा घर करेगी ॥ १७ ॥

उत्तरा उत्तर दे गई, हस्त गयो मुख मोरि ।
भली बिचारी चित्रा, परजा लेइ बहोरि ॥ १८ ॥

उत्तरा तो उत्तर (जवाब) ही दे गई और हस्त (हथिया) नक्षत्र ने भी मुंह मोड़ लिया । बिचारी चित्रा ही भली है कि, प्रजा अपने बोये बीजको बटोर तो लेगी ॥ १८ ॥

कर्क के मंगल होयँ भवानी ।
दैव मूली बरसेंगे पानी ॥ १९ ॥

शिवजी पार्वतीजी से कहते हैं कि—हे भवानी ! जब मंगल कर्क लग्न के होंगे तो देव पृथ्वी पर खूब पानी बरसेंगे ॥ १९ ॥

कलसे पानी गरम है, चिड़िया न्हावै धूरि ।

अण्डा लै चीटीं चढ़ैं, तो बरखा भरपूर ॥२०॥

कलसे (एक दिन पूर्व से) पानी गर्म है और पक्षियाँ धूल से स्नान कर रही हैं । चीटियाँ अण्डा लेकर ऊपर चढ़ रही हैं तो अच्छी वर्षा होगी ॥ २० ॥

चैतमास दशमी खरी, जो कहुँ कोरी जाय ।

चौमासे भर बादला, भली भाँति बरसाय ॥२१॥

जब कहीं चैत मास की दशमी बादलों से रहित हो और बिल्कुल कोरी हो जाये तो वर्षा के चौमासे भर बादल अच्छी वर्षा करेंगे ॥२१॥

चैत पूर्णिमा होय जो, सोम गुरौ बुधवार ।

घर घर होय बधावड़ा, घर घर मंगलचार ॥ २२ ॥

यदि चैत, पूर्णिमा, सोम बृहस्पति और बुधवार को पड़े तो घर-घर बधाइयाँ बजे और घर-घर मंगलाचार होवे ॥ २२ ॥

चैत मास जो बीज बिजोवै ।

भरि बैसाखहि टेसू धोवै ॥२३॥

यदि कहीं चैत मास में बिजली चमके तो बैसाख के महीने में इतना पानी बरसे कि टीसू के फूल का रग घुल जाये ॥ २३ ॥

जेठ मास जो तपै निराशा ।

तो जानो वर्षा की आशा ॥२४॥

अर्थ सरल है ॥२४॥

जाड़े में सूतो भलो, बैठो बरखा काल।

गरमी में ऊभो भलो, चोखी करै सुकाल ॥२५॥

यदि द्वितीयाका चन्द्र जाड़े के दिन में सोया हुआ हो और वर्षा काल में बैठा हो तथा गर्मी में खड़ा हो तो अच्छा समय होगा ॥ २५ ॥

जो बद्री बादरमों खमसे।

कहै भडडरी पानी बरसे ॥२६॥

यदि बादलों के ढेर बादल में समाते हों, तो भडडरी का कहना है कि पानी बरसेगा ॥ २६ ॥

जो चित्रा में खेलैं गाई।

निहचे खाली साख न जाई ॥२७॥

जब चित्रा नक्षत्र में गौवें खेल करें (उछल-कूद करें), तो निश्चय जानो कि फसल खाली न जायेगी, अच्छी होगी ॥ २७ ॥

जो पुरुवा पुरवाई पावै, झूरी नदी नाव चलावै।

ओरी क पानी बँड़ेरी आवै ॥२८॥

यदि पूर्वा नक्षत्र में पूर्वी हवा चले तो सूखी नदी में नाव चलने लगे अर्थात् जल अच्छा बरसेगा। यहाँ तक कि छज्जे का गिरा जल घर की चोटी अथवा मुंडेरे पर चढ़ जायेगा ॥ २८ ॥

जिन वारां रवि संक्रमै, तासों चौथे वार।

अशुभ परंतो शुभ करैं, साख भली निरधार ॥२९॥

जिस दिन सूर्य की संक्रान्ति लगती हो, उसके चौथे दिन कई अशुभ पड़े तो वह शुभ माना जाता है ॥ २९ ॥

पूस मास दशमी अँधियारी, बदली घोर होय अधिकारी।
सावन बदि दशमी के दिवसे, भरे मेघ चारों दिशि बरसे ॥३०॥

जब पौष के महीने में अंधेरे पक्ष की दशमी को बदली होकर घोर घटा छा जावे, तो जानो कि सावन वदी दशमी को वही बादल चारों दिशाओं में भरे हुए दिखाई पड़ेगें और अच्छी वर्षा होगी ॥ ३० ॥

पूस उजेली सप्तमी, अष्टमी नौमी गाज।
मेघ होय तो जान लो, अब शुभ होै काज ॥३१॥

यदि पौष शुक्ल सप्तमी-अष्टमी और नवमी को बादल गरजें तो जानो कि वर्षा होगी और जानो कि सारे काम अच्छे होंगे ॥३१॥

पूस अँधियारी सप्तमी, जो पानी नहिं देह।
तो आर्द्रा बरसे सही, जल थल एक करेह ॥३२॥

यदि पौष वदी सप्तमीको पानी न बरसे या बादल पानी न दे तो यह सत्य है कि आर्द्रा नक्षत्र में इतनी वर्षा होगी कि जल-थल एक कर देगा ॥ ३२ ॥

पूस अँधियारी सप्तमी, बिन जल बादर जोय।
सावन सुदि पूनो दिवस, वरषा अवसहिं होय ॥३३॥

जब पूसवदी सप्तमी को बादल तो होवे, परन्तु पानी न बरसे, तो श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन वर्षा अवश्य होगी ॥ ३३ ॥

पूस मास दशमी दिवस, बादल चमकै बीच।
तौ बरस भरि भादवाँ, साधो खेलौ तीज ॥३४॥

जब पौष मास की दशमी के बादल के मध्य में बिजली चमके तो पूरे भादों वर्षा होगी फिर हे सज्जनों! अनन्द से तीजका त्यौहार खेलो ॥ ३४ ॥

पूस अखैती तेरसै, चहुँ दिशि बादर होय।
सावन पूनो मावसै, जलधर अति ही जोय ॥३५॥

जब पौष वदी तेरस को चारों दिशाओं में बादल हों तो श्रावण की पूर्णिमा और अमावस्या को बादल बड़ा जल बरसावे ॥ ३५ ॥

पौस अमावस मूलको सरसै चारो होय।
निहचै बाँधो झोंपड़ी बरखा होय सिवाय ॥३६॥

यदि पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र हो और चारों ओर की हवा (चौवाई) चले, तो निश्चय है कि वर्षा अधिक होगी, इसलिए छप्परों को बाँध रखो ॥ ३६ ॥

पौष अँध्यारी सप्तमी जो पानी नहिं देय।
तौ आर्द्रा बरसै सही जल थल एक करेय ॥३७॥

जब पौष वदी सप्तमी को बादल पानी न दें तो जानो कि आर्द्रा अवश्य बरसेगी और पृथ्वी पानी से भर जायेगी ॥ ३७ ॥

मार्ग महीना माहिं जो, ज्येष्ठा तपै न मूर।
तो इमि बोलैं भड्डरी, निपटै सातों तूर ॥ ३८ ॥

यदि अगहन के महीने में ज्येष्ठा नक्षत्र न तपे और न मूल ही तपे तो भड्डरी ऐसा बोलता है कि सातों अन्न होंगे ॥ ३८ ॥

मार्ग वदी आठे घरा, बिज्जु समेतो जोइ।
तो सावन बरसै भलो, साखि सवाई होय ॥ ३९ ॥

यदि अगहन वदी अष्टमी को बादलों में बिजली चमके या बिजली युक्त बादल हों तो जानों की श्रावण अच्छी वर्षा करेगा और अन्न सवाया पैदा होगा ॥ ३९ ॥

मार्ग वदी आठै घन दरसै।
सो मग्घा भरि सावन बरसै ॥ ४० ॥

यदि अगहन वदी अष्टमी को बादल दिखाई पड़े तो मघा नक्षत्र की भाँति सावन भर वर्षा होती है ॥ ४० ॥

माघ अँधेरी सप्तमी, मेह बिज्जु दमकन्त ।
मास चारि बर्सै सही, मत सोचैं तू कन्त ॥४१॥

यदि माघ-वदी सप्तमी को बादल में बिजली चमके तो जानो कि चार महीने (असाढ़, सावन, भादों और क्वार) भर अवश्य वर्षा होगी, हे प्रियतम ! तुम कुछ भी चिन्ता न करो ॥ ४१ ॥

माघ अमावस गर्भमय, जो केहु भाँति बिचारि ।
भादों की पूनों दिवस, वर्षा पहर जु चारि ॥४२॥

जब माघ की अमावस्या को गर्भमय बादल किसी प्रकार विचार करे तो भादों की पूर्णिमा के दिन चार प्रहर वर्षा होगी ॥ ४२ ॥

माघ सप्तमी ऊजली, बादल मेघ करन्त ।
तो असाढ़ में भड्डरी, घनो मेघ बरसन्त ॥४३॥

यदि माघ की शुक्ल सप्तमी पानी बरसे तो भड्डरी का कहना है कि अषाढ़ में जल अच्छा बरसेगा ॥ ४३ ॥

माघ शुक्ल जो सप्तमी, विज्जु मेह हिम होय ।
चार महीने बरससा, सोक करौ मति कोय ॥४४॥

जब माघ की शुक्ल सप्तमी को बादल में बिजली चमकती हो तो भादों महीने में वर्षा होगी, कोई चिन्ता न करो ॥ ४४ ॥

माघ सुदी जो साते कज्जली, आठैं बादर होय ।
तो असाढ़ में धूरवा, वरसै जौसी जोय ॥४५॥

यदि माघ वदी सप्तमी और अष्टमी को आकाश में बादल हो तो हे ज्योतिषी ! देखो, अषाढ़ में वर्षा होगी ॥४५॥

माघ पाँच जो हो रविवार।
तो भी जोसी समय विचार ॥४६॥

यदि माघ मास में पाँच रविवार पड़ें तो भी ज्योतिषी को समयका विचार करना चाहिये ॥४६॥

मोर पंख बादर उठे, राँड़ा काजर रेख।
वह बरसे वह घर करे, या में मीन न मेख ॥४७॥

जब मुरले के पंखों के समान बादल उठें और विधवा स्त्री काजल देवे तो वह (बादल) तो वर्षा करे और वह (विधवा) पति करे—इसमें मीन मेष कुछ नहीं अर्थात् सत्य है ॥ ४७ ॥

भादों की छठ चाँदनी, जो अनुराधा होय।
ऊबड़ खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरा होय ॥४८॥

यदि भादों की शुक्ल ६ को अनुराधा नक्षत्र हो तो ऊँचे-नीचे के सभी खेतों को दो दो, अन्न बहुत होगा ॥४८॥

भादों मासै ऊजरी, लखौ मूल रविवार।
तो यों भाखै भड्डरी, साख भली निरधार ॥४९॥

यदि भादों मास के शुक्ल पक्ष में रविवार को मूल नक्षत्र हो तो भड्डरी का ऐसा कहना है कि पैदावार अच्छी होगी ॥४९॥

पवन थक्यो तीतर लवै, गुरुहिं सुदेवे नेह।
कहहि भड्डरी ज्योतिषी, तादिन बरसे मेह ॥५०॥

भड्डरी ज्योतिषी का कहना है कि जब वायु चलते-चलते थकित होकर रुक गयी हो और तीतर प्रेम से लगते अर्थात् जोड़े खाते हों, गुरु पुष्य योग हो तो उस दिन वर्षा अवश्य होगी ॥ ५० ॥

बोलैं मोर महातुरीं, खाटी होय जु छाछ।
मेह महीपर परन को, जाने काछे काछ ॥५१॥

जब मोर बड़ी आतुरता से बोले और मट्ठा-खट्टा हो जावे तो जानो कि अब बादल पृथ्वी पर पड़ने के लिए कच्छना काछ रहे हैं ॥५२॥

पुरुब क बादर पच्छिम चरै, राँड़ बतकही हँसि-हँसि करै ।
ई बरसे ऊ करै भतार, भड्डर के मन यही विचार ॥५३॥

जब पूर्व दिशा के बादल पश्चिम दिशा की ओर चलते हों और विधवा स्त्री हँस-हँसकर बातें करती हों तो भड्डरी के मन में यही विचार आता है कि यह (बादल) तो वर्षा करेगा और वह (विधवा) दूसरा भर्त्ता (यार) करेगी ॥ ५३ ॥

दसै अषाढ़ी कृष्ण की, मंगल रोहिनि होय ।
सस्ता धान बिकाइहैं, हाथ न छुइहैं कोय ॥५४॥

यदि अषाढ़, कृष्ण पक्ष दशमी मंगलवार के दिन रोहिणी नक्षत्र पड़े तो जानो धान सस्ता बिकेगा और कोई हाथ से छूवेगा भी नहीं ॥ ५४ ॥

बादर ऊपर बादर धावै ।
कह भड्डर जल आतुर आवै ॥ ५५ ॥

भड्डरी का कहना है कि जब बादल के ऊपर बादल चढ़ते हों तो जल बड़ी तेजी से आवेगा ॥ ५५ ॥

फागुन बदी दुईज दिन, बादर होय न बीज ।
बरसे सावन भादवां, साधो खेलो तीज ॥५६॥

यदि फाल्गुन वदी दूइज के दिन बादलों का बीज न हो तो सावन, भादों बरसेगा, हे सज्जनों ! सानन्द तीज का त्योहार करो ॥ ५६ ॥

नौमी माघ अँधेरिया, मूल रिच्छको भेद ।
हो भादों नवमी दिवस, जल बरसे बिन खेद ॥५७॥

माघ कृष्ण नवमीको मूल नक्षत्र पड़े तो समझो कि भादोंकी नवमी के दिन जल अवश्य बरसेगा—इसमें कुछ खेद नहीं है ।। ५७ ।।

सोम शुक्र सुरुगुरु दिवस, पौष अमावस होय ।
घर-घर बजै बधावड़ा, दुखी न दीखै कोय ।।५८।।

यदि—पौष मासकी आमवस्या सोमवार, शुक्रवार और गुरुवारको पड़े तो समझो कि घर-घर में आनन्द के बाजे बजेंगे और कोई दुखी न दिखाई देगा ।। ५८ ।।

वैसाख सुदी प्रथमै दिवस, बादर बिज्जु करेइ ।
दामा बिना विसाहिजै, पूरा साख भरेइ ।।५९।।

यदि वैसाख शुक्ल में प्रथम दिन में बादल में बिजली हो तो समझो कि वर्षा अच्छा होगी और अन्न इतना पैदा होगा कि बिना दामके ही खरीद करो ।। ५९ ।।

धुर आसाढ़ी बिज्जुक, चमक निरन्तर होय ।
सोमां सुकरां सुरगुरां, ता भारी जल होय ।।६०।।

यदि आसाढ़ शुक्ल में सोमवार, शुक्रवार और गुरुवार के दिन आकाश में हट-बढ़कर बारम्बार बिजली की चमक दिखाई पड़े तो समझो कि बड़ा जल बरसेगा ।। ६० ।।

सुदी असाढ़की पञ्चमी, गरज घमघमो होय ।
सस्ता धान बिकाइ हैं, हाथ न छुइ हैं कोय ।।६१।।

यदि आसाढ़ सुदी पञ्चमी को बादलों की गड़गड़ाहट के साथ गरज हो, रोहिणी नक्षत्र पड़े तो धान इतना सस्ता बिकेगा कि कोई हाथ से भी न छुवेगा ।। ६१ ।।

सुदी असाढ़ नौमी दिना, बाहर झीनो चन्द ।
जानै भड्डर भूमि पर, मानो होय आनन्द ।।६२।।

यदि असाढ़ शुक्ल पक्षकी नौमी के दिन चन्द्रमा पर हल्के बादल छाये हों तो जानों कि भूमि पर भादों में आनन्द होगा ॥ ६२ ॥

रोहिनि जो बरसै नहीं, बरस जेठ नित मूर।
एक बूँद स्वाती पड़े, लागै तीनों तूर ॥६३॥

यदि रोहिणी नक्षत्र न बरसे, परन्तु ज्येष्ठा और मूल बरस जायें और स्वाती भी चन्द बूंदे बरस दे, तो निश्चय ही गेहूं, जो और चना ये तीनों अनाज अच्छे हों ॥ ६३ ॥

सावन पहली चौथ में, जो मेघा बरसाय।
तो भाखैं यों भड्डरी, फसल सवाई जाय ॥६४॥

यदि श्रावण कृष्ण चौथ को पानी बरसे तो भड्डरी कहते हैं कि सवाई फसल होगी ॥ ६४ ॥

सावन शुक्ला सप्तमी, छिपिकै ऊगैं भान।
तब लगि देव बरीसि हैं, जब लगि देव उठान ॥६५॥

यदि श्रावण शुक्ल पक्ष की सप्तमी को सूर्य बादलों में छिपे हुए उगें तो देवराज इन्द्र तब तक जल बरसावेंगे कि जब तक देवोत्थानी एकादशी होगी ॥ ६५ ॥

सावन केरे प्रथम दिन, उगत न दीखैं भान।
चार महीने बरसै पानी, याको है परमान ॥६६॥

यदि श्रावण के पहले दिन सूर्य उगते हुए दिखाई न दें, तो चार महीने (अषाढ़, श्रावण, भादों और क्वार) तक पानी बरसता ही रहेगा, इसका यही प्रमाण है ॥ ६६ ॥

सावन वदी एकादशी, बादल उगै न सूर।
तो यों भाखैं भड्डरी, घर-घर बाजै तूर ॥६७॥

यदि श्रावण कृष्ण पक्ष एकादशी को बादलों के कारण सूर्य उगते

हुए न दिखाई दें तो भड्डरी इस प्रकार भाखते हैं कि, घर-घर में आनन्द की तुरई बजेगी, आनन्द होगा ॥ ६७ ॥

सावन पछवाँ भादों पुरुवा, आसिन बहै इसान।
कातिक कंता सीक न डोलै, गाजैं सबै किसान ॥६८॥

जब श्रावण के महीने में पछुवाँ, भादों में पुरवा और क्वार में उत्तर पूर्वीय वायु चले तो हे कंत! कार्तिक में सींक भी हिलने योग्य वायु नहीं चलेगी और किसान आनन्द मनावेंगे ॥ ६८ ॥

सावन ऊखम भादौं जाड़।
बरसा मारे ठाड़ कछाँड़ ॥ ६९ ॥

यदि सावन के महीने में गर्मी और भादों के महीने में सर्दी पड़े तो समझो कि वर्षा शीघ्र होगी, क्योंकि बादल बरसने के लिए कमर बाँध कर मानों तैयार ही हैं ॥ ६९ ॥

सावन पहली पंचमी, गरभैं उदवें भान।
बरषा होगी अति घनी, ऊँचो जानौं धान ॥७०॥

जब श्रावण की पहली पंचमी को सूर्य बादलों के गर्भ से उदय होवें तो जानों कि वर्षा बड़ी घनी होगी और धान की पैदावार अच्छी होगी ॥ ७० ॥

सर्व तपै जो रोहिणी, सर्व तपै जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ की, उपजै सातो तूर ॥ ७१ ॥

जब ज्येष्ठ मास की रोहिणी और मूल सारा तपे तो परिवा तक वैसा ही तपेगा और समझो कि सातों प्रकार के अनाज उत्पन्न होंगे ॥ ७१ ॥

सुक्कर केरी बादरी, रही शनीचर छाय।
तो यों भाखै भड्डरी, बिन बरसे नहिं जाय ॥७२॥

यदि शुक्रवार को बदली हो और शनिवार तक छाई रहे, तो भड्डर कहते हैं कि वह बिना बरसे नहीं जायेगी ॥ ७२ ॥

भादोंकी सुदि पञ्चमी, स्वाति संयोगी होय।
दोनों शुभ जोग मिले, मंगल बरती होय ॥७३॥

यदि भादों की शुक्ल पक्षकी पञ्चमीमें स्वाती नक्षत्र का योग हो तो इन दोनों योगोंके मिलने से लोग मांगलिक मिलापका अथवा मगलके व्रतका आनन्द उठावेंगे ॥ ७३ ॥

साते पाँच तृतीया दशमी, एकादशीमें जीव।
यहि तिथियाँ पर जोतिये, तो प्रसन्न हो सीव ॥७४॥

सप्तमी, पञ्चमी, तृतीया, दशमी और एकादशी तिथिमें जीवका बास होता है, दूसरे अर्थ में ये जीवित तिथियाँ हैं। यदि इन जीवित तिथियों पर खेती की जोताई आरम्भ करें तो शिवजी प्रसन्न होते हैं अर्थात् उपज अच्छी होती है ॥ ७४ ॥

शनि आदि ग्रहों के विचार

शनि चक्करको सुनिये बात। मेष राशि भुगतौ गुजरात।
वृष में करे निरोधा बार। भृवै आबू औ गिरनार ॥७५॥
मिथुने पिंगल औ मुलतान। कर्क कासमीर खुरसान।
जो सनि सिंहा करदो रंग। तो गढ़ दिल्ली होसी भंग ॥७६॥
जो शनि कन्या करे निवास। तो पूरब कछु भाग विनास।
तुला वृश्चिक जो शनि होय। मारवाड़ ते कार बिलोय ॥७७॥
मकरा कुम्भा जो शनि आवै। दीन्हों अन्न न कोई खावै।
जो धन मीन सनीचर जाय। पवन चलै पानी नू नसाय ॥७८॥

यात्रा के शुभ शकुन

चलत समय नेउरा मिलि जाय, वाम भाग चारा चखु खाय ।
काग दाहिने खेत सुहाय, सफल मनोरथ समझहु भाय ॥७९॥
स्वान धुनै जो अपना अंग, अथवा लोटै भूमि पर ।
तो निज कारज भंग, अति ही कुसगुन जानिये ॥८०॥
पूरब गोधूली पश्चिम प्रात, उत्तर दुपहर दक्खिन रात ।
का करै भद्रा का दिग्शूल, कह भड्डर सब चकनाचूर ॥८१॥
लोआ फिर-फिर दरस दिखावे, बायें ते दहिने मृग आवै ।
भड्डर ऋषि यह सगुन बतावैं, सगरे काज सिद्ध हो जावै ॥८२॥
भैंस पाँच षट स्वान, एक बैल एक बकरा जान ।
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलै मति करो पयान ॥८३॥
नारि सुहागिन जलघट लावै, दधि मछली जो सनमुख आवै ।
सनमुख धेनु पिआवै बाछा, यही सगुन है सबसे आछा ॥८४॥
बनै न बरनत बना बराता, होइ सगुन सुन्दर शुभ दाता ।
चारा चाषु वाम दिशि लेई, मनहुँ सकल मंगल कहि देई ॥८५॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा, नकुल दरस सब काहू पावा ।
सानुकूल वह त्रिविध बयारी, सघट सवाल आव बर-नारी ॥८६॥
लोआ फिरफिर दरस दिखावा, सुरभी संमुख शिशुहिं पिआवा ।
मृगमाला दाहिन दिशि आई, मंगलगण जनु दीन्ह दिखाई ॥८७॥

क्षेमकरी कह क्षेम विशेषी, श्यामा वाम सुतरु पर देखी।
संमुख आयहु दधि अरु मीना, कर पुस्तक दुइ विप्र प्रवीना ॥८८॥
सगुन शुभा-शुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरसे दूरि निकट से जल्दी, समझौ फल भरपूर।८९॥

यात्रा करने के पूर्व शुभ-सेवनीय वस्तु

रवि को पान सोम को दरपन, धनियाँ घोंटे भूमिके नदन।
बुधको गुड़ गुरूको राई, शुक्रको दही शनिको घृत भाई ॥९०॥
रविको पान सोमको दरपन, मंगलको करु गुड़का अरपन।
बुद्ध मिठाई, बिहफै राई, शुक्र कहै मोहिं दही सुहाई।
शनी कहै जो अदरक पाऊँ, कालहु कोटि जीति घर लाऊँ ॥९१॥
न गिन चैत नहीं वैशाख, न गिन वार तीन सौ साठ।
गनियो एके मास आसाढ़, नवमी शुक्ला वार बखान॥
मंगल पड़े तो हर पड़े, बुद्ध पड़े दुःख काल।
दैव बिछोहा होय तो, पड़े शनीचर वार॥
सोमे शुक्रे रवि गुरु, भूमे अन्त कराय।
छत्र टूट मड़ई हिगे, शनीवार पड़ जाय ॥९२॥

यात्रा में शुभाशुभ स्वर और दिन का विचार

शुक्रे सोमे बुद्धे वाम, यहि स्वर लंका जीते राम ॥९३॥
जो स्वर चलै सोई पग दीजै, भरनी भद्रा एक न लीजै।९४॥

गवन समय जो स्वान, फर फराय दे कान ।।९५।।
एक शूद्र दो वैस असार, तीन विप्र और क्षत्री चार ।।९६।।
सनमुख आवै जो नौ नार, कहै भड्डरी अशुभ विचार ।।९७।।

संवत् नाम और ग्रहण का विचार

बिजै दसै जो वारी होई ।
संवत्सर को राजा सोई ।।९८।।

जेहि नक्षत्र में रवि तपै, तिहीं अमावस होय ।
परिवा साँझी जो मिलै, सूर्य ग्रहण तब होय ।।९९।।
मास अषय जो तीज अँध्यारी, लेहु ज्योतिषी ताहि विचारी ।
तिहि नक्षत्र जो पूरनमासी, निहचै चन्द्र ग्रहण उपहासी ।।१००।।

अमावस्या और महँगी का विचार

चैत अमावस जे घड़ी, परती पत्रा माहिं ।
तेता सेरा भड्डरी, कातिक धान बिकाहिं ।।१०१।।
चैत सुदी रेवती जो होय, वैसाखहिं भरणी जो होय ।
जेठ मास मृगशिर दरसंत, पुनर्वसु आषाढ़ चरंत ।
जितो नक्षत्र कि वरतो जाई, तेतो सेर अनाज बिकाई ।।१०२।।

होली का विचार

होली झरको करो विचार, शुभ अरु अशुभ महाफल सार ।
पश्चिम वायु वहै अतिसुन्दर, समया निपजै सबल वसुन्धर ।।१०३।।

पूरब दिशिकी कहै जो वाई । कछु भीजैं कछु कोरी जाई ।
दक्खिन वायु बहै बघ नास । समय उपजै सनई घास ॥१०४॥
उत्तर वायु बहै दड़वड़िया । पिरथी अचूक पानी पड़िया ।
जों झँकोरैं चारों वाय । दुःख मा परजा जीव डेराय ॥
जोर झलो आकासै जाय । तो पिरथी संग्राम कराय ॥१०५॥
होली शुक्र शनीचरी, मंगलवारी होय ।
चाक चहोड़े मेदिनी, बिरला जीवै कोय ॥१०६॥

वर्षा और वायु का विचार

असाढ़ी पूने को साँझ । वायु देखिये नभके माँझ ।
नैऋत भई बूँद ना परै । राजा परजा भूखों मरै ॥१०७॥
अगिन कोन जो बहै समीरा । पड़े अकाल दुख सहे सरीरा ।
उत्तर से जल फूहों परें । मूस साँप दोनों अवतरें ॥१०८॥
पश्चिम समय नीक करि जान्यो । आगे बहै तुषार प्रमान्यो ।
जो कहुँ हवा इशाना कोना । नापा बिस्वा दो-दो दोना ॥१०९॥
जो कहुँ हवा इकासे जाय । परै न बूँद काल परि जाय ।
दक्खिन पच्छिम आधो समयो । भड्डर जोसी ऐसे भनयो ॥११०॥
असाढ़ मास पुन गौना । धुज धरके देखौ पौना ।
बो पै पवन पुरुबसे आवै । उपज अन्न मेघ झरि लावै ॥११०॥
अग्निकोण जो बहै समीरा । पड़ै अकाल दुःख सहै सरीरा ।
दखिन बहै जल थल अलमीरा । ताहि समय जूझैं बड़ बीरा ॥११२॥

तीरथ कान बूँद ना परे। राजा परजा भूखन मर।
पश्चिम बहै नीकू कर जानो। पड़े तुषार तेज़ डर मानो ॥११३॥
बायव बह जल थल अति मारी। मूस उगाह दंड बस नारी।
उत्तर उपजै बहु धन धान। खेत बात सुख करै किसान ॥११४॥
कोन इसान दुंदुभी बाजै। दही भात भोजन सब गाजै ॥११५॥

ज्येष्ठ की प्रतिपदा के वासर का विचार

जेठ अगली परवा देखू। कौन बासरा यों पेखू।
रविवासर अति बाढ़ बढ़ावा। मंगलवारी व्याधि बतावा ॥
बुधा नाज महँगा जो करई। सनिवासर परजा परिहरई।
चन्द्र शुक्र सुर गुरु के बारा। होय तो अन्न भरो संसारा ॥११६॥

न गिन तिन सै साठ दिन, ना कर लग्न विचार।
गिनु नौमी आसाढ़ बदि, होवै कौनिउ बार ॥११७॥

रवि अकाल मंगल जग उगे, बुधा समसोम मानो लगे।
सोम सुक्र सुरगुरु जो होय, पुहुमि फूल फलन्ती जोय ॥११८॥

सावन वदी एकादशी, चिन्ता करो न कोय।
जो कृत्तिका को करवर, रोहिणि होय सुकाल।
जो मृगशिर आवे तहाँ, निहचै पड़े दुकाल ॥११९॥

सावन वदी एकादशी, जितनी घड़ीक होय।
तितनो संवत् नीपजे, चिन्ता करो न कोय ॥१२०॥

सावन शुक्ला सप्तमी, जो गरजै अधिरात।
बरसे तो सूखा पड़े, नाहीं समौ सुकाल ॥१२१॥

दिशाशूल-विचार

सोम शनीचर पुरुब न चालू, मङ्गल बुद्ध उत्तर दिशि कालू।
बिहफै दक्खिन करै पयाना, फिर नहिं समझौ ताको आना ॥
बुद्ध कहै मैं बड़ा सयाना, मोरे दिन जनि करो पयाना।
कौड़ी से नहिं भेंट कराऊँ, क्षेम कुशलसे घर पहुँचाऊँ ॥१२२॥

बास-विचार

रवि दिन बास चमार घर, ससि दिन नाई गेह।
मङ्गल दिन काली भवन, बुध दिन रजक सनेह ॥
गुरु दिन ब्राह्मणके बसैं, भृगु दिन वैश्य मँझार।
सात दिन वेश्याके बसै, भड्डर कहै विचार ॥१२३॥

नवीन वस्त्र धारण विचार

कपड़ा पहिरै तीनबार, बुद्ध बृहस्पति शुक्रवार।
हारे उबरेका इतवार, भड्डरका है यही विचार ॥१२४॥

छींक-विचार

सनमुख छींक लड़ाई भाषै, पीठि पाछली सुख अभिलाषै।
छींक दाहिनी धनको नासै, वाम छींक सुख सदा प्रकासै ॥१२५॥

ऊँची छींक महासुखकारी, नीची छींक महाभयकारी ।
अपनी छींक महादुखदायी, कह भड्डर जोसी समझाई ॥१२६॥
अपनी छींक राम वन गयऊँ, सीता हरन तुरन्तै भयऊँ ॥१२७॥

कुत्ता काटने का विचार

भरणि विशाखा कृत्तिका, आर्द्रा औ मघमूल ।
इनमें काटै कुक्कुरा, भड्डर है प्रतिकूल ॥१२८॥

जन्मकाल में लग्न मुहूर्त देखना

पड़िवा मूल पंचमी भरनी । छठके आद्रा नौमी रोहनी ।
अष्टमी हस्तमें जो रहियो ॥
सप्तमी मघारे मितउरे धाई, छहो सून्य पड़ा है आई ।
जन्मे सो जीवे नहीं, बसे तो उज्जर होय ॥
कूआँ पोखर जौ खनै, सुन्नै वारि पराय ॥१२९॥
आठे चौथ चतुर्दश जानी, रवि गुरुमङ्गलवार बखानी ।
तीन उत्तरा पड़े जो जहिया, तो आन क जनमल कहिया ॥
आदि न हस्ता, गुरु पुष जोग, बुधानुराधा शनि रोहिणी च ॥१३०॥
सोमे च श्रवणे भृगु रेवती च, भौमे च अश्विनी अमृतसिद्धियोगः ।
रवि गुरु मंगल एकै रेखा, कृतिका भरनी औ असलेखा ।
दुरत सप्तमी आठे जीया, तामे भई विष कौंउर धीया ॥

आप मरे की माता खाय, धन छीजै जो परघर जाय।
जे चमाइन नरकटिया करै, जेठे पुत्र बहूका मरै॥
जौन नाउन सउरी कमाय, बरिस दिन रोजी से जाय।
ब्रह्मा बिसनु उतरि के आवैं, भौंरी देत राँड़ हो जावै॥१३१॥

पल्लीपतन अर्थात् छिपकली गिरने का विचार

शिरपर गिरे राजसुख पावे, औ ललाट ऐश्वर्य लियावै॥१३२॥
कण्ठ मिलावै पियको लाई, काँधे पड़े विजय दरसाई॥१३३॥
जुगल कान और जुगल भुजाहू, जोधा गिरे होय धन लाहू॥१३४
हाथन ऊपर जो कहुँ गिरई, सम्पति सकल गेहमें धरई॥१३५॥
निश्चय पीठि परै सुख पावै, परे काँख प्रिय बन्धु मिलावै॥
कटिके परै वस्त्र बहुरंगा, गुदा परै मिल मित्र अभंगा॥१३६॥
जुगल जाँघपर आन जो परई, धनजन सकल मनोरथ भरई॥
परे जाँघ नर होइ निरोगी, परव परे तन जीव वियोगी॥१३७॥

भड्डरी के मतानुसार अवर्षण-अकाल और महंगी के लक्षण

आद्रा भरणी रोहिणी, मघा उत्तरा तीन।
दिन मङ्गल आँधी चलै, तब लौं बरखा छीन॥१३८॥

यदि मङ्गलवार के दिन आर्द्रा, भरणी, रोहिणी और उत्तरा इन तीन नक्षत्रों में आँधी चले तो वर्षा की गति क्षीण जानो॥१३८॥

आगे मङ्गल पीछे भान।
बरषा होवे ओस समान ।। १३६ ।।

जब मंगल ग्रह आगे हों और सूर्य उनके पीछे हों तो वर्षा ओस के समान अर्थात् बहुत कम होगी ।। १३९ ।।

आगे मेघा पीछे भान।
पानी पानी रटै किसान ।। १४० ।।

जब मघा आगे हो और सूर्य उसके पीछे हों, तो समझो कि वर्षा का योग बहुत कम है, किसान पानी-पानी रटते रहेंगे ।। १४० ।।

आगे मेघा पीछे भान।
बरखा होवे ओस समान ।। १४१ ।।

यदि सूर्य मघा के पीछे हों तो वर्षा बहुत थोड़ी ओस के समान होगी ।। १४१ ।।

आगे मङ्गल पीठ रवि, जो अषाढ़ के मास।
चौपट नास चहुँ दिशा, बिरलै जीवन आस ।।१४२।।

जब अषाढ़ के महीने में मंगल आगे और सूर्य उनके पीछे हों तो देश में चारों ओर नाश के लक्षण दिखाई दें, कोई ही जीवन की आशा करें ।। १४२ ।।

आवै तीज रोहिणी न होई, पौस अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कातिक पूनो कृतिका टारो ।।
महि माहिं खल बलहिं प्रकासै, कहत भड्डरी सालि बिनासै ।।१४३।।

जब वैशाख की अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र न हो और पौष की अमावस्या को मूल-नक्षत्र न हो और रक्षाबन्धन के दिन श्रवण और

कार्तिक की पूर्णिमा को कृत्तिका टली हुई हो तो पृथ्वी पर दुष्टों का दल बढ़ता है तथा धान का नाश होता है ॥ १४३ ॥

आश्विन बदी अमावसा, जो आवे शनिवार।
समयो होवै कि खरो, जोसी करो विचार ॥१४४॥

यदि क्वार वदी अमावस्या को शनिवार पड़े तो समय या तो अच्छा होगा या बुरा ही होगा—इसमें दोनों पक्ष ज्योतिषी जन विचार करो ॥ १४४ ॥

आषाढ़ी पूनो दिना, निर्मल ऊगै चन्द।
पीव जाव तुम मालवे, आवेगो दुख द्वन्द्व ॥१४५॥

यदि आषाढ़ पूर्णिमा के दिन स्वच्छ आकाश में निर्मल चन्द्रमा उदय हो तो किसान की स्त्री के शब्दों में कवि ने यह रचना की है कि—हे प्रियतम ! तुम मालवे (मालवा नामक प्रान्त) चले जाओ। यहाँ दुःखद लड़ाई होगी। जिससे कठिन दुःख आवेगा ॥ १४५ ॥

एक मास में ग्रहण जो दोई।
तो भी अन्ना महँगो होई ॥१४६॥

यदि एक ही महीने में दो ग्रहण पड़े तो समझो कि अन्न महंगा होगा ॥ १४६ ॥

कर्क संक्रमी मंगलवार, मकर संक्रमी सनिहिं विचार।
पन्द्रह महूरतवारी होय, देश उजाड़ करै यों जोय ॥१४७॥

यदि कर्क की संक्रान्ति मंगलवार को और मकर की संक्रान्ति शनिवार को पड़े और वह १५ मुहूर्त की हो तो यह जानो की वह देश को उजाड़ कर देगी ॥ १४७ ॥

कर्क राशि में मंगलवारी।
ग्रहण परै दुर्भिक्ष विचारी ॥१४८॥

यदि चन्द्रमा कर्क राशि में हो और दिन मंगलवार पड़े और उसी दिन ग्रहण हो तो ऐसा विचारो कि अकाल पड़ेगा ॥ १४८ ॥

करक जु भीजै कांकरो, सिंह अभीतो जाय।
ऐसा बोलै भड्डरी टीड़ी, फिर-फिर खाय ॥१४९॥

यदि श्रावण में सूर्य कर्क राशि के होंगे तो इतनी अल्प वृष्टि होगी कि केवल कंकड़ ही भीगेंगे और जब सिंह राशि पर सूर्य जायेंगे तब तो सूखा हो जायेगा, वृष्टि तो होगी ही नहीं, साथ ही भड्डरी ऐसा बोलता है कि टिड्डी फिर-फिर फसलों को खायेगी ॥ १४९ ॥

कर्क बुआवै काकरी, सिंह अबोनो जाय।
ऐसा बोले भड्डरी, कीड़ा फिर-फिर खाय ॥१५०॥

यदि कर्क में ककड़ी बोवे और सिंह में न बोवे तो भड्डरी ऐसा बोलता है कि उस ककड़ी में कीड़े लगते हैं और बारम्बार कीड़ा खाता है ॥ १५० ॥

कै जु सनीचर मीन को, कै जु तुलाको होय।
राजा विग्रह परजा छय, बिरला जीवै कोय ॥१५१॥

जब शनि, मीन और तुला के होंगे तो राजाओं में लड़ाई ठन जाती और कोई बिरला ही जीता है ॥ १५१ ॥

कुही अमावस मूल बिन, बिन रोहनि अखतीज।
श्रवण बिना हो श्रावनी, आधा उपजै बीज ॥१५२॥

यदि अमावस्या बिना मूलके हो और बिना रोहिणी के अक्षय तृतीया हो और बिना श्रवण के सावन की पूर्णिमा हो, तो पैदावार कुछ न होगी और बड़ी कठिनाई के साथ अपना बोया हुआ बीज मात्र प्राप्त कर सकेगा ॥१५२॥

क्या रोहिणि वर्षा करै, बचे जेठ नित मूर।
एक बूँद कृतिका पड़े, नासै तीनों तूर ॥१५३॥

रोहणी नक्षत्र के बरसने से क्या होगा और ज्येष्ठ मास के बचाने से भी क्या लाभ यदि कृत्तिका ने अपना एक बूंद भी जल पृथ्वी पर गिरा दिया तो गेहूँ, जौ, चना इन तीनों ही अन्नों का नाश हो जाता है ॥ १५३ ॥

कार्तिक मावस देखो जोसी, रवि शनि भौमवार जो होसी।
स्वाती नखत अरु आयुष जोगा, काल पड़े अरु नासै लोगा ॥१५४॥

भड्डरी का कहना है कि—ऐ ज्योतिषियो! कार्तिक की अमावस्या को तो देखो कि उस दिन रविवार, शनिवार और मङ्गलवार के दिन स्वाती नक्षत्र और आयुष्य योग भी है—इससे अकाल पड़ता है और लोगों का नाश हो जाता है ॥ १५४ ॥

काहे पण्डित पढ़ि-पढ़ि मरौ, पूस अमावस की सुधि करौ।
मूल बिसाखा पूर्वाषाढ़, झूरा जानो बहिरे ठाढ़ ॥१५५॥

ऐ पण्डितो! पढ़-पढ़ कर क्या मरते हो, पूसकी अमावस्या को मूल, विसाखा और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र को देखो। इसको पड़ने से सूखा एवं अकाल मानो तुम्हारे द्वार के बाहर आकर खड़ा है ॥ १५५ ॥

गुरुवासर धन करखा करई, थावरवारा राजा मरई ॥१५६॥

यदि बृहस्पति के दिन धनराशि पर चन्द्रग्रहण लगे या रविवार का दिन पड़े तो राजा मरता है ॥ १५६ ॥

गपथा आथा गहथा ऊगे ।
तोऊ चोखी साख न पूखे ॥१५७॥

यदि ग्रहण ग्रस्तास्त या ग्रस्तोदय हो तो फसल पूरे तौर पर नहीं होती ॥ १५७ ॥

चैत मास उजियारी पाख, आठे दिवस बरसा राख ।
नव बरसे जित बिजली होय, तो दिसि काल हलाहल होय ॥१५८॥

यदि चैत्र मास के शुक्लपक्ष में उसके आठवें दिन आकाश धूल से आच्छादित दिखाई दे, तो नवें दिन पानी तो बरसेगा परन्तु जिधर बिजली चमके, उधर दुर्भिक्ष पड़ता है ॥ १५८ ॥

चैत मास को दसमी खड़ी, बादल बिजली होय ।
तो जानो चित माँहि यह, गर्भगला सब जोय ॥१५९॥

यदि चैतकृष्ण दसमी के दिन जल बरसे और बिजली चमके तो अपने मन में यह जानो कि वर्षा का गर्भ गल गया है, वर्षा न्यून होगी ॥ १५९ ॥

तपा नखत में जो चुइ जाय ।
सभी नखत हलके पड़ जायँ ॥१६०॥

यदि तपते हुए ज्येष्ठ मास में कहीं पानी बरस जाय तो समझो कि सभी नक्षत्र हल्के पड़ जायेंगे ॥ १६० ॥

तेरह दिन का देखो पाख ।
अन महँगा समझो बैसाख ॥१६१॥

जब तेरह दिन का पक्ष पड़े तो समझो कि बैसाख महीने में अन्न महँगा बिकेगा ॥ १६१ ॥

दो आश्विन दो भादों, दो अषाढ़के माहिं।
सोना चाँदी बेंचकर, नाज बेसाहो साह ॥१६२॥

जब किसी वर्ष में दो क्वार या भादों अथवा दो आसाढ़ पड़े तो सोना, चाँदी बेंचकर अनाज खरीद लेना चहिए, क्योंकि मँहगी बढ़ेगी ॥ १६२ ॥

सावन पुरवाई चले, भादों में पछियाँ।
कंत डगरवा बेचिके, लरिका जाय जियाय ॥१६३॥

भड्डरी के शब्दों में, किसानकी स्त्री अपने पति से कहती है—सावन में पुरवा हवा चली है और भादों में पछिवाँ, इसलिए हे स्वामी! पशुओं को बेचकर कहीं चलकर लड़कों को जिला लिया जाय, क्योंकि सूखा पड़ेगा ॥ १६३ ॥

सावन कृष्ण एकादशी, गर्जि मेघ घहरात।
तुम जाओ पिय मालवे, हम जावें गुजरात ॥१६४॥

(कवि के शब्दों में स्त्रीका वाक्य पति से) सावन कृष्ण एकादशी को बादल घहराते और गरजते हुए देखकर स्त्री अपने पति से कहती है कि—हे प्रियतम! तुम तो मालवा प्रान्त को जाओ और मैं गुजरात देश को चली जाऊँ। मानो गुजरात में उसका मैका था और मालवा में उसके पति की जन्म भूमि थी ॥ १२४ ॥

क्योंकि—

सावन कृष्ण पक्षको देखो, तुमको मंगल होय विसेखो ॥१६५॥

सावन के कृष्ण पक्ष में तुमको मंगल कष्टकारक हैं ॥ १६५ ॥

कर्क राशिपर गुरु जो जावै, सिंह राशिमें शुक्र सोहावै।
ताल भी सोखै बरसै धूर, कहूँ न उपजै सातो तूर ॥१६६॥

जब बृहस्पति कर्क राशि पर हो जावे और शुक्र सिंह राशि पर हो तो वे तालाब को शोख लेते हैं और धूल की वर्षा होती है तथा कहीं भी सातो प्रकार के अन्न नहीं पैदा होते ॥१६६॥

सावन उजरे पाख में, जो यह सब दरसाय।
दुन्द होय क्षत्री लड़ें, भिरैं भूमि पतिराय ॥१६७॥

यदि वह सब श्रावण के शुक्ल पक्ष में दिखाई पड़ें तो आपस में झगड़ा करके सब क्षत्रिय लड़ने लग जायेंगे और सब राजाओं में युद्ध होगा ॥ १६७ ॥

सावन शुक्ला सप्तमी, उगत जो दीखै भान।
या जल मिलिहैं कूपमें, या गंगा असनान ॥१६८॥

यदि श्रावण शुक्ल पक्ष की सप्तमी को सूर्य उदय होते हुए दिखाई पड़ें तो वर्षा का ऐसा अभाव होगा कि या तो जल कुंओं में मिले या गंगाजी पर जब स्नान करने आओगे तभी मिलेगा ॥ १६८ ॥

सावन शुक्ला सप्तमी, जो बरसे अधिरात।
तुम जाओ पिय मालवे, हम जावें गुजरात ॥१६९॥

यदि श्रावण शुक्ल पक्ष की सप्तमी को अर्द्ध रात्रि में वर्षा होवे तो स्त्री अपने पति से कहती है कि, हे प्रियतम, अब तुम मालवा अपने देश जाओ और मैं भी अपने नैहर गुजरात को जाऊँगी क्योंकि सूखा पड़ेगा ॥ १६९ ॥

सावन शुक्ला सप्तमी, चन्दा छिटिक करेय।
की जल देखौ कूपमें, कि कामिनि सीस धरेय ॥१७०॥

यदि श्रावण शुक्ल सप्तमी की रात में चन्द्रमा का अच्छा प्रकाश हो तो या जल कुँवें में ही दिखाई पड़ेगा या जल घड़े में स्त्रियों के शिर पर ही धारण किए दिखाई पड़ेगा ॥ १७० ॥

सावन पहली पंचमी, जोर की चलै बयार।
तुम जाना पिय माळवे, हम जावें पितुसार ॥ १७१ ॥

यदि श्रावण प्रथम पक्ष की पंचमी के दिन प्रबल वायु बहे तो स्त्री अपने पति से कहती है कि, प्रियतम! तुम मालवा चले जाना और हम अपने पिता के घर चली जायेंगी ॥१७१॥

सूर उगें पश्चिम दिशा, धनुष उगन्तो जान।
दिवस जा चौथे पाँचवें, रुंड मुंड महिमान ॥१७२॥

यदि सूर्योदय के उगते ही पश्चिम दिशा में धनुष उगता दिखाई पड़े तो उसके चौथे-पांचवें दिन पृथ्वी रुण्ड-मुण्डों से पट जायेगी अर्थात् पृथ्वी पर युद्ध होगा ॥ १७२ ॥

स्वाती दीपक जो बरे, खेलै विशाखा गाय।
घना गयंदा रन चढ़े, उपजी साख नसाय ॥१७३॥

यदि स्वाती नक्षत्र वर्षा न करे स्वाती का जल पृथ्वी पर न पड़े) और विशाखा में भी गायें खेलती रहें और वह भी न बरसे तो रजवाड़े युद्ध में तत्पर हो जावेंगे और उपजी हुई फसल नष्ट होगी ॥१७३॥

सावन शुक्ला सप्तमी, उमरे निकले मान।
हम जावें पिय माइके, तुम कर लो गुजरान ॥ १७४ ॥

यदि श्रावण शुक्ल पक्षकी सप्तमी को सूर्योदय स्पष्ट हो और वर्षा न हो तो हे प्रियतम ! अब तो मैं अपने मैके जाऊँ और तुम अपना कहीं या जहाँ चाहे वहाँ जाकर दिन काट लेना, क्योंकि लक्षण अच्छे नहीं दिखाई पड़ते ।। १७४ ।।

अग्निकोन जो वहै समीरा, पड़े अकाल दुख सहै शरीरा ।

उत्तर से जल फूहों परे, चूहे साँप दोनों अवतरें ।।१७५।।

यदि वर्षा में अग्निकोण की वायु बहती रहे तो अकाल पड़ेगा जिसमें शरीर को दुःख सहना पड़ेगा और उत्तर दिशा में जब कुहरे जैसा या रुई जैसा श्वेत घनी थोड़ी-थोड़ी पृथ्वी भिगन-सी वर्षा हो तो अवर्षण और अकाल तो होता ही है, साथ ही चूहे और सर्प ये दोनों ही काफी संख्या में पैदा होते हैं ।। १७५ ।।

पश्चिम समय नीक करि जानो, आगे वहै तुषार प्रमानो ।

जो कहूँ वहै इशाना कोना, नापा बिस्वा दो-दो दोना ।।१७६।।

यदि श्रावण में पश्चिमी वायु बहे तो समय अच्छा जानो और इसके आगे अर्थात् पुरवा हवा चले तो यह पाला पड़ने का प्रमाण है ! यदि कहीं का ईशान कोणकी वायु बहे तो फसल की पैदावार दूनी हो जाय यहाँ तक कि एक-एक बिस्वा खेत से दो-दो दोन अन्न मिलेगा।।१७६।।

जो कहुँ हवा इकासे जाय, परै न बूँद काल परिजाय ।

दक्खिन पश्चिम आधो समयो, भड्डर जोशी ऐसे भन्यो ।।१७७।।

यदि आषाढ़ या श्रावण में वायु चलकर वह आकाश को उड़ जाये और बादलों को उड़ा दे तो जल की वर्षा एक बूंद भी नहीं होगी और अकाल पड़ जायेगा। ऐसी दशा में भड्डर ज्योतिषी का यह कहना है कि दक्षिण और पश्चिम दिशा में आधी फसल होगी ।। १७७ ।।

अषाढ़ मास पुन गौना, धुजा बाँधिके देखौ पौना।
जो पै पवन पुरुब से आवै, उपजै अन्न मेघ झरि लावै ॥१७८॥

जब अषाढ़ महीना फिर आवे, बाँस या किसी लकड़ी में पताका बाँधकर देखो। यदि वायु पूरब से आवे तो समझो कि बादल पानी की झड़ी लगा देगा और पैदावार अच्छी होगी॥ १७८॥

तीरथ कोन न बूँदा परै, राजा परजा भूखन मरैं।
पश्चिम बहै नीक कर जानो, पड़े तुषार तेज डर मानो ॥१७९॥

यदि पूर्वोत्तर कोण से जल की वर्षा न हो तो राजा और प्रजा भूखों ही मरेंगे। हाँ, यदि पछिवाँ हवा चले तो इसे अच्छा समझो, परन्तु पाला का बड़ा भय है॥ १७९॥

मूल गल्यो रोहिनि गलो, आर्द्रा वाजी जाय।
हाली वेचो बरधिया, खेती लाभ नसाय ॥१८०॥

यदि मूल नक्षत्र और रोहिणी नक्षत्र चली गयी और आर्द्रा भी घोड़े की तरह सरपट दौड़ गयी, चली गयी, और वर्षा नहीं हुई तो (कवि कहता है) शीघ्र ही बैलों को बेंच दो, खेती करने से लाभ नहीं है॥१८०॥

मौन अमावस मूल बिन, रोहिनि बिन अखतीज।
सावन सरवन न मिले, वृथा बखेरी बीज॥१८१॥

यदि मौनी अमावस्या बिना मूल नक्षत्र के पड़ी हो और अक्षय तृतीय बिना रोहिणी के हो और श्रावणी श्रवण के बिना हो तो श्रावण में वर्षा नहीं होगी, बीजों का बोना व्यर्थ है॥१८१॥

रविके कर धन्वन्तरि होय, सोम कहै सेवा फलहोय।
बुध बिअफै सुक भरै बखार, शनि मंगल अन जाय न द्वार ॥१८२॥

यदि खेती का काम रविवार को (बुआई करना) करे तोधन्वन्तरि-सा लाभ हो और सोमवार को बुआई करे तो खेती की जितनी सेवा करे उतना ही फल प्राप्त हो और बुधवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार को करे तो बखार भर जावे अर्थात् पैदावार काफी होगी परन्तु जो शनिवार और मंगलवार को बोअनी करता है उसके दरवाजे पर तो अन्न जा ही नहीं सकता, क्योंकि बोअनी के लिए ये दोनों दिन शुभकारी नहीं हैं ॥ १८२ ॥

रवी उगन्ता भादवाँ, अम्मावस रविवार।
धनुष उगन्ते पच्छिमा, होसी हाहाकार ॥१८३॥

यदि भादों के महीने में सूर्योदय होते ही अमावस्या लग जाये और रविवारका दिन हो तथा उसी समय यदि पश्चिम दिशा में आकाश धनुष भी निकल आवे तो दुनिया में हाहाकार मचे, कष्ट उत्पन्न हो ॥ १८३ ॥

रवि के आगे सूर गुरु, ससि सुक्रा परवेश।
दिवस जू चौथे पाँचवे, रुधिर बहन्तो देश ॥१८४॥
रात्यो बोलै कागला, दिनमें बोलै स्याल।
तो यों भाखै भड्डरी, निहचै परै अकाल ॥१८५॥
रात निर्मली दिनको छाँही, कहै भड्डरी पानी नाहीं ॥१८६॥

रिक्ता तिथि अरु क्रूर दिन, दुपहर अथवा प्रात।
जो संक्रान्ति सो जागियो, संवत् महँगो जात ॥१८७॥

रोहिणि माहीं रोहिणी, एक घड़ी जो देख।
हाथमें खपरा मेदिनी, घर-घर माँगे भीख ॥१८८॥

शनि आदृत औ मंगल, पौख अमावस होय।
दुगनो तिगनो चौगुनो, नाज महँगो होय ॥१८९॥

स्वाति बिसाखा चित्तरा, जेठ सुकेरा जाय।
पिछलो गरब गन्थो कहा, बनी साख मिट जाय ॥१९०॥

सुदी असाढ़में बुद्धको, उदय भयो जो देख।
सुक्र अस्त सावन लखो, महाकाल अवरेख ॥१९१॥

सावन पहली पाखमें, दशमी रोहिणि होय।
महंगा नाज-रु अल्प जल, विरला बिलसै कोय ॥१९२॥

कृष्ण असाढ़ी प्रतिपदा, जो अम्बर गरजन्त।
तो छत्री छत्री लड़ैं, निहचै काल पड़न्त ॥१९३॥

यदि आषाढ़ कृष्ण पक्षकी प्रतिपदा को बादल गर्जें तो क्षत्रिय से क्षत्रिय लड़ाई करेंगे और निश्चय ही अकाल पड़ेगा ॥ १९३ ॥

कृतिका जो कोरी गई, आर्द्रा मेह न बुन्द।
तो यों जानो भड्डरी, काल मचावे दुन्द ॥१९४॥

अर्थ सरल है ॥ १९४ ॥

छः ग्रह एकै राशि विलोकौ।

महाकालको दीनों कोकौ ॥१९५॥

यदि एक ही राशिपर छः ग्रह लगते हों तो पृथ्वी पर जल नहीं बरसेगा, महाकालने निमन्त्रण दिया है ॥ १९५ ॥

जै दिन जेठ चले पुरवाई।

तै दिन सावन धूर उड़ाई ॥१९६॥

जेठ में जै दिन पुरवा हवा बहेगी, तो (उतने) दिन सावन धूलि उड़ायेगा अर्थात् उतने दिन वर्षा न होगी ॥ १९६ ॥

जेठी वदी दशमी दिना, जो शनिवासर होय।

पानी होय न धरनि पै, विरला जीवै कोय ॥१९७॥

यदि जेष्ठ वदी दशमी के दिन शनिवार का दिन हो तो समझो कि पृथ्वी पर पानी न होगा (वर्षा न होगी)। कोई बिरला ही जीयेगा ॥ १९७ ॥

जेठ उजारे पक्षमें, आर्द्रादिक दस रिच्छ।

सजल होय निरजल कह्यो, निरजल सजल प्रत्यक्ष ॥१९८॥

यदि आर्द्रा आदिक बारहों नक्षत्र जेष्ठ शुक्ल पक्ष तक बरस जायें तो समझना चाहिए कि वर्षा चारों महीने का ज्ञात हो गया। निर्जल क्या-क्या सजल ? ॥ १९८ ॥

जिनवारा रवि संक्रमें, तिनै अमावस होय।

खप्पर हाथ लै जग भ्रमै, भीख न घालै कोय ॥१९९॥

यदि रविवार के दिन संक्रांति पर अमावस्या लग जावे तो जानो संसार हाथ में खप्पर या खपड़े लिए भीख माँगेगा और कोई भीख न डालेगा ॥ १९९ ॥

जेठ पहिल परिवा दिना, बुधबासर जो होय।
मूल असाढ़ा जो मिलै, पिरथी कम्पै जाय ॥२००॥

यदि जेष्ठ की प्रथम परिवा बुधवार को पड़े और आषाढ़ की पूर्णिमा को मूल नक्षत्र का योग हो तो समझना चाहिए कि पृथ्वी में कम्पन होगा ॥ २०० ॥

जेष्ठा आद्रा शतभिखा, स्वाति सुलेखा माहिं।
जो संक्रान्ति तो जानिये, महँगो अन्न बिकाहिं ॥२०१॥

यदि ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिषा और श्लेषा में संक्रांति लग जाय तो जानो कि अनाज महँगे बिकेंगे ॥ २०१ ॥

जेठ उजारी तीज दिन, आद्रा रिष बरखन्त।
जोसी भाखै भड्डरी, दुर्भिक्ष अवसि करन्त ॥२०२॥

यदि ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तीज के दिन आर्द्रा नक्षत्र बरस जावे तो ज्योतिषी भड्डरी का कहना है कि यह दुर्भिक्ष (अकाल) अवश्य करेगा ॥ २०२ ॥

चित्रा स्वाति बिसाखड़ो, जो बरसे आसाढ़।
चालो नरा बिदेशड़ो, परिहै काल सुगाढ़ ॥२०३॥

यदि आषाढ़ का महीना हो और उसमें चित्रा, स्वाती और विशाखा नामक नक्षत्रों में आकर वर्षा कर जाये तो ऐ मनुष्यों ! सभी विदेश (दूर देश) को चले जाओ, यहाँ बड़ा दृढ़काल (अकाल) दुर्भिक्ष पड़ेगा ॥ २०३ ॥

चित्रा स्वाति विसाखहूँ, सावन नहिं बरसन्त ।
हाली अन्ने संग्रहौ, दूनो मोल करन्त ॥२०४॥

यदि सावन में चित्रा, स्वाती और विशाखा न बरसे तो सभी लोग अन्न संग्रह करें या खरीदकर पहले ही से रख लें, क्योंकि इसका दूना भाव चढ़ जायेगा ॥ २०४ ॥

दूजे तीजे किरवरो, रस कुसुम्भ महँगाय ।
पिछले छठवें आठवें, फिर थी परलै जाय ॥२०५॥

संक्रान्ति के दूसरे दिन रसवाले और तेलवाले पदार्थ महँगे हो जाते हैं। और उसके पहले, छठवें और आठवें दिन तो पृथ्वीपर प्रलय सी हो जाती है ॥ २०५ ॥

धुर असाढ़ की अष्टमी, ससि निर्मल जो दीख ।
पीव जाइहौ मालवा, माँगति फिरिहौं भीख ॥२०६॥

यदि आषाढ़ कृष्णकी अष्टमी को चन्द्रमा निर्मल दिखाई पड़े तो हे प्रियतम ! तुम मालवे चले जाओ और मैं भीख माँगती फिरूँगी ॥ २०६ ॥

पाँच शनीचर पाँच रवि, पाँच मंगर जो होय ।
छत्र टूटि धरनी परै, अन्ना महँगा होय ॥२०७॥

यदि किसी वर्ष के एक ही महीने में पाँच शनिवार, पाँच रविवार और मंगलवार पड़ जाये तो जानो, क्षेत्र टूट पड़ेगा (कोई बड़ा राजा मरेगा) और अन्न भी महँगा होगा ॥ २०७ ॥

पुरुब क बादर पश्चिम जाय, बरसे वृष्टि अधिक बरसाय ।
जो पश्चिम से पूरब जाय, बरखा बहुत न्यून हो जाय ॥२०८॥

यदि पूर्व दिशा के बादल पश्चिम दिशा को जाते हैं तो इससे वे अधिक जल बरसते हैं। यदि पश्चिम से पूरबको जाते हैं तो वर्षा बहुत थोड़ी होती है ॥ २०८॥

माघ उजारी तीजको, बादर बिज्जु जो देख।
गेहूँ जौ संचय करो, महंगो होसी पेख ॥२०९॥

यदि माघ शुक्ल पक्ष की तीज के दिन आकाश में बादल और बिजली चमके तो गेहूँ, जौ संग्रह कर लो, मँहगी दिखाई पड़ती है ॥२०९॥

भादों बदी एकादशी, जौ ना छिटकै मेघ।
चार मास बरसै नहीं, कहै भड्डरी पेख ॥२१०॥

यदि भादों वदी एकादशी को आकाश में मेघ छिटके हों तो चार महीना वर्षा न होगी—ऐसा विचार कर भड्डरी कहता है ॥ ११० ॥

माघ उजारी चौथको, मेह बादरो जान।
पान और नारियल तैं, महँगी अब से बखान ॥२११॥

यदि माघ शुक्ल चौथ को बादल पानी बरसे तो यह जानो कि पान और नारियल महँगे होंगे ॥ २११ ॥

माघ उजेरी पंचमी, परसै उत्तम बाय।
तो जानोंकी भादवों, बिन जल कोसे जाय ॥२१२॥

यदि माघ शुक्ल पक्ष की पंचमी को उत्तम स्पर्शकारी वायु बहे तो जानो कि भादों, निर्बल ही जायेगा ॥ २१२ ॥

माघ छठी गरजै नहीं, महँगो होय कपास।
सातें देखा निर्मलो, तो नाहीं कछु आस ॥२१३॥

यदि माघ की छठ को गरजता नहीं तो जानों कि कपास महँगी होगी और सप्तमी को निर्मल देखो तो (वर्षा की) कुछ आशा नहीं ॥ २१३ ॥

माघ सुदी जो सप्तमी, सोमवार दीसन्त।
काल पड़े राजा लड़ैं, सगरे नराँ भ्रमन्त ॥२१४॥

यदि माघ शुक्ल सप्तमी को सोमवार दिखाई पड़े, तो जानो कि अकाल पड़ेगा, राजा लड़ेंगे और सभी मनुष्य उस चक्कर में जायेंगे ॥ २१४ ॥

माघ सुदी जो सप्तमी, भौमवार को होय।
तो भड्डरी जोसी कहै, नाज किरानो होय ॥२१५॥

यदि माघ शुक्ल सप्तमी मंगलवारको पड़ती है तो भड्डरी ज्योतिषी का कहना है कि, अनाज में कीड़े लगेंगे ॥ २१५ ॥

माघ सुदी आठैं दिवस, जो कृतिका रिखि होय।
की फागुन होली पड़े, की सावन महँगी होय ॥२१६॥

यदि माघ शुक्ल अष्टमी के दिन कृतिका नक्षत्र हो तो फागुन में पत्थर पड़े या सावन में अन्न महँगा हो जाय ॥ २१६ ॥

माघी नौमी निर्मली, बादर रेख न होय।
तो सरवर भी सूखहीं, महिमें जल नहिं होय ॥२१७॥

यदि माघ की नौमी स्वच्छ एवं बादलोंसे निर्मल हो, बदली की एक रेखा भी न हो, तो बड़े जलाशय भी सूख जायेंगे और पृथ्वी पर वर्षा नहीं होगी ॥ २१७ ॥

माघ सुदी पूनो दिवस, चन्द्र निर्मली जोय ।
पशु बेचौ कन संग्रहौ, काल हलाहल होय ॥२१८॥

यदि माघ शुक्लपक्ष की पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा स्वच्छ हो तो पशुओं को बेंचकर अन्न खरीद लो। हलाहल (विषवत्) अकाल (दुर्भिक्ष) पड़ेगा ॥ २१८ ॥

माघ जु पड़िवा उजेली, बादर बायु जो होय ।
तेल और सरपी सबै, दिन-दिन मँहगो होय ॥२१९॥

यदि माघ शुक्ल को प्रतिपदा हो और बादल वायु भी हो तो तेल और घी दिन-दिन महँगा होगा ॥ २१९ ॥

माघ उजारी दूज दिन, बादर बिज्जु समोय ।
तो भाखैं यों भड्डरी, अन्न जु महँगो होय ॥२२०॥

मंगल सोम होय शिवराती, पछिवाँ बायु बहै दिन राती ।
घोड़ा रोड़ा टिड्डी उड़ै, राजा मरै की धरती परै ॥२२१॥

यदि शिवरात्रि सोमवार या मंगलवार को पड़े और दिन-रात पछुव अर्थात् पश्चिमी वायु बहे तो घोड़ा, रोड़ा और टिड्डियाँ उड़ें और कोई राजा धरती पर गिर पड़े ॥ २२१ ॥

मंगलवारी मावसी, फागुन चैती जोय ।
पशु बेचो कन संग्रहौ, अवसि दुकाली होय ॥२२२॥

यदि फाल्गुन और चैत की अमावस्या को मंगलवार पड़े तो पशुओं को बेचकर अन्न संग्रह कर लो (खरीद लो); अवश्य दुर्भिक्ष पड़ेगा ॥ २२२ ॥

मृगशिर वायु न बाजिया, रोहिणि तपै न जेठ ।
गोरी बीनै काँकरा, खरी खेजड़ो हेठ ॥२२३॥

यदि मृगशिर नक्षत्र ने वायुसे शुद्ध नहीं किया अथवा वायु न बहा और जेष्ठ मास में रोहिणी नक्षत्र न तपा तो वर्षा न होगी। उस दशा में किसान की खेती बिचारी किसी एक वृक्ष के नीचे कंकड़ चुनती रहेगी ॥ २२३ ॥

इति

नन्द प्रिंटिंग प्रेस, औरंगाबाद, वाराणसी।